Follow us on: @TheDailyPioneer facebook.com/dailypioneer instagram.com/dailypioneer/

RNI No. DLHIN/2012/483
वर्ष 13 | अंक 6 नई दिल्ली, शनिवार, 9 नवम्बर 2024
पृष्ठ 12 ₹ मूल्य 3
नगर संस्करण

Established 1865

पायनियर

नई दिल्ली, लखनऊ और रायपुर से प्रकाशित

www.dailypioneer.com

आभ्यन्तर

राष्ट्रीय 10

न राहुल और न ही उनके वंशज 370 बहाल कर पाएंगे

अनजाने में ठेस पहुंची हो तो माफ करें: सीजेआई

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

मुख्य न्यायाधीश डी वाई चंद्रचूड़ ने शुक्रवार को भारतीय न्यायपालिका के 50वें प्रमुख के रूप में अपने अंतिम कार्य दिवस पर कहा कि जरूरतमंदों और उन लोगों की सेवा करने में सक्षम होने से बड़ी कोई भावना नहीं है, जिन्हें वे कभी नहीं जानते या जिनसे वे कभी नहीं मिले। उन्होंने नम आंखों से कहा, 'अगर मैंने कभी आपमें से किसी को ठेस पहुंचाई है, तो मैं बस इतना कहना चाहूंगा कि कृपया मुझे किसी ऐसी बात के लिए माफ कर दें, जिसे कहने या करने का मेरा कभी इरादा नहीं था, जिससे आपको ठेस पहुंची हो।' सीजेआई ने हल्के-फुल्के अंदाज़ में यह भी कहा कि अगले हफ़्ते सोमवार से उनके ट्रोल्स बेरोज़गार हो जाएँगे। उन्होंने कहा, हल्के-फुल्के अंदाज़ में मैं सोच रहा हूँ कि सोमवार से क्या होगा, क्योंकि मुझे ट्रोल करने वाले सभी लोग बेरोज़गार हो जाएँगे।

चार न्यायाधीशों की औपचारिक पीठ की अध्यक्षता करते हुए, जिसमें सीजेआई-पदनाम संजीव खन्ना, जस्टिस जेबी पारदीवाला और मनोज मिश्रा भी शामिल थे, जो उन्हें विदाई देने के लिए एकत्र हुए थे। सीजेआई ने न केवल किए गए कार्य के लिए बल्कि देश की सेवा करने के अवसर के लिए भी गहरी संतुष्टि की भावना व्यक्त की। न्यायमूर्ति चंद्रचूड़ ने 9 नवंबर, 2022 को अपने प्रतिष्ठित पिता वाईवी चंद्रचूड़ के पद पर विराजमान हुए, जिन्होंने 1978 से 1985 के बीच सबसे लंबे समय तक सीजेआई के रूप में कार्य किया। न्यायमूर्ति चंद्रचूड़ 10 नवंबर, रविवार को पद छोड़ेंगे। सीजेआई-पदनाम खन्ना और अटॉर्नी जनरल, सॉलिसिटर जनरल, सुप्रीम कोर्ट बार एसोसिएशन (एससीबीए) के अध्यक्ष कपिल सिब्बल और अन्य सहित बार नेताओं द्वारा उन्हें सम्मान दिया गया। भारत के न्यायिक इतिहास में यह एक महत्वपूर्ण क्षण है। भावुक सीजेआई ने कहा, 'आपने मुझसे पूछा कि मुझे क्या आगे बढ़ाता है। यह न्यायालय ही है जिसने मुझे आगे बढ़ाया है, क्योंकि ऐसा एक भी दिन नहीं है जब आपको लगे कि आपने कुछ नहीं सीखा है, कि आपको समाज की सेवा करने का अवसर नहीं मिला है। और ज़रूरतमंदों और उन लोगों की सेवा करने में सक्षम होने से बड़ी कोई भावना नहीं है जिनसे आप कभी नहीं मिल पाएंगे, जिन्हें आप संभवत: जानते भी नहीं हैं, जिनके जीवन को आप बिना देखे प्रभावित करने की क्षमता रखते हैं। अपने संबोधन में, सीजेआई चंद्रचूड़ ने एक युवा कानून के छात्र के रूप में अदालत की अंतिम पंक्ति में बैठने से लेकर शीर्ष अदालत के प्रतिष्ठित गलियारों में अपने समय तक की अपनी यात्रा को याद किया।

उन्होंने देश की सेवा करने के अपार सौभाग्य पर विचार किया। इस बात पर जोर देते हुए कि न्यायालय में बिताया गया प्रत्येक दिन कानूनी ज्ञान और व्यक्तिगत अंतर्दृष्टि दोनों में सीखने और बढ़ने का अवसर है। सीजेआई ने कहा, 'मैं हमेशा इस न्यायालय के महान लोगों की जबरदस्त उपस्थिति और इस कुर्सी पर बैठने के साथ आने वाली जिम्मेदारी से अवगत था। लेकिन दिन के अंत में, यह व्यक्ति के बारे में नहीं है, यह संस्था और न्याय के उद्देश्य के बारे में है जिसे हम यहाँ बनाए रखते हैं।' उन्होंने अपने सहयोगियों की प्रशंसा की, विशेष रूप से न्यायमूर्ति पारदीवाला और मिश्रा के साथ बेंच पर अपने समय को उजागर करते हुए, उनके सामूहिक कार्य को समृद्ध करने वाले दृष्टिकोणों की सौहार्द और विविधता को नोट किया। सीजेआई ने न्यायालय के भविष्य में भी अपना विश्वास व्यक्त किया, कानूनी समुदाय को आश्वस्त किया कि उनके उत्तराधिकारी, न्यायमूर्ति खन्ना, जिन्हें उन्होंने 'सम्मानजनक, स्थिर और न्याय के लिए गहराई से प्रतिबद्ध' बताया, समान समर्पण और दूरदर्शिता के साथ न्यायालय का नेतृत्व करेंगे। अपने भावपूर्ण समापन में सीजेआई चंद्रचूड़ ने अपने सफर में योगदान देने वाले सभी लोगों - वरिष्ठ अधिवक्ताओं, कनिष्ठों, अधिकारियों और कर्मचारियों - के प्रति आभार व्यक्त किया और स्वीकार किया कि उनमें से प्रत्येक ने कानून और जीवन की उनकी समझ को आकार देने में भूमिका निभाई। न्यायमूर्ति खन्ना ने सीजेआई को शुभकामनाएं देते हुए कहा, 'उन्होंने मेरा काम आसान और कठिन बना दिया है। आसान इसलिए क्योंकि परिवर्तन शुरू हो गया है और कठिन इसलिए क्योंकि मैं उनके पास नहीं जा सकता। उनकी कमी बहुत खलेगी। उनकी युवावस्था केवल यहां ही नहीं बल्कि विदेशों में भी जानी जाती है। ऑस्ट्रेलिया में, बहुत से लोग मेरे पास आए और पूछा कि उनकी उम्र क्या है।' बाद में शाम को सुप्रीम कोर्ट बार एसोसिएशन द्वारा उनके लिए आयोजित विदाई समारोह में बोलते हुए, निवर्तमान सीजेआई ने कहा कि शायद वह सबसे ज़्यादा ट्रोल किए जाने वाले जज (शेष पृष्ठ 9)

एमवीए में न तो पहिए और न ही ब्रेक हैं: पीएम मोदी

पीटीआई। मुंबई

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शुक्रवार को कांग्रेस पर एक जाति को दूसरी जाति से लड़ाने का आरोप लगाया और लोगों को एकजुट रहने के लिए आगाह करते हुए कहा कि वे एक हैं तो सेफ (सुरक्षित) हैं। मोदी ने चुटकी लेते हुए कहा कि कांग्रेस, शिवसेना और राकांपा (सपा) से मिलकर बनी महा विकास आघाडी (एमवीए) ऐसा वाहन है जिसमें न तो पहिए हैं और न ही ब्रेक हैं और चालक सीट पर बैठने के लिए वहां लड़ाई चल रही है।

महाराष्ट्र में 20 नवंबर को होने वाले विधानसभा चुनाव के लिए अपनी पहली रैली में मोदी ने कहा, वे नहीं चाहते कि एससी, एसटी और ओबीसी प्रगति करें और उन्हें उचित मान्यता मिले... याद रखें, एक हैं तो सेफ हैं। उन्होंने कहा, नेहरू के समय से ही कांग्रेस और उनके परिवार ने आरक्षण का विरोध किया और अब उनकी चौथी पीढ़ी के युवराज जाति विभाजन के लिए काम कर रहे हैं। मोदी ने कांग्रेस नीत इंडिया गठबंधन पर जम्मू-कश्मीर से भारत का संविधान हटाने का प्रयास करने का आरोप लगाया और साथ ही जोर देकर कहा कि दुनिया की कोई ताकत वहां अनुच्छेद 370 को बहाल नहीं कर सकती। मोदी ने कहा कि दलितों और आदिवासियों को भड़काने के लिए इंडिया गठबंधन कोरी किताबों को संविधान के रूप में पेश कर रहा है। प्रधानमंत्री ने कहा कि कांग्रेस और उसके सहयोगियों को पाकिस्तान के एजेंडे को बढ़ावा नहीं देना चाहिए और अलगाववादियों की भाषा नहीं बोलनी चाहिए। मोदी ने कहा कि जब तक उन्हें लोगों का आशीर्वाद प्राप्त है, तब तक विपक्ष का एजेंडा सफल नहीं होगा।उन्होंने कहा, जम्मू कश्मीर में केवल (डॉ भीमराव) आंबेडकर के संविधान का पालन किया जाएगा। आपने टीवी पर देखा होगा कि कैसे जम्मू-कश्मीर विधानसभा में अनुच्छेद 370 को वापस लाने का प्रस्ताव रखा गया और जब भाजपा विधायकों ने विरोध किया, तो उन्हें बाहर निकाल दिया गया। देश और महाराष्ट्र को यह समझना चाहिए। मोदी ने कांग्रेस पर जातियों और समुदायों को बांटने का खतरनाक खेल खेलने का भी आरोप लगाया और कहा कि यदि अनुसूचित जनजाति (एसटी), अनुसूचित जाति (एससी) और ओबीसी (अन्य पिछड़ा वर्ग) एकजुट रहेंगे तो कांग्रेस की राजनीति समाप्त हो जाएगी। इससे पहले, मोदी ने (शेष पृष्ठ 9)

इजराइली फुटबॉल प्रशंसकों पर हमला पांच लोग घायल, 62 व्यक्ति गिरफ्तार

एपी। एम्सटर्डम

नीदरलैंड की राजधानी एम्सटर्डम में फुटबॉल मैच के बाद यहूदी विरोधी दंगाइयों ने इजराइली समर्थकों पर हमला किया, जिसके बाद पांच लोगों को अस्पताल में भर्ती कराया गया जबकि 62 व्यक्तियों को गिरफ्तार किया गया है। एम्सटर्डम पुलिस ने शुक्रवार को यह जानकारी दी।पुलिस ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा कि उसने हिंसा की अलग-अलग घटनाओं की जांच शुरू कर दी है। हालांकि पुलिस ने बृहस्पतिवार रात हुई हिंसा में घायल हुए लोगों और हिरासत में लिए गए व्यक्तियों के बारे में विस्तृत जानकारी नहीं दी। इससे पहले एम्सटर्डम की महानगरपालिका, पुलिस और अभियोजन कार्यालय की ओर से जारी बयान में कहा गया कि एजेक्स और मैकाबी तेल अवीव टीमों के बीच खेला गया यूरोपा लीग का मैच बहुत ही व्यवधानपूर्ण रहा, जिसमें मैकाबी के समर्थकों को निशाना बनाकर हिंसा की कई घटनाएं हुईं।

नीदरलैंड और इजराइल दोनों देशों के नेताओं ने हमले को यहूदी विरोधी करार देते हुए निंदा की। इजराइल ने कहा कि वह प्रशंसकों को देश वापस लाने के लिए जहाज एम्सटर्डम भेज रहा है। हालांकि तत्काल यह स्पष्ट नहीं हो पाया है कि हिंसा मैच के बाद कब और कहां हुई।एम्सटर्डम के बयानों में कहा गया है, शहर में कई जगहों पर समर्थकों पर हमले किए गए। पुलिस को कई बार हस्तक्षेप करना पड़ा, इजराइली समर्थकों को बचाकर होटलों तक ले जाया गया। शहर में बड़ी संख्या में पुलिसकर्मियों की तैनाती के बावजूद, इजराइली समर्थकों पर हमला हुआ है। बयान में कहा गया है, इजराइली समर्थकों के प्रति हिंसा अस्वीकार्य है और इसका किसी (शेष पृष्ठ 9)

16 अक्टूबर से अब तक जम्मू कश्मीर में 10 आतंकी हमले

मोहित कंधारी। जम्मू

जम्मू क्षेत्र के किश्तवाड़ जिले के ऊंचे इलाकों में दो ग्राम रक्षा समूह (वीडीजी) के सदस्यों की निर्मम हत्या ने सुरक्षा प्रतिष्ठान के शीर्ष अधिकारियों को हिलाकर रख दिया है। यह घटना केंद्र शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर में उमर अब्दुल्ला के नेतृत्व वाली लोकप्रिय सरकार के गठन के बाद से सुरक्षा बलों और प्रवासी श्रमिकों पर कई हमलों के बाद हुई है। 16 अक्टूबर से अब तक जम्मू-कश्मीर के विभिन्न इलाकों में आतंकी हिंसा की कुल 10 घटनाएं सामने आई हैं।

इस बीच, शुक्रवार को केशवान बेल्ट के पोंडगवारी इलाके में एक नाले के पास से आतंकवादियों द्वारा मारे गए दो ग्राम रक्षा गार्ड (वीडीजी) के शव बरामद किए गए। पुलिस प्रवक्ता ने कहा, ओहली-कुंटवाड़ा के दो वीडीजी सदस्य नजीर अहमद और कुलदीप कुमार मवेशियों को चराने के दौरान ऊपरी इलाकों में लापता हो गए। कुलदीप कुमार के भाई पृथ्वी ने

एक समाचार एजेंसी को बताया, 'मेरे भाई और नजीर को आतंकवादियों ने अगवा कर लिया और उनकी हत्या कर दी। वे गांव के सुरक्षा गार्ड थे और हमेशा की तरह मवेशी चराने गए थे।' ये वीडीजी पूरे जम्मू क्षेत्र में सुरक्षा ग्रिड की रीढ़ हैं। उन्हें निशाना बनाकर, आतंकवादी संचालक उन्हें क्षेत्र में चल रहे आतंकवाद विरोधी अभियानों में भाग लेने से हतोत्साहित करना चाहते हैं ताकि उन्हें उनके सुरक्षित ठिकानों से बाहर निकाला जा सके। आधिकारिक सूत्रों के अनुसार, जम्मू और कश्मीर में 4100 से अधिक वीडीजी और 32,000 एसपीओ लगे हुए हैं, जिनकी जिला पुलिस अधीक्षकों (एसपी) की प्रत्यक्ष निगरानी में नागरिकों की सुरक्षा और आतंकवाद विरोधी अभियानों के लिए अलग-अलग जिम्मेदारियाँ हैं। हत्याओं के लिए जिम्मेदार आतंकवादियों का पता लगाने के लिए किश्तवाड़ में भी बड़े पैमाने पर घेराबंदी और तलाशी अभियान चल रहा है। यह अभियान किश्तवाड़ के कुंतवाड़ा, ओहली और मुंजला धार पहाड़ी इलाकों में केंद्रित है।जम्मू-कश्मीर पुलिस महानिदेशक नलिन प्रभात और जम्मू के अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक आनंद जैन ने शुक्रवार को चल रहे अभियानों की समीक्षा के लिए किश्तवाड़ का दौरा किया। व्हाइट नाइट कोर कमांडर लेफ्टिनेंट जनरल नवीन सचदेवा भी किश्तवाड़ पहुंचे और उन्होंने जवाबी रणनीति तैयार करने के लिए जम्मू-कश्मीर पुलिस महानिदेशक के साथ बैठक की।किश्तवाड़ जिले में तनाव की स्थिति बनी (शेष पृष्ठ 9)

भारत ने इस साल 255 दिन चरम मौसम का सामना किया

राजेश कुमार। नई दिल्ली

भारत ने इस साल जनवरी से सितंबर तक 93 प्रतिशत दिनों तक चरम मौसम का सामना किया। 274 दिनों में से 255 दिनों में भारत ने चरम मौसम की घटनाओं का सामना किया, जिसमें गर्मी और ठंड की लहरें, चक्रवात, बिजली, भारी बारिश, बाढ़ और भूस्खलन शामिल थे, इस साल के पहले नौ महीनों में लगभग हर दिन 3,200 लोगों की जान चली गई, 32 लाख हेक्टेयर फसलें प्रभावित हुईं, 235,862 घर और इमारतें नष्ट हो गईं और लगभग 9,457 पशुधन मारे गए।

भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) के आंकड़ों के आधार पर विज्ञान और पर्यावरण केंद्र

(सीएसई) द्वारा 'जलवायु भारत 2024- चरम मौसम की घटनाओं का आकलन' शीर्षक वाली रिपोर्ट 11 से 22 नवंबर तक अज़रबैजान के बाकू में 2024 के संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन सम्मेलन या पार्टियों के सम्मेलन (सीओपी29) से कुछ दिन पहले आई है।

इसकी तुलना में, 2023 के पहले नौ महीनों में 273 दिनों में से 235 दिन चरम मौसम दर्ज किया गया, जिसमें 2,923 मौतें हुईं, 18.4 लाख हेक्टेयर फसलें प्रभावित हुईं, 80,293 घर क्षतिग्रस्त हुए और 92,519 पशु मारे गए। वर्ष 2024 में कई जलवायु रिकॉर्ड भी बने। जनवरी 1901 के बाद से भारत का नौवां सबसे सूखा महीना रहा। फरवरी में, देश ने 123 वर्षों में अपना दूसरा सबसे अधिक न्यूनतम तापमान दर्ज किया। मई में रिकॉर्ड पर चौथा सबसे अधिक औसत तापमान दर्ज किया गया, और जुलाई, अगस्त और सितंबर में 1901 के बाद से सभी ने अपने उच्चतम न्यूनतम तापमान दर्ज किए। उत्तर-पश्चिम में, जनवरी दूसरा सबसे शुष्क महीना था, और जुलाई में इस क्षेत्र का दूसरा सबसे अधिक न्यूनतम तापमान दर्ज किया गया। दक्षिणी प्रायद्वीप में अब तक का सबसे गर्म फ़रवरी महीना रहा, उसके बाद असाधारण रूप से गर्म और शुष्क मार्च और अप्रैल रहे, लेकिन (शेष पृष्ठ 9)

एनएससीएन (आईएम) ने दी समझौता तोड़ने की धमकी

पीटीआई। दीमापुर

नागा विद्रोही समूह नेशनल सोशलिस्ट काउंसिल ऑफ नागालैंड (इसाक-मुइवा) एनएससीएन (आईएम) ने सरकार के साथ अपने 27 साल पुराने संघर्ष विराम समझौते को तोड़ने और अलग 'राष्ट्रीय ध्वज और संविधान' की अपनी मांगें पूरी न होने पर अपने 'सशस्त्र संघर्ष' पर लौटने की धमकी दी है।1947 में भारत की आजादी के तुरंत बाद नागालैंड में हिंसक विद्रोह करने वाले इस समूह ने सरकार के वार्ताकारों के साथ लंबी शांति वार्ता शुरू करने से पहले 1997 में संघर्ष विराम समझौता किया था। 3 अगस्त, 2015 को, एनएससीएन (आईएम) ने स्थायी समाधान खोजने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की मौजूदगी में सरकार के साथ एक रूपरेखा समझौते पर हस्ताक्षर किए। शुक्रवार को

जारी एक बयान में समूह के महासचिव और मुख्य राजनीतिक वार्ताकार थुईगालेंग मुइवा ने कहा कि वह और पूर्व अध्यक्ष स्वर्गीय इसाक चिशी स्वू शांतिपूर्ण बातचीत के जरिए संघर्ष के समाधान के लिए वार्ता की मेज पर गए और सशस्त्र आंदोलन (शेष पृष्ठ 9)

किसान के खेत से मिले 1857 के विद्रोह के समय के हथियार

बिस्वजीत बनर्जी। शाहजहांपुर

उत्तर प्रदेश के शाहजहांपुर में एक किसान को अपने खेत की जुताई करते समय जमीन दबा हैरान कर देने वाला ऐतिहासिक हथियारों का जखीरा मिला। माना जा रहा है कि यह 1857 के भारतीय विद्रोह से जुड़ा हुआ है। जिल के अधिकारियों ने हथियारों को सुरक्षित स्थान पर रखवा दिया है और आगे की जांच के लिए पुरातत्व विभाग से संपर्क किया गया है। जिला मजिस्ट्रेट धर्मेंद्र प्रताप सिंह ने शुक्रवार को विवरण साझा करते हुए कहा, निगोही थाना क्षेत्र के दखिया परवेजपुर के एक किसान बाबू राम हाल ही में अपने खेत की जुताई कर रहे थे, इस दौरान उन्हें मिट्टी के नीचे लोहे की तलवार जैसी वस्तु मिली। जैसे-जैसे उन्होंने खुदाई जारी रखी, उन्हें जमीन के नीचे दबे कई और हथियार मिले।

सिंह के अनुसार, कुल मिलाकर, खेत से 23 तलवारें, 12 माचिस की तीलियों के अवशेष, एक भाला और एक खंजर मिला। खोजी गई राइफलें बहुत ज़्यादा खराब हो चुकी हैं, सिर्फ़ बैरल और कुछ धातु के टुकड़े ही बचे हैं, जिससे पता चलता है कि दीमकों ने समय के साथ लकड़ी के हिस्सों

को खा लिया होगा। बंदूक की बैरल की शैली को देखते हुए, विशेषज्ञों का मानना ??है कि वे वास्तव में मैचलॉक राइफलें हैं।खोज के बारे में पता चलने पर, जिला अधिकारियों ने उप-विभागीय मजिस्ट्रेट के नेतृत्व में एक टीम को घटनास्थल पर भेजा। बरामद हथियारों को सुरक्षित रखने के लिए निगोही पुलिस स्टेशन ले जाया गया है।शाहजहांपुर में स्वामी शुकदेवानंद कॉलेज में इतिहास विभाग के प्रमुख डॉ. विकास खुराना ने सुझाव दिया कि ये हथियार 1857 के भारतीय विद्रोह से जुड़े हो सकते हैं। खुराना के मुताबिक, इन हथियारों में रोहिल्ला संस्कृति की विशेषताएं प्रतीत होती हैं। यह संभव है कि जब 1857 में विद्रोहियों को हराने के बाद ब्रिटिश सेना आगे बढ़ी, तो स्वतंत्रता सेनानी जंगल में चले गए और पकड़े जाने से बचने के लिए अपने हथियार जमीन में गाड़ दिए। उन्होंने कहा, विजयी सेनाएँ आमतौर पर अपने हथियार नहीं छिपाती हैं, इसलिए यह संभावना है कि ये हथियार पीछे हटने वाले क्रांतिकारियों द्वारा छिपाए गए थे। विशेषज्ञों का मानना ??है कि यह खोज 1857 के विद्रोह के स्थानीय इतिहास में मूल्यवान जानकारी प्रदान कर सकती है। डॉ. (शेष पृष्ठ 9)

व्रतियों ने भगवान भास्कर को अर्घ्य देकर किया नमन

छठ महापर्व : सुबह 4 बजे से ही घाट पर होने लगे थे श्रद्धालु, भजन से पूरा महौल भक्तिमय

नोएडा में यमुना तट पर शुक्रवार को उगते भगवान भास्कर को अर्घ्य देते श्रद्दालु।

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

उगते सूर्य को प्रसाद अर्पित कर दूध एवं जल से अर्घ्य देने के साथ ही चार दिवसीय छठ महापर्व संपन्न हो गया।

पूर्वांचल मित्र मंडल छठ पूजा समिति द्वारा सेक्टर 31 के शहीद भगत सिंह पार्क में आयोजित छठ महोत्सव के समापन दिवस पर छठ वृतियों ने उदीयमान सूर्य को अर्घ्य देकर आरोग्य, सुख, समृध्दि की कामना की। समिति के महासचिव राघवेंद्र दुबे ने बताया कि छठ व्रती सुबह 4 बजे से ही घाट पर जमा होने लगे थे। प्रात: कालीन वेला में छठी मैया के भजन पूरे वातावरण को भक्तिमय बना रहे थे।

इस अवसर पर समिति के महासचिव राघवेंद्र दुबे ने कहा कि छठ महोत्सव सूर्य उपासना का अदभुत पर्व है। यह महा पर्व हमें प्रकृति के निकट रहने का संदेश देता है । इसमें तालाबों, नदियों के घाटों की सफाई की जाती जो कि पर्यावरण संरक्षण का संदेश देती है। इंसान की प्रकृति के साथ छेड़छाड़ विनाशकारी साबित होती जा रही है ऐसे में प्रकृति के साथ समन्वय रख विषम परिस्थितियों को भी अपने अनुकूल बनाया जा सकता है यह त्यौहार हमें यही शिक्षा देता है। उषा काल में सूर्य को दिया अर्घ्य हमें सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करता है साथ ही तमाम रोगों का नाश भी करता है।इस अवसर पर आयोजन समिति के संयोजक अर्जुन प्रजापति, गजेंद्र सिंह,जय प्रकाश, राजेश कुमार, अविनाश सिंह, तरुण कुमार , सुधीर राय, मयंक कुमार, मुन्नीलाल बघेल ,सुशील पाल सहित तमाम पदाधिकारी मौजूद रहे।

गाजियाबाद में घाट पर उमड़ा आस्था का सैलाब

गाजियाबाद। उगते सूर्य को अर्घ्य देने के साथ लोक आस्था के महापर्व छठ का समापन हो गया। गाजियाबाद में हिंडन नदी के घाटों पर आस्था का सैलाब उमड़ पड़ा। छठ व्रतियों ने विधि-विधान से पूजन किया। उन्होंने छठ मईया के गीत गाए और सूर्यदेव को अर्घ्य देकर 36 घंटे का निर्जला व्रत पूरा किया। इस दौरान परिवार में खुशहाली के लिए मंगल कामना की गई। गाजियाबाद में नगर निगम ने 70 से ज्यादा घाट सजाए थे। वहीं सोसाइटीज के स्वीमिंग पूल में भी व्रतियों ने ख? होकर अर्घ्य दिया। जहां स्वीमिंग पूल नहीं थे, वहां छोटे-छोटे कृत्रिम पूलों में पानी भरकर व्रतियों ने अर्घ्य दिया।

नोएडा प्राधिकरण सीईओ और पूर्व डीजीएम एनजीटी में होंगे पेश

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

● सड़क किनारे टाइल्स हटाने से जुड़ा मामला, ट्रिब्यूनल में जमा किया था गलत हलफनामा

सड़क किनारे टाइल्स लगाने के एक मामले में आज नोएडा प्राधिकरण के सीईओ और पूर्व डीजीएम को एनजीटी में उपस्थिति होना पड़ेगा। दरअसल 17 सितंबर की सुनवाई के दौरान शहर में सड़क किनारे हो रहे अवैध टाइल कार्य और 2022 में जमा किए गए झूठे हलफनामा पर ट्रिब्यूनल ने नाराजगी ज़ाहिर की थी। यह मामला सड़क किनारे के हरे भरे क्षेत्रों में टाइल लगाने से जुड़ा है, जो उत्तर प्रदेश और केंद्र सरकार की फुटपाथ संबंधी दिशा-निर्देशों का उल्लंघन है।

पर्यावरण विद् विक्रांत तोंगड़ ने बताया कि नोएडा प्राधिकरण के कर्मचारियों ने कुछ स्थानों पर टाइलें हटाकर फोटो एनजीटी में जमा किए, जिनमें केवल 5-10 टाइलें ही हटा दी गईं और काम अधूरा छोड़ दिया गया। उन स्थानों से हजारों टाइलें हटाई जानी चाहिए थीं क्योंकि उन्हें 2018 के नियमों का उल्लंघन करते हुए लगाया गया था।

हालांकि, नोएडा प्राधिकरण ने अनुपालन का दावा किया था। लेकिन याची के अधिवक्ता आकाश वशिष्ठ ने नोएडा गोल्फ कोर्स, होजरी कॉम्प्लेक्स और नोएडा के विभिन्न सेक्टर सहित कई स्थानों पर टाइल लगाने का फोटो ग्राफिक सबूत प्रस्तुत किया। न्यायमूर्ति सुधीर अग्रवाल और डॉ. अफरोज अहमद के नेतृत्व वाली एनजीटी बेंच ने इन गलत बयानों को गंभीर मानते हुए कहा कि नोएडा प्राधिकरण ने न्यायिक आदेशों को धोखे से अपने पक्ष में प्राप्त किया है। अगस्त 2024 में नोएडा और ग्रेटर नोएडा के सीईओ को भी एनजीटी द्वारा तलब किया गया था, जहां एनजीटी के आदेशों का पालन करने के लिए कड़ी हिदायत दी गई थीं।

इसके बावजूद, नोएडा प्राधिकरण 2018 के फुटपाथ दिशा-निर्देशों का उल्लंघन करते हुए सड़क किनारे के हरे भरे क्षेत्रों में 5-6 मीटर तक टाइलें बिछा रहा है। जिससे वर्षा जल के अवशोषण में बाधा आ रही है और जलभराव की समस्या उत्पन्न हो रही है। आवेदक ने लगातार इन उल्लंघन के फोटोग्राफिग सबूत प्रस्तुत किए हैं, लेकिन नोएडा प्राधिकरण ने कोर्ट में झूठी जानकारी प्रस्तुत की है। ऐसे में एनजीटी ने सीईओ और डीजीएम को 8 नवंबर को उपस्थित होना था लेकिन वे नहीं पहुंचे।

काइट फेस्टिवल : नोएडा के आसमान पर पतंग की चमक

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

नोएडा में चल रहे काइट फेस्टिवल 2024 का आज समापन हो गया। समापन समारोह में मुख्य मेहमान नोएडा प्राधिकरण के सीईओ डॉ. लोकेश एम. और नोएडा प्राधिकरण के एसीओ संजय खत्री मौजूद रहे। इन दोनों अधिकारियों ने भी पतंग में अपने हाथ आजमाए।

कार्यक्रम में 1,000 से अधिक स्कूली बच्चों ने उत्साह पूर्वक हिस्सा लिया। जिनमें स्फीयर इंटरनेशनल स्कूल के बच्चों ने पतंग उड़ाने के अपने कौशल का प्रदर्शन किया और मंच पर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। इस दौरान पतंग बाजी में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वालों को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया।

इनको मिला सम्मान

- समग्र चैम्पियनशिप में टीम ओडिशा काइट माइन
- रिंग काइट चैम्पियन में केरल और लक्षद्वीप वन इंडिया काइट टीम केरल
- पारंपरिक ट्रेन पतंग चैंपियन में टीम राजस्थान लेक सिटी काइट क्लब
- स्पोर्ट्स काइट चैंपियन में टीम गुजरात में आनंद काइट क्लब शो
-काइट चैंपियन में टीम कर्नाटक काइट क्लिनिक क्लब, बंगलौर

सीआईआरसी क्रिकेट लीग में 16 टीमें लेंगी भाग

नोएडा। सीआईआरसी क्रिकेट लीग 2024 का आयोजन शुक्रवार से नोएडा में शुरू हो गया। जो 12 नवंबर तक चलेगा।

यह टूर्नामेंट सीआरसी ग्रुप और आईसीएआई गौतम बुद्ध नगर शाखा द्वारा आयोजित किया जा रहा है, जिसमें यूपी, एमपी, छत्तीसगढ़, झारखंड, राजस्थान समेत सात राज्यों की 16 टीमें हिस्सा लेंगी। सभी मैच नोएडा स्टेडियम और एसएससीजी मैदान पर खेले जाएंगे। लीग का उद्देश्य खेलों के जरिए स्वास्थ्य, खेल भावना व एकजुटता को बढ़ावा देना है, खासकर चार्टर्ड अकाउंटेंट्स समुदाय के बीच। यह आयोजन साथ खेलने, सेहत को प्राथमिकता देने व रिश्तों को मजबूत करने अवसर है।

दोस्त की 3 हजार के लिए हत्या, तीन आरोपी गिरफ्तार, एक फरार

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

नोएडा के चोटपुर कालोनी में युवक की हत्या के मामले में थाना सेक्टर-63 पुलिस ने तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया। एक आरोपी अभी फरार है। पूछताछ में बताया कि पहले सभी लोग आपस में दोस्त थे। आशु ने मुख्य आरोपी पारुल को तीन हजार रुपए दिए थे। वो पैसा वापस नहीं कर रहा था। बातचीत के दौरान पारुल ने तीन साथियों के मिलकर उस पर चाकू से हमला किया। इसमें उसकी मौत हो गई। एक अन्य युवक घायल हुआ था उसका इलाज चल रहा है। आरोपियों को श्मशान घाट अंडरपास के नीचे छिजारसी से गिरफ्तार किया।

डीसीपी शक्ति मोहन अवस्थी ने बताया कि गिरफ्तार किए गए आरोपियों में पारुल, अमित पासवान और अकरम है। इन तीनों ने आशु पर चाकू से हमला किया था। जिसमें उसकी मौत हो गई थी। डीसीपी ने बताया कि आशु और तीनों के बीच पैसे के लेन-देन को लेकर दीपावली से 03 दिन पहले भी झगड़ा हो गया था। जिसमें आशु ने घटना के मुख्य आरोपी पारूल के गाली-गलौज करने पर उसे थप्पड़ मार दिया था। उस दौरान आसपास के लोगों ने दोनों को समझाकर झगड़ा शांत करा दिया था। 06 नवंबर 2024 को घटना के मुख्य आरोपी पारूल बदला लेने की नीयत से अपने साथियों अमित पासवान, अकरम और सचिन नागर के साथ मिलकर ज्ञानदीप पब्लिक स्कूल के पास गए। बात को सुलझाने के लिए वहीं पर आशु को बुलाया। इस दौरान बातचीत करने के दौरान ही पारुल ने आशु पर चाकू से हमला कर दिया गया था। जिससे वह गम्भीर रूप से घायल हो गया। उसको बचाने के लिए आये उसके दोस्त विशाल पर भी आरोपियों ने चाकू से हमला कर गम्भीर रूप से घायल कर दिया गया। घायल युवक उपचाराधीन है।

प्रतीकात्मक फोटो

गाजियाबाद के मुरादनगर में बस ड्राइवर पर चाकू से हमला

गाजियाबाद। मोदीनगर में मुरादनगर थानाक्षेत्र के गांव बसंतपुर सैतली स्कूल बस के चालक पर एक युवक पर चाकू से हमला कर दिया। चाकू देखकर बस में छात्र डर गए और चिल्लाने लगे। चालक ने खेत में छिपकर अपनी जान बचाई है। घटना दोपहर तीन बजे के आसपास की है। पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज कर आरोपी की तलाश शुरु कर दी है। नगर की रावली रोड निवासी सोनू गांव जलालाबाद स्थित बाबा पब्लिक स्कूल में स्कूल बस चलाते है। चालक सोनू का आरोप है कि दोपहर तीन बजे के आसपास वह स्कूल की छुट्टी के बाद छात्रों को उनके घर छोडने के लिए बस से जा रहा था। जब स्कूल बस गांव बसंतपुर सैतली पहुंची तो अचानक एक युवक चाकू लहराता हुआ और बस पर ताबड़तोड़ हमला करने लगा। इतना ही नहीं वह बस के अंदर भी आ गया। जिस कारण छात्र डर गए और चिल्लाने लगे। मगर उसने आरोपी को बस से नीचे उतार दिया और वह आगे बढ़ गया।

भेल के पूर्व डीजीएम तीन दिन डिजिटल अरेस्ट

पायनियर समाचार सेवा। गाजियाबाद

● ठग ने महाराष्ट्र के केस का डर दिखा; 10.50 लाख रुपए ट्रांसफर कराए

गाजियाबाद में भेल के रिटायर्ड डिप्टी जनरल मैनेजर को गिरफ्तारी का डर दिखाकर ठगों ने तीन दिन तक डिजिटल अरेस्ट रखा। इस बीच ठगों ने न ही फोन काटने दिया और न ही किसी से बात करने दी। आरोपियों ने पीड़ित से 10.50 लाख रुपए ठग लिए। ठग ने खुद को मुंबई में सीबीआई अधिकारी बताया।

गाजियाबाद पुलिस ने केस दर्ज कर के जांच शुरू कर दी है। मामला एक अगस्त का है। गाजियाबाद के थाना इंदिरापुरम के वसुंधरा में गोपाल कृष्ण अदलखा रहते हैं। पुलिस को दी तहरीर के मुताबिक इनके पास 30 जुलाई को एक अज्ञात व्यक्ति ने वॉट्सऐप कॉल किया। उस व्यक्ति ने खुद को साइबर क्राइम इंस्पेक्टर राकेश कुमार बताया। राकेश कुमार ने गोपाल को बताया कि उनके ऊपर मनी लॉन्ड्रिंग का केस मुंबई में दर्ज हुआ है। राकेश ने गोपाल को बताया कि आपके आधार कार्ड से एक मोबाइल नंबर लिया गया है। जिसके बाद मुंबई में यह अकाउंट खुलवाया गया है। गोपाल ने जब अपनी सफाई दी तो फोन करने वाले राकेश ने कहा कि वह अपने उच्च अधिकारी से उनकी बात करवाता है। गोपाल के मुताबिक दूसरा कॉल करने वाले व्यक्ति ने खुद को सीबीआई से बताया। बोला, उसका नाम डीएल हांडा है। उसने भी राकेश की बातें दोहराईं। साथ ही बताया कि आपके और अन्य अकाउंट में 84 मिलियन रुपए आए हैं। जिस मामले में अशोक कुमार नाम के एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया है। जिसने 382 लोगों का नाम लिया है।

आयुध निर्माण फैक्ट्री परिसर के घर में किशोरी से छेड़छाड़

पायनियर समाचार सेवा। गाजियाबाद

मोदीनगर के मुरादनगर की आयुद्य निर्माणी फैक्ट्री परिसर की एक कॉलोनी में सुबह करीब नौ बजे घर में घुसकर पड़ोसी ने 14 वर्षीय किशोरी के साथ अश्लील हरकत कर छेड़छाड़ की। वारदात के समय घर पर कोई मौजूद नहीं था। किशोरी की मां ने इस संबंध में थाने में तहरीर दी है। पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज कर आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है।

आयुध निर्माणी फैक्ट्री परिसर की एक कॉलोनी निवासी एक महिला परिवार सहित रहती है। महिला ने बताया कि वह किसी काम से अस्पताल गई थी और घर पर 14 साल की पुत्री व पुत्र मौजूद थे। बेटा नहा रहा था और बेटी काम कर रही थी। इसी बीच एक व्यक्ति ने दरवाजा खटखटाया। आरोप है कि बेटी जब दरवाजा खोला तो आरोपी ने अश्लील हरकत करनी शुरू कर दी। विरोध करने पर किशोरी को मारपीट कर घायल कर दिया और जान से मारने की धमकी दी। किशोरी ने अपनी मां को आपबीती सुनाई। महिला ने इस संबंध में मुरादनगर थाने में तहरीर दी है। एसीपी सिद्धार्थ गौतम ने बताया कि महिला की तहरीर के आधार पर रिपोर्ट दर्ज कर ली गई है। आरोपी को गिरफ्तार कर लिया गया है।

एटीएम बदलकर धोखाधड़ी करने वाले दो शातिर बदमाश मुठभेड़ में हुए घायल

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

वाहनों से कीमती ईसीएम चोरी करने वाला गिरफ्तार

नोएडा। नोएडा की थाना फेस-3 पुलिस ने वाहनों से कीमती ईसीएम चोरी करने वाले एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। इसके कब्जे से चोरी किए हुए कुल 12 ईसीएम व गाड़ियों के ईसीएम खोलने के औजार बरामद किए गए है। एडीसीपी हृदेश कठेरिया ने बताया कि 2 नवंबर को थाना फेस-3 पर सूचना दी गई थी कि ट्रांसपोर्ट नगर क्षेत्र के अंतर्गत गा?यों के ईसीएम अज्ञात चोरों द्वारा चोरी कर लिये गये थे। जिसके संबंध में थाना फेस-3 पर पीड़ित की लिखित तहरीर के आधार पर मुकदमा दर्ज कराया गया था। उन्होंने बताया कि थाना फेस-3 पुलिस ने लोकल इंटेलिजेंस व गोपनीय सूचना की सहायता से गढ़ी गोल चक्कर से पर्थला की ओर जाने वाले एफएनजी सर्विस रोड के पास से चेकिंग की जा रही थी। इस दौरान मुखबिर के इशारे पर पुलिस ने घेराबंदी करके आदिल उर्फ पीतल पुत्र बहाव को गिरफ्तार किया गया है। इसके के कब्जे से 12 ईसीएम औजार बरामद किए। एक अन्य साथी मौके से फरार हो गया। पुलिस उसकी तलाश के लिए कांबिंग कर रही है। एडीसीपी ने बताया कि आरोपी अपने अन्य साथियों के साथ मिलकर एनसीआर क्षेत्र में रात के समय सुनसान जगहों पर खड़े वाहनों के ईसीएम चोरी करता था। इसके द्वारा चोरी करने से पहले वाहनों की रेकी की जाती थी।

एटीएम कार्ड बदलकर धोखाधड़ी करने वाले दो बदमाशों के साथ पुलिस की मुठभेड़ हो गई। दोनों बदमाशों के पैर में गोली लगी है। ये दोनों काफी शातिर किस्म के है। पुलिस इनका आपराधिक रिकार्ड खंगाल रही है।

थाना फेस-2 नोएडा पुलिस सेक्टर-82 कट भंगेल पर चेकिंग कर रही थी। इस दौरान एक बिना नंबर प्लेट लगी मोटरसाइकिल पर सवार 02 व्यक्तियों को रुकने का इशारा किया गया। वह नहीं रुके और मोटरसाइकिल को तेजी से चलाते हुए भागने का प्रयास करने लगे। पुलिस टीम द्वारा 800 मीटर तक पीछा किया गया। बार बार वॉर्निंग दी गई। इसके बाद भी मोटरसाइकिल सवार व्यक्ति बाइक को मो ?कर नाले की पटरी पर भागने लगे।अपने को घिरता देखकर मोटरसाइकिल को वही गिराकर दोनों बदमाशों ने पुलिस टीम पर जान से मारने की नीयत से फायरिंग की। जिस पर पुलिस टीम ने जवाबी कार्यवाही की। दोनों बदमाशों के पैर में गोली लगने से घायल हो गए। घायल बदमाशों की पहचान हनीफ पुत्र खुर्शीद और शकील पुत्र अफसर निवासी जिला पलवल, हरियाणा के रूप में हुई। बदमाशों के कब्जे से 02 अवैध देशी तमंचे .315 बोर , 02 खोखा कारतूस .315 बोर व 02 जिन्दा कारतूस .315 बोर, 01 मोटरसाइकिल बिना नंबर प्लेट व 26 एटीएम कार्ड अलग-अलग बैंको के बरामद किए गए। घायल बदमाशों को उपचार के लिए जिला अस्पताल भेजा गया। दोनों बदमाश शातिर किस्म के अपराधी है। लोगों की मदद के बहाने धोखाधड़ी कर एटीएम को कार्ड बदलकर उनके पैसै निकाल लेते थे। इसमें अब तक जांच में अनीफ पर 7 मुकदमे और शकील पर 2 मुकदमे दर्ज है।

PUBLIC NOTICE

Notice is hereby given to the General Public on behalf of our client that Mr. Parveen Goyal & Mr. Rakesh Kumar Bansal are claiming to be owners of Residential Third Floor common roof rights built on Property bearing No. 72, area measuring 100 sq. yds., size (15'X60), out of Khasra No. 19/21, situated in the area of Village Hastsal and the Colony known as Vikas Nagar, in Block-E, New Delhi-110059; vide GPA, ATS & Will dated 26.07.2014, executed by Mr. Rajender Prasad & Mrs. Sonika Tyagi. All persons are hereby informed that above mentioned owner wants to sell the property to a person who wants to obtain a loan from our client against the said property. If, anybody has any objection/s upon the ownership of above owner over the said property, its sale/mortgage/litigation, & any other objections, kindly inform the undersigned in writing on the below mentioned address within 7 days of the present.

Kumar & Associates (Advocates & Consultants)
200, IInd Floor, 23, Shivaji Marg, Moti Nagar, N. Delhi-15
Ph : 011-41112527-28 legal@knalegal.com

PUBLIC NOTICE

Notice is hereby given to the General Public on behalf of our client that Mrs. Asha Rani is claiming to be owner of Built up Property Bearing No. 10 (old No. 28/2E/27) with terrace/roof rights, having an area measuring 70 sq. yds. or 58.527 sq. mtrs., or 630 sq. ft., out of Khasra No.2591 /742, situated in the area of Village Chandrawali alias Shahdara, in the abadi of Jwala Nagar, Gali No. 1, Near Shamshan Ghat, Illaqa Shahdara, Delhi-110032; vide GPA, ATS & Will dated 07.04.2008, executed by Mr. Rajender Parshad. All persons are hereby informed that above mentioned owner wants to sell the property to a person who wants to obtain a loan from our client against the said property. If, anybody has any objection/s upon the ownership of above owner over the said property, its sale /mortgage/litigation, & any other objections, kindly inform the undersigned in writing on the below mentioned address within 7 days of the present.

Kumar & Associates (Advocates & Consultants)
200, IInd Floor, 23, Shivaji Marg, Moti Nagar, N. Delhi-15
Ph : 011-41112527-28 legal@knalegal.com

PUBLIC NOTICE

It is to inform to the public at large that Mrs. Preeti had acquired Property bearing no. C-529, area measuring 75 sq. yrds., Khasra No. 355, situated at Village Ghonda Gujran Khadar, in the abadi of Gali No. 25, C-Block, Bhajanpura, Illaqa Shahdara, Delhi vide Gift Deed Dt. 16.10.2024 executed by Mr. Sunil Kumar and Now Mrs. Preeti is the undisputed owner of the said property.

OR

Any person / firm / institution / company having any claim or right in respect of the said Property by way of inheritance, share, sale, agreement, lease, license, gift, possession, legal heirs, partners or encumbrance howsoever or otherwise is hereby required to intimate in writing to the undersigned within 07 days from the date of publication of this notice of his/her/their share or claim, if any, with all supporting documents at below mentioned address. After expiration of notice period, the claims, if any, of such person shall be treated null and void and also treated as waived and not binding on our client.

Ajay Kumar Giri (Advocate) H No. 26/161, Basement, Vikram Vihar, Lajpat Nagar 4, New Delhi -110024

THE PIONEER CLASSIFIEDS

CHANGE OF NAME

I, Deepika Rathi W/o Upendra Kumar Rathi R/o House No.-1022, Sector-5, Vasundhara, Ghaziabad (U.P) 201012 have changed my name to Deepika for all future purposes.

PD(890)A

सार्वजनिक सूचना

मेरे मुवक्किलगण आजाद सिंह भदौरिया पुत्र श्री किशन पाल सिंह एवं श्रीमती अनीता देवी पत्नी श्री आजाद सिंह भदौरिया निवासीगण-म0नं0-बी-175, गली नं0 4/1, करावल नगर विस्तार, करावल नगर, दिल्ली-110094 ने अपने पुत्र विवेक सिंह एवं पुत्रवधू सोनी सिंह को उनके दुर्व्यवहार एवं गलत आचरण के कारण अपनी समस्त चल-अचल सम्पत्ति से बेदखल कर सम्बन्ध विच्छेद कर लिये हैं। भविष्य में उनके किसी भी कृत्य / लेन-देन हेतु मेरे मुवक्किलगण जिम्मेदार नहीं होंगे।

Mohit Bansal Advocate Ch.No. F-303, F-Block, Lawyers Chamber, Karkardooma Courts, Shahdara, Delhi-110032

CAPRI LOANS

केप्री ग्लोबल कैपिटल लिमिटेड
सीआयएन: L65921MH1994PLC173469

कॉर्पोरेट कार्यालय:
502, टॉवर - ए, पेनिनसुला बिजनेस पार्क, सेनापति बापट मार्ग, लोअर परेल, मुंबई - 400013.

शाखा के स्थानांतरण के लिए सामान्य सूचना

कंपनी केप्री ग्लोबल कैपिटल लिमिटेड (केप्री लोन) के द्वारा आम जनता और ग्राहकों को सूचित किया जाता है कि हमारी एक शाखा **नजफगढ़-रोशन पुरा-दिल्ली,** प्लॉट नंबर 4 बी, ग्राउंड फ्लोर, ओल्ड रोशन पुरा, नजफगढ़, दिल्ली - 110043 में स्थित है। को इस सार्वजनिक सूचना के 90 दिनों के बाद **नजफगढ़-रोशन पुरा 1-दिल्ली,** प्लॉट नंबर 2, खसरा नंबर 279, 281 रोशनपुरा नजफगढ़, नई दिल्ली - 110043 में स्थानांतरित किया जाएगा। नए स्थान पर सभी मौजूदा सेवाओं का लाभ उठाया जा सकता है। अंत में, केप्री लोन की आधिकारिक वेबसाइट **www.capriloans.in** पर जाएं या टोल फ्री नंबर (यानी) 1800 102 1021 डायल करें या किसी और सहायता के लिए अपनी नजदीकी शाखा पर जाएं।

दिनांक: 9 नवंबर 2024.

अधिकृत हस्ताक्षरकर्ता
केप्री ग्लोबल कैपिटल लिमिटेड के लिए

यू ग्रो कैपिटल लिमिटेड
चौथी मंजिल, टॉवर 3, इक्विनॉक्स बिजनेस पार्क, एलबीएस रोड, कुर्ला, मुंबई 400070

निजी संधि द्वारा अचल संपत्तियों की बिक्री के लिए बिक्री नोटिस

प्रतिभूति हित (प्रवर्तन) नियम, 2002 के नियम 8 और 9 के परंतुक के साथ पठित वित्तीय आस्तियों के प्रतिभूतिकरण और पुनर्गठन और प्रतिभूति हित अधिनियम, 2002 के प्रवर्तन के अंतर्गत निजी संधि द्वारा अचल संपत्ति(ओं) ["प्रतिभूत परिसंपत्तियों") की बिक्री के लिए 15 दिनों की बिक्री सूचना।

एतद्द्वारा सामान्य रूप से जनता को और विशेष रूप से उधारकर्ता (उधारकर्ताओं) और गारंटर (ओं) को नोटिस दिया जाता है कि नीचे वर्णित सुरक्षित संपत्ति यू ग्रो कैपिटल लिमिटेड ("सिक्योर्ड क्रेडिटर") और पूनावाला फिनकॉर्प लिमिटेड को गिरवी/प्रभारित है, जिनके पास कॉर्पोरेट पहचान संख्या L51504PN1978PLC209007 है, जिनके पास भारतीय रिज़र्व बैंक के साथ पंजीकृत गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनी के रूप में व्यवसाय करने का लाइसेंस है और जिसका पंजीकृत कार्यालय 601, 6 वीं मंजिल, जीरो वन आईटी पार्क, सर्वे नंबर 79/1, घोरपदी, मुंधवा रोड, पिंगले वस्ती, पुणे- 411036, जिसका कब्जा सुरक्षित लेनदार के अधिकृत अधिकारी द्वारा लिया गया है, इस नोटिस से 15 दिनों के बाद निजी संधि के माध्यम से "जैसा है वैसा है" और "जैसा है जहां है" और "जो कुछ भी है" आधार पर बेचा जाएगा, 07.09.2023 को 70,22,922/- रुपये की वसूली और राशि की वसूली की तारीख तक उस पर ब्याज और अन्य खर्च, उधारकर्ता (ओं) और गारंटर (ओं) से सुरक्षित लेनदार के कारण अर्थात् **1) दीपू फर्नीचर 2) सतीश कुमार 3) बीना देवी।** आरक्षित मूल्य - **रु. 55,00,000/-** और बयाना राशि जमा - **रु. 5,50,000/-**

सुरक्षित संपत्ति का विवरण:

अचल संपत्ति का वह सारा टुकड़ा और पार्सल जिस पर मकान नं. डीबी -83, (मौका पटवारी रिपोर्ट के रूप में) क्षेत्र 149.11 वर्ग गज (11.11 वर्ग गज + 138 वर्ग गज), गली नंबर 5, गांव डबुआ, आबादी लाल डोरा के रूप में जाना जाता है, तहसील और जिला फरीदाबाद, हरियाणा। बॉर्ड - पूर्व - नाठी का भूखंड, पश्चिम - राजपाल सिंह का भूखंड, उत्तर - नाठी का भूखंड, दक्षिण - सड़क।

बिक्री के विस्तृत नियमों और शर्तों के लिए, कृपया यू ग्रो कैपिटल लिमिटेड/सिक्योर्ड क्रेडिटर की वेबसाइट पर दिए गए लिंक को देखें। यानी **www.ugrocapital.com** या अधोहस्ताक्षरी से **authorised.officer@ugrocapital.com** पर संपर्क करें

दिनांक : 09-11-2024, स्थान : हरियाणा **अधिकृत अधिकारी, यू ग्रो कैपिटल लिमिटेड**

Yaari Digital Integrated Services Limited
(CIN: L51101HR2007PLC077999)

Extract of Consolidated Unaudited Financial Results for the quarter and half year ended 30 September 2024

(Rs. in Crores)

Particulars	Quarter ended 30-Sep-24	Quarter ended 30-Jun-24	Quarter ended 30-Sep-23	Year to date 30-Sep-24	Year to date 30-Sep-23	Year ended 31-Mar-24
	Unaudited	Unaudited	Unaudited	Unaudited	Unaudited	Audited
Total Income from Operations	-	0.50	0.06	0.50	0.30	3.15
Net Profit / (Loss) for the period (before Tax, Minority Interest and Share of Profit / (Loss) of Associate, Exceptional and/or Extraordinary items)	(5.59)	(5.28)	(5.74)	(10.87)	(11.24)	(21.61)
Net Profit / (Loss) for the period (before Tax, Minority Interest and Share of Profit / (Loss) of Associate (after Exceptional and/or Extraordinary items))	(5.59)	(5.28)	(5.74)	(10.87)	(11.24)	(21.61)
Net Profit / (Loss) for the period after Tax, Minority Interest and Share of Profit / (Loss) of Associate (after Exceptional and/or Extraordinary items)	(5.60)	(5.28)	(5.74)	(10.88)	(11.24)	(21.61)
Total Comprehensive Income for the period [Comprising Profit / (Loss) or the period (after tax) and Other Comprehensive Income (after tax)]	(3.75)	4.34	1.35	0.59	1.16	(12.31)
Equity Share Capital	19.74	19.74	19.74	19.74	19.74	19.74
Reserves (excluding Revaluation Reserve) as shown in the audited Balance Sheet						(253.50)
Earnings per Share (EPS) before extraordinary items						
- Basic (Amount in Rs.)	(0.56)	(0.53)	(0.57)	(1.08)	(1.12)	(2.15)
- Diluted (Amount in Rs.)	(0.56)	(0.53)	(0.57)	(1.08)	(1.12)	(2.15)
Earnings per Share (EPS) after extraordinary items						
- Basic (Amount in Rs.)	(0.56)	(0.53)	(0.57)	(1.08)	(1.12)	(2.15)
- Diluted (Amount in Rs.)	(0.56)	(0.53)	(0.57)	(1.08)	(1.12)	(2.15)

Notes:

1) The above results have been reviewed by the Audit Committee and subsequently approved at the meeting of the Board of Directors held on 08 November 2024.

2) **Key Standalone Financial Information:**

(Rs. in Crores)

Particulars	Quarter ended 30-Sep-24	Quarter ended 30-Jun-24	Quarter ended 30-Sep-23	Year to date 30-Sep-24	Year to date 30-Sep-23	Year ended 31-Mar-24
	Unaudited	Unaudited	Unaudited	Unaudited	Unaudited	Audited
Total Income	0.09	0.59	0.15	0.68	0.33	3.57
Profit/(Loss) before Tax	(10.69)	(11.22)	(10.64)	(21.91)	(20.96)	(43.37)
Net Profit/(Loss) after Tax	(10.69)	(11.22)	(10.64)	(21.91)	(20.96)	(43.37)

3) The above is an extract of the detailed format of Quarterly/ Half Yearly Financial Results filed with the Stock Exchanges under Regulation 33 of the SEBI (Listing and Other Disclosure Requirements) Regulations, 2015. The full format of the Quarterly/ Half Yearly Financial Results are available on the Company's website (https://www.yaari.com) and on the website of BSE (https://www.bseindia.com) and NSE (https://www.nseindia.com).

Registered Office: 5th Floor, Plot No. 108, IT Park, Udyog Vihar, Phase-1 Gurugram, Haryana 122016

For and on behalf of the Board of Directors

Place : Gurugram
Date : 08 November 2024

Kubeir Khera
Executive Director & CEO

नए नियम से नोएडा-ग्रेनो में फ्लैट खरीदारों की बढ़ी चिंता

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

यूपी में फ्लैट खरीदने की सोच रहे हैं तो यह खबर आपके लिए अहम हो सकती है। यूपी सरकार ने हाल ही में एक नया नियम जारी किया है, जिसमें फ्लैट की कीमत का 10 फीसदी भुगतान करने पर बिल्डर-खरीदार एग्रीमेंट का पंजीकरण अनिवार्य हो गया है। इस फैसले से घर खरीदने वालों और डेवलपर्स के बीच चिंता बढ़ गई है। अब खरीदारों को रजिस्ट्रेशन के लिए प्रॉपर्टी की कीमत का एक हिस्सा स्टाम्प ड्यूटी के रूप में और एक फीसदी पंजीकरण शुल्क देना होगा।

अभी तक खरीदार और बिल्डर 100 के स्टाम्प पेपर पर शुरुआती एग्रीमेंट करते थे, और सरकार की भूमिका तब आती थी जब डेवलपर के पास प्रोजेक्ट के लिए ऑक्यूपेंसी और कंप्लीशन सर्टिफिकेट आ जाता था। लेकिन अब इस नए नियम के तहत खरीदारों को पहले ही बड़ी राशि जमा करनी होगी, जिससे उनकी मुश्किलें बढ़ सकती हैं।

गौड़ ग्रुप के सीएमडी और क्रेडाई नेशनल के चेयरमैन, मनोज गौड़ ने कहा कि यह नियम सही नहीं है, क्योंकि यह घर खरीदने वालों पर बेवजह का आर्थिक बोझ डालता है।

एसकेए ग्रुप के डायरेक्टर संजय शर्मा कहते हैं कि हमारा मानना है कि नोएडा-ग्रेटर नोएडा के अधिकारियों का यह नया फैसला उत्तर प्रदेश के घर खरीदारों पर बड़ा वित्तीय बोझ डाल सकता है। प्रॉपर्टी बुक करते समय समझौते पर 6 फीसदी स्टाम्प शुल्क सरकार को देना ज्यादा खर्च बढ़ाता है, जिससे घर खरीदना सभी के लिए महंगा हो जाता है।

एस्कॉन इंफ्रा रियल्टर्स के एमडी नीरज शर्मा के अनुसार बिक्री एग्रीमेंट पर स्टाम्प ड्यूटी का यह नया बोझ खरीदारों पर दबाव बढ़ा सकता है। हम इस प्रावधान पर पुनर्विचार की मांग करते हैं।

ट्रूईसोल रेड के सेल्स डायरेक्टर, जितेंद्र गोयल का कहना है कि इस नीति से मध्यम वर्गीय परिवारों का घर खरीदने का सपना अधूरा रह सकता है।

दिल्ली न्याय यात्रा : जनता के साथ कांग्रेस का है दिल का रिश्ता: देवेंद्र

● प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष, हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू और पार्टी कोषाध्यक्ष माकन ने झंडी दिखा रवाना किया

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

दिल्ली न्याय यात्रा के उद्घाटन के अवसर पर कांग्रेसी नेता। फोटो : रंजन डिमरी

प्रदेश कांग्रेस ने शुक्रवार से दिल्ली न्याय यात्रा की शुरू की है। इसका मकसद पार्टी का दिल्ली में अपना खोया जनाधार वापस पाना है, लिहाजा यात्रा में सबसे अधिक दिल्ली सरकार और आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ही निशाने पर थे। शराब की बोतल पर केजरीवाल की एक फोटो छापकर पार्टी ने आप प्रमुख पर निशाना साधा।

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष देवेंद्र यादव ने यात्रा की शुरुआत राजघाट पर महात्मा गांधी की समाधि के दर्शन के साथ की। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि कांग्रेस का दिल्ली से दिल का रिश्ता है। दिल्ली के साथ न्याय नहीं हो रहा है। दिल्ली का विकास उसी जगह पर ठहर गया है जहां पूर्व सीएम शीला दीक्षित ने छोड़ा था। उन्होंने कहा कि कांग्रेस दिल्ली को न्याय दिलाने का काम करेगी। हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू और यादव ने इस यात्रा को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस यात्रा के जरिए पार्टी अपना आधार वोट बैंक फिर से साथ जोड़ने की कोशिश कर रही है।

एक महीने तक चलने वाली यात्रा रोजाना 20 से 25 किलोमीटर का सफर तय करेगी और सभी 70 विधानसभाओं में लगभग 360 किलोमीटर की दूरी तय करके युवा, महिला, श्रमिक, किसान और ढाई करोड़ से अधिक दिल्ली के विकास में दिल्ली वालों की हिस्सेदारी सुनिश्चित की जाएगी। आम आदमी पार्टी पर हमला बोलते हुए यादव ने कहा कि आप के शासन में जहां महंगाई, बेरोजगारी, महिलाओं पर अत्याचार, कानून व्यवस्था, बिगड़ती परिवहन, स्वास्थ्य और शिक्षा व्यवस्था ने रिकार्ड तोड़े हैं। वहीं जल और वायु प्रदूषण ने दिल्ली वालों को जहरीली वातावरण में जीने के लिए मजबूर कर दिया है। एक्यूआई गंभीर के करीब रहा है और सरकार लाचार नजर आ रही है। आम आदमी पार्टी के पास ज्लवंल और सामान्य समस्याओं का कोई स्थाई हल नही है जबकि कांग्रेस ने अपने शासन में राजधानी को किरोसीन मुक्त करने के साथ पूरी परिवहन व्यवस्था को सीएनजी युक्त करके विश्व में एक मिसाल पैदा की थी और पूरे 15 वर्ष लगातार ग्रीन कवर बढ़ाकर आबोहवा दुरुस्त कर प्रदूषण पर काबू पाया।

यात्रा से पहले यादव ने झंडा फहराया और सेवादल की टीम के साथ वंदेवातरम गायन भी हुआ और दिल्ली न्याय यात्रा का थीम सांग भी लॉच किया गया। यादव ने कहा यात्रा का मकसद दिल्ली वालों की समस्याओं को उजागर करके उनके स्थायी उपाय के लिए रास्ता प्रशस्त करना, जिसके लिए कांग्रेस कार्यकर्ता यात्रा के जरिए हर दरवाजे दस्तक देगा और भ्रष्टाचारी आम आदमी पार्टी की विफलता को उजागर करेंगे। अजय माकन ने कहा कि दिल्ली न्याय यात्रा महिला के खिलाफ अत्याचार, बदहाल कानून व्यवस्था, भ्रष्टाचार के खिलाफ न्याय की लड़ाई, दिल्ली वालों की आवाज उठाने के लिए निकाली जा रही है।

विस चुनाव : अधिकारियों के तबादले के निर्देश

नई दिल्ली। अगले साल फरवरी में विधानसभा चुनाव होने की संभावना के मद्देनजर, निर्वाचन आयोग ने राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र प्रशासन से अपने गृह जिलों में तैनात अधिकारियों को स्थानांतरित करने को कहा है। निर्वाचन आयोग ने दिल्ली के मुख्य सचिव को बृहस्पतिवार को लिखे पत्र में कहा, आयोग की लगातार यह नीति रही है कि चुनावी राज्य या केंद्र शासित प्रदेश में चुनाव के संचालन से सीधे तौर पर जुड़े अधिकारियों को उनके गृह जिलों या उन स्थानों पर तैनात नहीं किया जाए, जहां उन्होंने काफी लंबे समय तक सेवा दी है।

अड़चनों के बावजूद छठ पूजा शांतिपूर्वक संपन्न : संजय सिंह

● कहा, दिल्ली सरकार ने घाटों पर सभी सुविधाएं सुनिश्चित की ताकि लोग उत साय और सम्मान के सा महापर्व मना सकें

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

राजधानी में उगते सूर्य को अर्घ्य देतीं श्रद्धालु महिलाएं।

आम आदमी पार्टी (आप) ने शुक्रवार को दावा किया कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) द्वारा छठ उत्सव` बाधित करने के लिए कई अड़चनें डाले जाने के बावजूद छठ पूजा शांतिपूर्वक संपन्न हुई। आम आदमी पार्टी के वरिष्ठ नेता और राज्यसभा सदस्य संजय सिंह ने कहा कि दिल्ली सरकार ने घाटों पर सभी सुविधाएं सुनिश्चित कीं ताकि पूर्वांचल के लोग पूरे सम्मान के साथ छठ पर्व मना सकें और सभी धार्मिक कर्मकाण्ड कर सकें।

सिंह ने कहा, वर्ष 2014 में राष्ट्रीय राजधानी में केवल 60 छठ घाट थे, लेकिन इस साल पूरे शहर में ।,800 घाटों पर छठ पर्व मनाने की व्यवस्था की गई। भाजपा द्वारा उत्सव रोकने के लिए कई प्रयास किए जाने के बावजूद दिल्ली सरकार ने हर घाट पर सभी सुविधाएं सुनिश्चित कीं। उन्होंने कहा कि हरियाणा और उत्तर प्रदेश के लोगों ने भी छठ पर्व में हिस्सा लिया। चार दिवसीय छठ पर्व शुक्रवार सुबह उषा अर्घ्य के साथ संपन्न हो गया, जहां श्रद्धालुओं ने उगते सूर्य को अंतिम अर्घ्य देकर शांति, स्वास्थ्य और परिवार की सुरक्षा का आशीर्वाद मांगा। छठ पर्व की तैयारियों को लेकर आप और भाजपा आमने-सामने हैं। दोनों पार्टियों ने एक-दूसरे पर शहर के विभिन्न स्थानों पर छठ की तैयारियों को रोकने की कोशिश करने का आरोप लगाया है।

बृहस्पतिवार को आप के वरिष्ठ नेता सोमनाथ भारती ने भाजपा पर राष्ट्रीय राजधानी में पूर्वांचलियों को छठ पूजा मनाने से रोकने के लिए पुलिस और दिल्ली विकास प्राधिकरण का इस्तेमाल करने का आरोप लगाया। उन्होंने भाजपा पर हौज खास गांव के श्रद्धालुओं को एक पार्क में छठ पर्व मनाने से रोकने का आरोप लगाया, जहां कई सालों से छठ मनाया जाता रहा है। आप नेता भारती ने यह भी आरोप लगाया कि भाजपा ने श्रद्धालुओं के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज कराई है, जिसमें कहा गया है कि जिस जगह छठ मनाया जा रहा है, वह संरक्षित वन भूमि है। आरोपों पर प्रतिक्रिया देते हुए भाजपा की दिल्ली इकाई के प्रवक्ता प्रवीण शंकर कपूर ने कहा, दिल्ली के मंत्री सौरभ भारद्वाज, विधायक सोमनाथ भारती और अखिलेश त्रिपाठी ने पिछले कुछ दिनों में विभिन्न स्थानों पर व्यवस्था को बाधित करने की कोशिश की है, जिससे शहर के लोग शर्मिंदा हैं।

अव्यवस्था की जांच जरूरी : सचदेवा

नई दिल्ली। प्रदेश भाजपा अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा है की 4 दिन के छठ महोत्सव के दौरान छठ घाटों पर देखी की अव्यवस्था पहले कभी नहीं देखी गई और इसकी जांच आवश्यक है। उन्होंने मीडिया रिपोर्ट का हवाला से कहा कि छठ व्रती झागदार पानी में उतर कर पूजा किए। वहीं कई अस्थाई घाटों में बनाये तालाबों में पूरा पानी भी नही भरा गया। इन दृश्यों को देखकर दिल्ली वाले शर्मिंदा हैं।

सचदेवा ने कहा कि वजीरपुर सहित अनेक विधानसभाओं में कुछ घाटों को बिजली कनेक्शन नहीं मिले, वहीं अधिकांश विधानसभाओं से छठ समितियों की शिकायतें आ रही हैं की टेंट ठेकेदारों ने पूरा सामान नहीं दिया तो पेयजल संकट की तो सरकार ने किसी भी स्थाई अस्थाई घाट पर व्यवस्था ही नहीं की थी जो छठ घाटों पर देखी गई।

हरिश्चंद्र से तुलना कर केजरीवाल ने कार्यकर्ताओं को दिया संदेश

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

● बोले, आप देश में कहीं भी हो कुछ महीने के लिए सब छोड़कर आम आदमी पार्टी को दिल्ली जिताने के लिए जुट जाएं

विधानसभा चुनाव के मद्देनजर आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने खुद की तुलना राजा हरिश्चंद्र कर कार्यकर्ताओं को भावनात्मक संदेश दिया, जिसमें उनहोंने विस चुनावों की चुनौतीपूर्ण स्थिति और पार्टी की अहम भूमिका पर जोर दिया। आप संयोजक ने कहा कि भाजपा आम आदमी पार्टी को हराने के लिए हर संभव कोशिश करेगी, चाहे इसके लिए किसी भी हद तक क्यों न जाना पड़े। पूरी पार्टी ने पिछले दो साल में बहादुरी, साहस और सूझबूझ से सभी कठिनाईयों का सामना किया और हम परिवार के रुप में और मजबूत हुए हैं।

केजरीवाल ने कार्यकर्ताओं से कहा कि आप देश के कहीं भी हो कुछ महीने के लिए सब छोड़कर आप को दिल्ली जिताने के लिए जुट जाएं। साथ ही नए लोगों से टीम केजरीवाल से जुड़ने के लिए phirlayengekejriwal.com पर रजिस्टर करने या 7277972779 नंबर पर मिस्ड कॉल देने की अपील की।

केजरीवाल ने शुक्रवार को डिजिटल संवाददाता सम्मेलन में कहा कि आजादी के 75 साल बाद देश ने पहली बार राजनीति में जनता से जुड़े स्कूल, अस्पताल, बिजली, पानी, सड़कें जैसे मुद्दों की बात सुनी है। आप देश की अकेली उम्मीद है, लोगों ने पहली बार देखा है कि अगर सरकार ईमानदार हो जाए तो क्या कुछ नहीं हो सकता। पिछले दो साल में हम सबसे कठिन दौर से गुजरे हैं। लेकिन कहते हैं ना कि भगवान कठिनाइयां भी अपने सबसे प्रिय भक्तों को ही देता है, उनकी परीक्षा लेता है। आपने इतिहास में कितनी कहानियां पढ़ी होंगी।

उन्होंने कहा, भगवान ने राजा हरिशचंद्र की तो कितनी कठिन परीक्षा ली थी। भगवान कठिनाइयां भेजकर आपको भविष्य की चुनौतियों के लिए मजबूत करता है। भगवान जब बहुत बड़ी कठिनाइयां भेजता है तो यह उनका संकेत होता है कि भगवान आपसे आने वाले समय में कुछ बड़ा काम करवाना चाह रहा है। इसलिए हमें कठिनाइयों से घबराना नहीं है बल्कि उनका बहादुरी से मुकाबला करना है। हमें तोड़ने और खरीदने की बहुत कोशिशें की गईं लेकिन हम नहीं टूटे। मेरे और आपके इस रिश्ते को किसी की नजर ना लगे। देश की राजनीति में आम आदमी पार्टी एक ताजा हवा का झोंका है। इसे आगे बढ़ाना है। दिल्ली में हुए कामों को रुकने नहीं देना है, इन्हें आगे बढ़ाना है। अभी और बहुत कुछ काम करने बाकी हैं।

जरूरत पड़ने पर देश के लिए तन, मन, धन सब कुछ कुर्बान करने की तैयारी रखो। अगर हो सके तो चुनाव के लिए अपने-अपने काम से छुट्टी लेकर कुछ महीनों के लिए पूरा समय इन चुनावों के लिए लगा दो। दिल्ली के बाहर के लोग दिल्ली आकर अपने किसी दोस्त या रिश्तेदार के यहां कुछ महीने रहने के लिए इंतजाम करें।

आनंद विहार में लोगों को स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं

नई दिल्ली। आनंद विहार में वायु प्रदूषण खतरनाक स्तर पर पहुंच जाने के कारण आसपास रह रहे लोगों को स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं हो रही हैं। इलाके में पिछले दो दिनों से सांस लेने में तकलीफ, गले में संक्रमण एवं आंखों में जलन के मामले बढ़े हैं।

आनंद विहार बस स्टैंड पर ऑटोरिक्शा चालक जावेद अली ने कहा, मेरी आंखों में लगातार जलन होती है और आंखें लाल हो जाती हैं। मुझे धुंधला-धुंधला दिखता है। ऐसे में मेरे लिए सुरक्षित ढंग से गाड़ी चलाना मुश्किल हो जाता है। उसने कहा कि वैसे तो वह मास्क का इस्तेमाल करता है लेकिन लंबे समय तक मास्क लगाना तकलीफदेह है क्योंकि ऐसे में वह ठीक से सांस नहीं ले पाता। आंनद विहार सबसे प्रदूषित क्षेत्रों में एक है। वहां वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) लगातार गंभीर श्रेणी में है। शुक्रवार सुबह साढ़े आठ बजे राष्ट्रीय राजधानी का संपूर्ण एक्यूआई 389 था, जबकि आनंद विहार का एक्यूआई 419 था। फलस्वरूप यहां वायु प्रदूषण के लिहाज से सबसे खराब स्थिति है।

इस वायु प्रदूषण का असर केवल आखों में जलन तक सीमित नहीं है। स्थानीय गृहिणी सुनीता पिछले कई दिनों से लगातार खांसी और आंखों में जलन की समस्या से जूझ रही हैं।

राजधानी में प्रदूषण को कम करेगा ड्रोन

● दिल्ली के सबसे बड़े हॉट स्पॉट से शुरू हुआ पानी का छिड़काव

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

आनंद विहार में पानी का छिड़काव करता ड्रोन।

राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली इस समय प्रदूषित शहर बनी हुई है। यहां हॉटस्पॉट में प्रदूषण कम करने के लिए आम आदमी पार्टी की सरकार ने पायलट प्रोजेक्ट के तहत आनंद विहार में ड्रोन से पानी का छिड़काव शुरू किया है। अगर यह परियोजना सफल होती है कि तो अन्य हॉटस्पॉट पर पानी के छिड़काव किया जाएगा। इस मौके पर मौजूद पर्यावरण मंत्री गोपाल राय ने दावा किया ड्रोन से पानी का छिड़काव करने से प्रदूषण तो कम होगा साथ ही हवाओं में दम लौटेगा।

गोपाल राय ने इसकी जानकारी देते हुए बताया कि दिल्ली के 13 हॉटस्पॉट पर प्रदूषण का स्तर सामान्य से ज्यादा होता है। इन हॉटस्पॉट पर प्रदूषण को प्रभावी ढंग से कम करने के लिए आज आनंद विहार हॉटस्पॉट पर ड्रोन द्वारा पानी के छिड़काव का प्रदर्शन किया गया। हॉटस्पॉट में सड़कों के अलावा अन्य जगहों में ड्रोन द्वारा पानी के छिड़काव को लेकर यह पायलट प्रोजेक्ट किया गया है।

सड़कों पर मोबाइल एंटी स्मॉग गन से छिड़काव किया जा रहा है। सरकार का उद्देश्य है कि टेक्नोलॉजी का अधिक से अधिक इस्तेमाल कर प्रदूषण को कम करने का प्रयास किया जा रहा है। यह ड्रोन 15 लीटर तक पानी अपने साथ लेकर ऊपर से छिड़काव कर सकता है। इसकी रिपोर्ट पर्यावरण विभाग और डीपीसीसी को भेजी जाएगी। पर्यावरण विभाग और डीपीसीसी के इंजीनियर इसका विश्लेषण करके रिपोर्ट सौपेंगे। उस आधार पर और ज्यादा प्रभावी कदम उठाए जाएंगे।

गोपाल राय ने कहा कि शहर में वायु प्रदूषण स्रोतों की पहचान और उसका निदान करने में ड्रोन तकनीक महत्वपूर्ण उपकरण है। उन्नत सेंसर से लैस ड्रोन भीड़भाड़ वाले शहरी क्षेत्रों, औद्योगिक क्षेत्रों और उन क्षेत्रों तक पहुंचने में सक्षम है, जहां पारंपरिक तरीकों से छिड़काव करना मुश्किल है। ड्रोन के माध्यम से प्रदूषक स्रोतों को कम करने के लिए लक्षित पानी छिड़काव की कार्रवाई संभव होगी।

गोकलपुरी में पिस्तौल से डरा रहे बदमाश को हवलदार ने दबोचा

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

● बकाया धन की वसूली के लिए धमका रहा था बदमाश

उत्तर-पूर्वी दिल्ली के गोकलपुरी इलाके में एक बदमाश उस समय पकड़ा गया, जब वह अपने साथियों के साथ मिलकर पिस्तौल दिखाकर एक व्यक्ति को डराने का प्रयास कर रहा था। तभी वहां से गुजर रहे हेड कॉस्टेबल ने बहादुरी दिखाते हुए उसे धर धबोचा। बदमाश की पहचान सेकुल उर्फ सैफुल के रूप में हुई है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार, इंद्र विहार निवासी अरशद ने बताया आरोपी सैकुल ने अरशद को वीडिओ कॉल की थी उस वीडिओ कॉल के दौरान आरोपी ने अरशद का घर दिखाया और जब अरशद भाई अनस ने घर की खिड़की से झांककर देखा तो अनस को निशाना बनाकर तीन गोलियां चलाई थी, सैकुल अरशद से पार्टनर के 40 लाख रुपये बकाया राशि वापस करने की धमकी दे रहा था। घटना के समय वहां से गुजर रहे हेड कॉस्टेबल दयाचंद भीड़कर देखकर वहां पहुंचे तो आरोपी अपने साथियों के साथ भागने लगा, पर दयाचंद ने बहादुरी दिखाते हुए उसे दबोच लिया। सैकुल के पास से एक लोडेड रिवाल्वर बरामद हुई है।

बीड़ी के लिए हुए झगड़े में युवक की हत्या, एक गिरफ्तार

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

शहादरा के ज्वाला नगर इलाके में एक व्यक्ति ने बीड़ी मांगने पर 20 वर्षीय युवक की कथित तौर पर हत्या कर दी। मृतक की पहचान कस्तूरबा नगर निवासी सनी के रूप में हुई है। कुछ वर्ष पहले वह हत्या के एक मामले में शामिल पाया गया था। उस पर आर्म्स एक्ट के तहत मामला दर्ज हुआ था।

पुलिस उपायुक्त (शाहदरा) प्रशांत गौतम ने बताया कि पुलिस ने मामले में मुख्य संदिग्ध के तौर पर ज्वाला नगर निवासी राजेश को गिरफ्तार किया है। डीसीपी ने बताया कि बृहस्पतिवार को विवेक विहार थाने में एक एंबुलेंस से फोन आया कि ज्वाला नगर स्थित श्मशान घाट के पास एक युवक मृत मिला है। अधिकारी ने बताया कि पुलिस की एक टीम घटनास्थल पर पहुंची तो वहां युवक मृत अवस्था में मिला जिसकी नाक से खून बह रहा था।

गौतम ने कहा, शव को पोस्टमार्टम के बाद परिजनों को सौंपने से पहले सब्जी मंडी शवगृह में रख दिया गया है। प्रारंभिक जांच के बाद पुलिस ने मामले में मुख्य संदिग्ध के रूप में राजेश को गिरफ्तार कर लिया।

राजेश ने पुलिस को बताया कि सनी उसके पास आया और उससे बीड़ी मांगी, जिससे वह क्रोधित हो गया और दोनों के बीच बहस शुरू हो गई जो जल्द ही मारपीट में बदल गई। डीसीपी ने बताया कि गुस्से में आकर राजेश ने एक बड़ा पत्थर उठाया और सनी पर घातक प्रहार कर दिया, जिससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई। गौतम ने बताया कि राजेश के खिलाफ विवेक विहार पुलिस थाने में भारतीय न्याय संहिता की धारा 103(1) के तहत प्राथमिकी दर्ज की गई है।

नाले में गिरने से छठी कक्षा के छात्र की मौत

नई दिल्ली। बाहरी दिल्ली के राजेंद्र पार्क एक्सटेंशन इलाके में शुक्रवार को खुले नाले में गिरने से 13 साल के एक लड़के की मौत हो गई। घटना के संबंध में नांगलोई पुलिस को दोपहर पौने चार बजे जानकारी मिली थी। उन्होंने बताया कि पीड़ित की पहचान विकास के रूप में हुई है, जो छठी कक्षा का छात्र था। वह चौड़े नाले के किनारे टहलते समय पैर फिसलने से वह पानी में गिर गया। पुलिस अधिकारी ने बताया, उसे बचाने के प्रयास में, स्थानीय निवासी अंजू ने आसपास के अन्य लोगों के साथ मिलकर विकास को पकड़ने के लिए एक लकड़ी की छड़ी बढ़ाई। लेकिन वह उसे पकड़ नहीं पाया और वह डूब गया। दमकल कर्मियों को भी मौके पर बुलाया गया और तलाशी अभियान शुरू किया। काफी प्रयास के बाद विकास को ढूंढ निकाला गया लेकिन तब तक उसकी मौत हो चुकी थी। मौके पर पहुंचे लड़के के पिताने कहा, मृत्यु का कारण जानने के लिए उनके शव को पोस्टमार्टम के लिए सुरक्षित रख लिया गया है।

संक्षिप्त समाचार

महिलाओं को सिखाएं वित्तीय स्वतंत्रता : स्मृति ईरानी

राजधानी में एक कार्यक्रम को संबोधित करतीं पूर्व केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी।

नई दिल्ली। पूर्व केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी ने शुक्रवार को राजधानी के अंबेडकर इंटरनेशनल सेंटर में बियांड बैरियर्स 2024 के दूसरे संस्करण का उद्घाटन किया। इस अवसर पर स्मृति ईरानी ने कहा, महिलाओं में एक-दूसरे को आगे बढ़ाने की शक्ति होती है। हमें युवतियों को आत्म-देखभाल की कद्र करना, अपनी स्वतंत्रता और भलाई में निवेश करना सिखाना होगा। उन्होंने कहा कि वित्तीय स्वतंत्रता और व्यक्तिगत नहीं बल्कि महिलाओं के स्थिरता और सुरक्षा के तरीकों के रूप में देखा जाना चाहिए। इस अवसर पर यूक्के की संस्थापक डॉ. सेंथामराई गोकुलाकृष्णन, फेडरल बैंक की कार्यकारी निदेशक शालिनी वारियर आदि लोग मौजूद थे।

स्वामी दयानन्द अस्पताल से केरोमीटर मशीन चोरी

नई दिल्ली। पूर्वी दिल्ली के शाहदरा स्थित स्वामी दयानन्द हॉस्पिटल में मेडिकल रिप्रेजेंटेटिव बनकर आया एक शख्स केरोमीटर नामक मशीन पर हाथ साफ कर चलता बना। चोरी की पूरी वारदात सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गयी है। अस्पताल प्रशासन ने घटना की शिकायत पुलिस से की है। पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार, स्वामी दयानद अस्पताल से केरोमीटर नामक मशीन की चोरी हुई है यह मशीन आंख की जांच करने के काम आती है इस मशीन की कीमत लाखों है। गत बुधवार को जब आई ओपीडी खत्म होने के बाद सभी डॉक्टर सर्जरी करने के लिए ऑपरेशन थियेटर में चले गए थे तब उस चोर ने टेबल पर रखी मशीन को अपने थैले में डाला और वहां से फरार हो गया।

सड़क पर घायल पड़ी मिली महिला

नई दिल्ली। पश्चिमी दिल्ली के कीर्ति नगर इलाके में शुक्रवार तड़के एक अज्ञात महिला सड़क पर घायल अवस्था में पड़ी मिली। उसे तुरंत नजदीकी अस्पताल ले जाया गया। आस-पास के घरों में भी पूछताछ की गई, लेकिन किसी ने उसे पहचाना नहीं और न ही किसी ने उसे पहले आस-पास देखा था। घायल महिला की पहचान नहीं हो पाई है। पुलिस के अनुसार, बृहस्पतिवार देर रात सवा एक बजे सूचना मिली थी कि एक महिला खून से लथपथ घायल अवस्था में गली में पड़ी हुई है।

यमुना के वासुदेव घाट पर 3.5 लाख दीपों संग मनेगा दीपोत्सव

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

प्रतीकात्मक फोटो।

● 13 नवंबर को घाट होगा जगमग, रोशनी और भक्ति का दिखेगा अद्भुत संगम, कार्यक्रम में भव्य राम दरबार का होगा मंचन, ड्रोन और लेजर शो की होगी मनमोहक प्रस्तुति

कश्मीरी गेट स्थित यमुना नदी के किनारे वासुदेव घाट पर 13 नवंबर को अयोध्या की तर्ज पर भव्य दीपोत्सव का आयोजन किया जाएगा। दिल्ली विकास प्राधिकरण द्वारा आयोजत इस कार्यक्रम में 3,50,000 से अधिक दीयों से जगमग होगा घाट। साथ ही रोशनी और भक्ति का दिखेगा अद्भुत संगम। इसके अलावा समारोह में ड्रोन और लेजर शो की भी होगी मनमोहक प्रस्तुति। यह आयोजन देव दीपावली, गुरु पर्व और भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती के पूर्व हो रहा है। इस कार्यक्रम में उपराज्यपाल विनय कुमार सक्सेना भी शामिल होंगे और बनारस की गंगा आरती से प्रेरित होकर यमुना आरती भी करेंगे। यह कार्यक्रम कश्मीरी गेट आईएसबीटी के पास पुनर्विकसित वासुदेव घाट पर मनाया जाएगा।

उपराज्यपाल कार्यालय के एक अधिकारी ने बताया कि आयोजन में साढ़े तीन लाख से अधिक दिये जलाए जाएंगे, जिसमें विभिन्न क्षेत्रों से आए रहवासी, विद्यार्थी और कलाकार भाग लेंगे। साथ ही घाट पर स्थित बारादरी में भव्य राम दरबार का मंचन किया जाएगा। उपराज्यपाल द्वारा मार्च 2024 में उद्घाटन किए जाने के बाद वासुदेव घाट, उनकी यमुना और नदी के बाढ़ क्षेत्र के पुनरुद्धार के प्रति प्रतिबद्धता का प्रतीक है, जिसका मकसद शहर के लोगों को नदी के समीप लाना और उन्हें नदी की सफाई में भागीदार बनाना है। दिल्ली दीपोत्सव आध्यात्मिकता और पर्यावरणीय स्थिरता के संगम को प्रदर्शित करेगा। वासुदेव घाट भारत की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर को प्रदर्शित करता है, जिसमें देश के विभिन्न राज्यों से लाई गई मूर्तियां और कलाकृतियां शामिल हैं।

इस वर्ष की शुरुआत से घाट पर आयोजित होने वाली भव्य यमुना आरती, जो सप्ताह में दो बार होती है, अब एक आकर्षक ड्रोन शो के साथ और भी भव्य बन जाएगी, जो आध्यात्मिक वातावरण को और भी दिव्य बनाएगी। रोशनी, साउंड और गति के इस अद्भुत तालमेल से यह आयोजन सभी आगंतुकों के लिए एक यादगार क्षण होगा।

वासुदेव घाट में सुसज्जित उद्यान, कच्चे पैदल मार्ग आदि स्थान विकसित किए गए हैं, जिससे यह एक आदर्श सार्वजनिक हरित क्षेत्र के रूप में स्थापित हुआ है। यह घाट उपराज्यपाल के मार्गदर्शन में डीडीए द्वारा शहरभर में विकसित किए जा रहे अन्य खुले सार्वजनिक स्थलों के समान तैयार किया गया है, जो न केवल पर्यावरण सुंदरता को बढ़ाता है बल्कि लोगों को एक स्वच्छ और स्वस्थ जीवन जीने की दिशा में भी प्रेरित करता है। इससे पहले 22 जनवरी 2024 को अयोध्या में राम मंदिर में भगवान राम की प्राण प्रतिष्ठा के दिन यहां राम मंदिर की प्रतिमूर्ति बनाई गई थी।

उगते सूर्य को अर्घ्य देने के साथ छठ पर्व संपन्न

गुरुग्राम में छठ पर्व पर उगले सूर्य को अर्घ्य देने के लिए उमड़ी श्रद्धालुओं की भीड़।

- घाटों पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी हुआ आयोजन

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

पूर्वांचल का 4 दिवसीय छठ महापर्व का शुक्रवार को व्रतियों द्वारा उगते सूर्य को अर्घ्य देने के साथ संपन्न हो गया। सुबह से ही हजारों की संख्या में महिला पुरुष व्रती घाटों व तालाबों पर सूर्य देव को अर्घ्य देने के लिए जुटने शुरु हो गए थे। महापर्व का मुख्य आयोजन शीतला माता मंदिर की पार्किंग सहित अन्य कई स्थानों पर किया गया था।

बड़ी संख्या में व्रतियों ने उगते सूर्य को सरोवर में खड़े होकर अर्घ्य देकर पूजा-अर्चना करते हुए अपने परिवार की सुख-समृद्धि की कामना भी की। बीती रात से ही आयोजन स्थलों पर समुदाय के लोगों का तांता लगा रहा। सांस्कृतिक कार्यक्रम भी होते रहे।

सुबह के आयोजन में बढ़-चढकर भाग ले सकें। सभी आयोजन स्थलों पर विभिन्न सामाजिक संस्थाओं, पाटलिपुत्र सांस्कृतिक चेतना समिति, छठ पूजा समिति, डा. राजेंद्र प्रसाद फाउण्डेशन के सदस्य व पदाधिकारी संजय कुमार, संत कुमार, बीएन लाल, प्रधान छोटेलाल अपनी टीम के साथ पूरी व्यवस्था में जुटे दिखाई दिए। सभी का यही प्रयास रहा कि पूजा अर्चना में किसी व्रती को किसी प्रकार की परेशानी का सामना न करना पड़े।

इन स्थानों पर की व्रतियों ने पूजा-अर्चना

छठ पूजा के लिए सेक्टर-41, सेक्टर-4, रेलवे स्टेशन रोड, पंजीरी प्लांट, सुखराली एंक्लेव, सैक्टर 45, डूंडाहेड़ा, सूरत नगर, चकरपुर, सैक्टर 40, डूण्डाहेड़ा गांव, कन्हई गांव, नाहरपुर रुपा, सुशांत लोक फेस 3, सेक्टर-10ए, टेलीफोन कालोनी, कादीपुर गांव, सेक्टर-15 पार्ट-2, गढ़ी हरसरु, ओम विहार, न्यू पालम विहार, मानेसर, मारुति कुंज सहित जिले के सोहना, भौंडसी, पटौदी, फर्रुखनगर क्षेत्र में भी अस्थायी तालाब बनाए गए थे। इन स्थानों पर भी बड़ी संख्या में पूर्वांचल के लोगों ने सूर्य देव की पूजा-अर्चना कर उन्हें अर्घ्य देकर पर्व का समापन किया। इस महापर्व पर राजनैतिक दलों व सामाजिक संगठनों के पदाधिकारियों ने भी पूर्वांचल के लोगों शुभकामनाएं भी दी। इन आयोजनों में बड़ी संख्या में पूर्वांचल समाज के लोग शामिल हुए। कलाकारों ने कार्यक्रमों में प्रस्तुतियां देकर पूर्वांचल संस्कृति से रुबरु कराया और वाहवाही लूटी। इस प्रकार के कार्यक्रम देर रात तक चलते रहे।

छठ पूजा का भारतीय संस्कृति में विशेष महत्व है: उमेश भाटी

पायनियर समाचार सेवा। फरीदाबाद

शुक्रवार को उदीयमान सूर्य को अर्घ्य देने के साथ ही लोक आस्था का चार दिवसीय महापर्व छठ संपन्न हो गया।

बीजेपी के वरिष्ठ नेता ठाकुर उमेश भाटी ने भगवान सूर्य की उपासना एवं छठ पूजा की सभी लोगों को हार्दिक बधाई देते हुए तिगांव विधानसभा में आयोजित विभिन्न छठ घाटों पर जाकर पूजा में शामिल हुए। उमेश भाटी ने बसंत पुर घाट, विष्णु एन्क्लेव घाट, अशोका एन्क्लेव घाट पर जाकर छठ पूजा में शामिल हुए, बसंत पुर घाट पहुंचने पर छठ पूजा समिति की ओर से उनका स्वागत किया गया। अपने संबोधन में बीजेपी नेता ने कहा कि छठ पूजा का भारतीय संस्कृति में विशेष महत्व है। छठी मैया की कृपा सभी पर अनवरत बरसती रहे, सबके जीवन में सुख-शांति और समृद्धि का वास हो, यही कामना करते है। उन्होंने एक अन्य घाट पर सुबह के समय उगते सूरज को अर्घ्य देने पहुंची माताओं बहनों के सम्मान में कहा कि वह नमन करते है अपनी माताओं बहनों को जो 36 घंटे बिना पानी और अन्न के रहती हैं।

यह पर्व माताओं द्वारा संतानों की दीर्घायु और सुखमय जीवन के लिए निर्जला व्रत रखने की परंपरा को दर्शाता है और समर्पण का प्रतीक है, जिसमें डूबते और उगते सूर्य को अर्घ्य देकर पूजा की जाती है। इस मौके पर गगन सिसोदिया, विनोद अवाना, ब्रिज किशोर ओझा, एके सिंह, राजेश सिंह, प्रशांत उपाध्याय, पीयूष, संजय राणा, साहू मौजूद रहे।

को-आपरेटिव सोसायटीज से जुड़कर गांव होंगे खुशहाल: हितेश मीणा

- कृषि, दुग्ध उत्पादन तथा मत्स्य पालन के क्षेत्र में बनाई जाएंगी सहकारी समितियां
- केंद्र सरकार ने शुरू किया सहकार से समृद्धि कार्यक्रम

अधिकारियों के साथ बैठक करते एडीसी हितेश कुमार मीणा।

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

नाबार्ड द्वारा रोजगार के नए अवसर पैदा करने के लिए नई बहुउद्देशीय प्राथमिक कृषि ऋण समितियां, प्राथमिक डेयरी सहकारी समितियां और प्राथमिक सहकारी मत्स्य समितियां बनाई जाएंगी। एडीसी हितेश कुमार मीणा का कहना है कि गांवों को खुशहाल व संपन्न बनाने के लिए केंद्र सरकार ने सहकारिता से समृद्धि की ओर कार्यक्रम शुरू किया है।

शुक्रवार को विकास सदन में नाबार्ड की संयुक्त कार्य समिति की आयोजित बैठक में एडीसी हितेश कुमार मीणा ने नाबार्ड, जिला दुग्ध संघ और जिला मत्स्य महासंघ को भारत सरकार की सहकार-से समृद्धि योजना के तहत जिला में नई बहुउद्देशीय समितियों के गठन की संभावना तलाश करने की सलाह दी। उन्होंने जिला में काम कर रही डेयरी व कृषि क्षेत्र की एजेंसियों को अहम सुझाव दिए। उन्होंने कहा कि ग्रामीणों को अधिक से अधिक संख्या में सहरकारी समितियों के साथ जोडने का प्रयास करें। जिससे कि उन्हें संस्थागत लाभ मिल सकें। ग्रामीणों को बताएं कि एक को-आपरेटिव सोसायटी से जुडने पर सामूहिक रूप से लोगों की आजीविका में बढ़ोतरी होती है। एडीसी ने बताया कि कुछ लोगों को यह भय रहता है कि वे सोसायटी से जुड़कर कहीं नुकसान में ना चले जाएं। इसलिए गांव-गांव में लोगों को सहकारी समितियों की कार्यप्रणाली से अवगत करवाया जाना चाहिए। जिससे कि उनकी सोसायटियों में सक्रिय भागेदारी हो और कृषि उत्पाद, दूध उत्पादन तथा मछली पालन कर वे अपनी आमदनी में वृद्धि कर सकें। उन्होंने जिन गांवों में अभी कोई को-आपरेटिव सोसायटी नहीं है या फिर सोसायटी है तो वह निष्क्रिय है, वहां सर्वप्रथम नई सोसायटियां बना कर ग्रामवासियों को स्वरोजगार प्रदान करें। गुरूग्राम जिला में निष्क्रिय सोसाइटियों के परिसमापन की प्रक्रिया शुरू करने की भी एडीसी ने सलाह दी।

नाबार्ड के जिला विकास प्रबंधक विनय त्रिपाठी ने बताया कि इस समय जिला में 12 पैक्स कमेटियां और दुग्ध उत्पादन की 214 सहाकरी समितियां काम कर रही हैं।

गौशाला के पास कचरा कलेक्शन प्वाइंट की बुरी स्थिति पर निगमायुक्त खफा

- निगमायुक्त अशोक कुमार गर्ग ने किया कामधेनू गौशाला का दौरा

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

नगर निगम आयुक्त अशोक कुमार गर्ग ने कार्टरपुरी स्थित कामधेनु गौशाला का शुक्रवार को दौरा किया। गौशाला के पास बने सेकेंडरी कचरा कलेक्शन प्वाइंट का निरीक्षण करने के दौरान निगमायुक्त ने अधिकारियों को सफाई व्यवस्था बेहतर करने के निर्देश दिए।

गौशाला का दौरा करने के दौरान अधिकारियों से बात करते निगमायुक्त अशोक कुमार।

निगमायुक्त ने गौशाला संचालकों के साथ गौशाला का अवलोकन किया तथा गोवंश को अपने हाथों से चारा खिलाकर पुण्य लाभ लिया। उन्होंने गौशाला संचालन के बारे में भी विस्तृत जानकारी ली। इसके साथ ही उन्होंने मौके पर उपस्थित अधिकारियों को निर्देश दिए कि गौशाला की ओर आने वाली सड़क की प्रतिदिन सफाई सुनिश्चित की जाए।

गौशाला के आसपास के क्षेत्र को स्वच्छ बनाने की दिशा में नियमित कार्य करें। उन्होंने गौशाला के पास बने सेकेंडरी कचरा कलेक्शन प्वाइंट की स्थिति को देखकर असंतुष्टि जाहिर की। उन्होंने मौके पर ही अधिकारियों से कहा कि युद्ध स्तर पर कार्य करते हुए जल्द से जल्द बैकलॉग कचरे को खत्म करें। आगे से यह सुनिश्चित करें कि प्रतिदिन आने वाला कचरा उसी दिन ही उठाकर बंधवाड़ी पहुंचाया जाए।

इस मौके पर उनके साथ अतिरिक्त निगमायुक्त डा. सुभिता ढाका, संयुक्त आयुक्त अखिलेश कुमार यादव, सीएमओ डा. आशीष सिंगला, कार्यकारी अभियंता निजेश कुमार व वरिष्ठ सफाई निरीक्षक हरीश मेहता मौजूद थे।

साइबर ठगी की 2016 वारदातों में 7.46 करोड़ की ठगी की भंडाफोड़

गुरुग्राम। पुलिस ने साइबर ठगी की पूरे भारत में 7 करोड़ 46 लाख रुपयों की ठगी करने के संबंध में 4 आरोपियों को काबू किया है। गिरफ्तारी के बाद पूछताछ से ठगी की 2016 शिकायतों का खुलासा हुआ है।

प्रियांशु दिवान सहायक पुलिस आयुक्त साइबर अपराध के नेतृत्व में साईबर अपराध थानों की पुलिस टीमों द्वारा 4 साईबर ठगों को गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की थी। आरोपी रामौतार मीणा व कनिष्क विजय को पुलिस थाना साईबर अपराध पश्चिम में जांच अधिकारी एसआई रवि शंकर द्वारा काबू किया गया। जगदीश प्रसाद व सुरेश को मुख्य सिपाही भगत सिंह ने पुलिस के साथ मिलकर गिरफ्तार किया। आरोपियों से बरामद किए 4 मोबाईल फोन्स व 4 सिम कार्ड्स का इंडियन साईबर क्राईम कोर्डिनेशन सेंटर से जांच/डाटा के अवलोकन कराने पर पता चला कि आरोपियों के खिलाफ देशभर में लगभग 7 करोड़ 46 लाख रुपयों की ठगी करने के संबंध में 2016 शिकायतें और 66 केस दर्ज हैं। इन अभियोगों में से 4 केस हरियाणा में हैं। जिनमें से थाना साईबर अपराध पश्चिम गुरुग्राम में 2 केस हैं। जांच में पता चला कि आरोपी इन्वेस्टमेंट बेस्ड फ्रॉड व टास्क बेस्ट फ्रॉड से धोखाधड़ी की वारदातों को अंजाम देकर ठगी करते थे।

केवल पत्र भेजकर एक-दूसरे पर जिम्मेदारी ना डालें अधिकारी: गर्ग

गुरुग्राम। नगर निगम के आयुक्त अशोक कुमार गर्ग ने अपने अधीनस्थ अधिकारियों को काम में गंभीरता, संवेदनशीलता लाने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा कि किसी भी काम को लेकर केवल पत्र व्यवहार ही काफी नहीं है। पत्र भेजकर एक-दूसरे पर जिम्मेदारी डालने की बजाय टेलीफोनिक या मौखिक तौर भी एक-दूसरे के संज्ञान में मामला लेकर आएं, ताकि काम जल्द पूरे हों। निगमायुक्त ने यह बात शक्रवार को अधिकारियों के साथ आयोजित बैठक में कही। वे समाधान शिविर में प्रतिदिन आने वाली शिकायतों की समीक्षा कर रहे थे। उन्होंने कहा कि नगर निगम द्वारा किए जा रहे कार्यों का प्रभाव अधिक से अधिक नागरिकों पर पड़ता है।

अंडरपास निर्माण शुरू होने से जनता खुश

- मौजिज लोगों ने केंद्रीय मंत्री कृष्णपाल गुर्जर का जताया आभार

पायनियर समाचार सेवा। फरीदाबाद

दिल्ली आगरा हाईवे पर देवली मोड़ पुल का निर्माण कार्य शुरू कराने पर इलाके के मौजिज लोगों ने केंद्रीय राज्य मंत्री कृष्णपाल गुर्जर से मुलाकात की तथा इस पुल को मंजूरी दिलाने व निर्माण कार्य शुरू कराए जाने पर उनका धन्यवाद किया।

एनएच 19 पर बघौला में इस अंडरपास के निर्माण को लेकर लंबे समय से मांग चली रही थी। यहां पहले से निर्माणाधीन पुल की आधारशिला रखते वक्त केंद्रीय मंत्री ने लोगों का भरोसा दिलाया था कि इस अंडरपास को हर हाल में बनाया जाएगा। मोहना में कट के बाद अब इस अंडरपास को भी मंजूरी मिल गई है। इसके साथ ही यहां अंडरपास का निर्माण कार्य शुरू कर दिया गया है। इससे इलाके के लोगों में खुशी की लहर है।

देवली मोड़ पर बनने वाले इस पुल के निर्माण से इलाके के 50 से अधिक गांवों के अलावा उद्योगों को भी फायदा होगा। आभार व्यक्त करने वालों में मांदकौल के सरपंच प्रतिनिधि ललित कौशिक एडवोकेट, धर्मवीर दादा, गिरधारी लाल शर्मा, सूरजभान बाबा, जगदीश मास्टर, विजयराम पूर्व सरपंच देवली, डालचंद पूर्व सरपंच ततारपुर, कविंद्र सरपंच ककडीपुर, कुमरपाल सरपंच प्रतिनिधि मीरापुर, सत्यदेव जवां, शंकर फौजी देवली, विकास पंच, योगेन्द्र पंच, युगदत्त देवली व क्षेत्र के मौजिज लोग मौजूद रहे।

भाजपा की नीतियों को अंतिम व्यक्ति तक ले जाने की अपील

- सदस्यता अभियान को गति देने के लिए राज्य मंत्री नागर ने की मंडल अध्यक्षों के साथ मीटिंग

पायनियर समाचार सेवा। फरीदाबाद

प्रदेश के खाद्य एवं आपूर्ति मंत्री राजेश नागर ने शुक्रवार को अपने निवास पर भाजपा के तीन दिन तक चलने वाले विशेष सदस्यता अभियान को गति देने के लिए तिगांव विधानसभा क्षेत्र के सभी भाजपा मंडल अध्यक्षों के साथ बैठक की और उन्हें अंतिम व्यक्ति तक पार्टी की नीतियों को ले जाने की अपील की।

ग्रेटर फरीदाबाद स्थित अपने निवास पर आयोजित मीटिंग में राज्य मंत्री राजेश नागर ने कार्यकर्ताओं को ज्यादा से ज्यादा लोगों को पार्टी से जोड़ने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि विकसित भारत को लेकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के हाथों को मजबूत करना है। प्रत्येक बूथ पर सदस्यता अभियान में तेजी लानी होगी, ताकि अधिक से अधिक सदस्य बने और संगठन मजबूत हो। उन्होंने कार्यकर्ताओं को एकजुट होकर संगठन को मजबूती प्रदान करने की अपील की और कहा कि आप घर-घर जाकर सदस्य बनाये। पार्टी की नीतियों को जन जन तक पहुंचाएं। अभियान की प्रगति को लेकर समीक्षा की गई। शत प्रतिशत लक्ष्य हासिल करने का आग्रह करते हुए मंत्री ने कहा कि जिले भर में ढाई लाख नए सदस्य बनाए जाएंगे।

इस मौके पर हरको बैंक के चेयरमैन हुकम सिंह भाटी, प्रदेश प्रवक्ता बिजेंद्र नेहरा, सराय मंडल अध्यक्ष वीरेंद्र यादव, सेहतपुर मंडल अध्यक्ष विवेक मिश्रा, तिगांव मंडल अध्यक्ष गिर्राज त्यागी, खेडी मंडल अध्यक्ष अमित भारद्वाज, जिला सचिव लाल मिश्रा, जिला उपाध्यक्ष भारती भाकुनी, एडवोकेट विक्रम अरूआ, कृष्ण शर्मा, मनीष द्विवेदी, कालू पहलवान, मुकेश झा, शीशराम अवाना, लोकेश बैसला, सुमंत चंदेल, सुरेंद्र बिधूड़ी, राजेश सरपंच, उत्कर्ष गर्ग, सहीराम, मुकेश कुमार, कर्मवीर खटाना, अजब चंदीला, जगबीर कसाना, राहुल यादव, सतीश, रमन बोहरा, नेपाल भाटी, हरीश गर्ग, राधेश्याम, देबू अग्रवाल, अजीत भाटी, राजेंद्र तालान, जगवीर तंवर, वासुदेव भारद्वाज, सुधीर मेहता, अशोक सरपंच, सतवीर सरपंच, प्रतिभा तिवारी, रामवीर, दीपक चोपड़ा, गौरव, वीरेंद्र, दिनेश राजपूत, रेशम और करण बघेल आदि मौजूद थे।

संक्षिप्त समाचार

समाधान शिविर की अध्यक्षता करते निगम के जॉइंट कमिश्नर गौरव अंतिल।

समाधान शिविरों का फायदा उठाएं नागरिक: डीसी

फरीदाबाद। नागरिकों की समस्याओं के समाधान के लिए आयोजित किए जा रहे समाधान शिविर समस्याओं के निदान में कारगर साबित हो रहे हैं। नगर निगम के सभागार में आयोजित समाधान शिविर में निगम के जॉइंट कमिश्नर गौरव अंतिल ने कहा है कि नागरिकों की समस्याओं के समाधान के लिए शहरी स्थानीय निकाय द्वारा प्रदेश सरकार के निर्देशानुसार जिला मुख्यालय व उपमंडल स्तर पर शहरी स्थानीय निकाय के कार्यालयों में समाधान शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। अंतिल ने कहा कि जिले में सुबह 9 से 11 बजे तक समाधान शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। अगर किसी नागरिक को सरकार की योजनाओं का लाभ लेने में व अन्य कोई समस्याएं पेश आ रही हैं तो वे समाधान शिविरों में अपनी शिकायतों का त्वरित समाधान करवा सकते हैं। समाधान शिविर में जॉइंट कमिश्नर जितेंद्र गर्ग, एमसीएफ के संयुक्त आयुक्त गजेंद्र सिंह के अलावा नगर निगम कार्यालय के संबंधित अधिकारी व कर्मचारी मौजूद रहे।

52 हजार वाहनों पर 4.5 करोड़ रुपये का जुर्माना

गुरुग्राम। लेन ड्राइविंग के नियमों की अवहेलना करने वाले 52 हजार वाहन चालकों पर गुरुग्राम पुलिस ने प्रहार किया है। इन वाहनों के 4.5 करोड़ रुपये के चालान काटे हैं। ये चालान एक जनवरी 2024 से 31 अक्टूबर तक काटे गए। लेन ड्राइविंग सुनिश्चित करने के लिए गलत लेन में ड्राइविंग करने वाले वाहन चालकों के खिलाफ स्पेशल अभियान चलाया गया। इस स्पेशल कैंपेन के तहत प्रभावी कार्रवाई करते हुए गुरुग्राम पुलिस द्वारा सही लाईन में ड्राइविंग नहीं करने वाले वाहन चालकों के खिलाफ ड्रोन की सहायता से मॉनिटरिंग की गई। इस दौरान गुरुग्राम पुलिस टीमों द्वारा लेन ड्राईविंग की अवहेलना करने वाले 52 हजार 142 वाहन चालकों के चालान किए। इन पर 4 करोड़ 53 लाख 63 हजार 800 रुपए जुर्माना लगाया गया। पुलिस आयुक्त का कहना है कि गुरुग्राम पुलिस का उद्देश्य यातायात का संचालन व्यवस्थित व सुगम बनाकर गुरुग्राम की सड़कों पर वाहनों का संचालन सुरक्षित करना है। सड़क हादसों का एक मुख्य कारण गलत लेन में वाहन चलाना तथा अचानक लेन बदलना भी हैं, जिसमें स्वयं तथा दूसरों की जान/माल को क्षति पहुंचती है। इस तरह की दुर्घटनाएं ना हो इसके लिए गुरुग्राम पुलिस द्वारा नियमित रूप से लोगों को विभिन्न माध्यमों से तरह समय-समय पर विशेष जागरुकता अभियान चलकर भी लोगों को यातायात नियमों की पालना करने के लिए जागरूक किया जाता है।

फरीदाबाद के लोगों को जल्द मिलेगी जाम से मुक्ति: डीसी

फरीदाबाद। उपायुक्त विक्रम सिंह ने बताया कि शहरवासियों को जल्द ही जाम से मुक्ति मिलेगी। दिल्ली बॉर्डर से केली बाईपास तक दिल्ली-मुंबई-वडोदरा लिंक एक्सप्रेस वे का काम लगभग पूरा हो चूका है और इसके लिए एनएचएआई के प्रोजेक्ट डायरेक्टर को भी कहा गया है कि ट्रायल बेसिस पर इसको जल्द ही आमजन के लिए खोला जाए ताकि पता चल सके की कही कोई कमी तो नहीं और आमजन को भी इसका लाभ मिल सकें। डीसी ने कहा कि अभी मथुरा रोड पर ट्रैफिक का काफी लोड है और बल्लभगढ़ में अनाज मंडी और रेलवे ओवरब्रिज पर भी जाम की स्थिति बन जाती है।

दो पत्ती फिल्म में हुड्डा गोत्र के लिए किए गए आपत्तिजनक संवाद मंजूर नहीं: सुरेंद्र

- फिल्म के जरिए जाट समाज की गरिमा को खराब करने का हो रहा प्रयास

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

फिल्म दो पत्ती के आपत्तिजनक संवाद से हुड्डा शब्द हटाने की मांग फिल्म निर्माताओं द्वारा ठुकरा देने के बाद जाट समाज आक्रोशित है। अब समाज 10 नवंबर को रोहतक में फिल्म निर्माता और नेटफ्लिक्स के खिलाफ कानूनी लड़ाई लडने की रणनीति बनाएगा। यह कहना है सामाजिक कार्यकर्ता सुरेंद्र सिंह का।

उन्होंने कहा कि दो पत्ती फिल्म में जाट समाज के हुड्डा गोत्र के विषय में किए गए आपत्तिजनक संवाद में हुड्डा गोत्र को निशाना बनाया गया है। फिल्म निर्माताओं और नेटफ्लिक्स ने जाट समाज को जान-बूझकर बदनाम करने की नीयत से ही फिल्म के संवाद में हुड्डा शब्द जोड़ा है।

फिल्म निर्माताओं के कृत्य से जाट समाज में काफी नाराजगी है। सुरेंद्र सिंह हुड्डा का कहना है कि फिल्म निर्माता और नेटफ्लिक्स ने फिल्म के जरिए जाट समुदाय की छवि को खराब करने का आपराधिक कृत्य किया है, जिसे किसी भी कीमत पर सहन नहीं किया जाएगा। सुरेंद्र सिंह हुड्डा ने कहा कि हमने फिल्म निर्माता और नेटफ्लिक्स को सार्वजनिक रूप से माफी मांगने और फिल्म से हुड्डा शब्द हटाने की मांग की थी, जिसे ठुकरा दिया गया है।

तक्षशिला की बालिका बास्केटबॉल टीम फाइनल में

पायनियर समाचार सेवा। फरीदाबाद

तक्षशिला कप में वॉलीबॉल के तीसरे दिन के मैच में एसपीएस इंटरनेशनल को झटका देकर सेंट जॉन्स स्कूल ने विजय प्राप्त की।

डीएवी स्कूल की टीम ने नारायणा स्कूल के खिलाड़ियों को 2-0 से हराया। मॉडर्न बीपीएस के कप्तान ईशान के कुशल प्रदर्शन के कारण टीम ने सीधे अंक बनाकर विजय हासिल की। तीसरे दिन के सेमीफाइनल में पहुंचने वाली तक्षशिला विद्यालय की टीम और बीपी सीनियर सेकेंडरी स्कूल की टीम के मुकाबले में पहले सेट का स्कोर 17-25 और दूसरे सेट का स्कोर 25-5 रहा। तक्षशिला विद्यालय की टीम ने फाइनल में अपना स्थान बनाया।

पहले मुकाबले में तक्षशिला की बालिका खिलाड़ियों ने 14-6 से डीएवी पुलिस लाइन की टीम को हराया। इसके बाद विद्या मंदिर स्कूल के युवा खिलाड़ियों ने 24-14 का स्कोर बनाकर एवीएन की टीम को हराया। इसी श्रृंखला के अगले मुकाबले में नारायणा ने मिलेनियम वर्ल्ड को 8-3 के स्कोर से हराया। तीसरे दिन के कांटेदार मुकाबले में तक्षशिला विद्यालय की बालिका टीम का मुकाबला विद्या मंदिर की टीम से हुआ। इसमें तक्षशिला की बास्केटबॉल टीम ने सेमीफाइनल जीत कर फाइनल में प्रवेश किया। सेमीफाइनल में डीएवी पुलिस लाइन और डीपीएस का जोरदार मुकाबला हुआ, जिसमें डीपीएस ने फाइनल की ओर कदम बढ़ाया। डीपीएस ग्रेटर फरीदाबाद और तक्षशिला विद्यालय की टीम के सेमी फाइनल मुकाबले में तक्षशिला विद्यालय की टीम ने तीन अंकों की बढ़त से फाइनल में प्रवेश किया।

इस अवसर पर विद्यालय के संस्थापक यशपाल शर्मा, निदेशक बीडी शर्मा, उपनिदेशक मोहित शर्मा और विद्यालय सेक्रेटरी रोहित शर्मा आदि अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

टेलीकॉम कमेटी मापदंड पूरा करने पर ही दे टावर लगाने की अनुमति: एडीसी

- अतिरिक्त उपायुक्त अखिल पिलानी ने जिला स्तरीय टेलीकॉम समिति की बैठक में अधिकारियों को दिए निर्देश

पायनियर समाचार सेवा। पलवल

अतिरिक्त उपायुक्त अखिल पिलानी ने कहा कि जिला स्तरीय टेलीकॉम समिति के अधिकारी टेलिकॉम कंपनियों को मोबाइल टावर लगाने की स्वीकृति देने को मौके पर जाकर सर्वे करते हुए टावर लगाने वाली जगह का फिजिकल वेरिफिकेशन करें। उन्होंने कहा कि टावर लगाने के लिए निर्धारित मापदंड व नियमानुसार ही कंपनियों को टावर लगाने की स्वीकृति दी जाए। उन्होंने कहा कि टावर लगाने की अनुमति प्रदान करते समय इस बात का विशेष ध्यान रखें कि उससे आमजन को किसी प्रकार की परेशानी व असुविधा न हो।

अतिरिक्त उपायुक्त शुक्रवार को लघु सचिवालय स्थित एडीसी कार्यालय में टेलीकॉम समिति की बैठक को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि जिला में मोबाइल टावर लगाने से संबंधित लंबित आवेदनों पर कार्यवाही करते हुए रिपोर्ट प्रस्तुत करें। उन्होंने कहा कि कमेटी द्वारा टावर लगवाने के लिए अनुमति प्रदान की गई है अथवा आवेदन रिजेक्ट किया है तो उसकी स्थिति पोर्टल पर अपडेट करना सुनिश्चित करें। उन्होंने निर्देश दिए कि आवेदन रिजेक्ट करने का विस्तृत कारण पोर्टल पर अपडेट करें। एडीसी ने पोर्टल पर प्राप्त हुए आवेदनों की समीक्षा करते हुए कहा कि जिन कंपनियों ने आवेदन किया हुआ है और निर्धारित दस्तावेज अपलोड नहीं किए हैं वे कंपनियां मोबाइल टावर लगाने के लिए अपने दस्तावेज अवश्य अपलोड करें।

पायनियर
नई दिल्ली, शनिवार, 9 नवंबर, 2024

'आवंटियों के लिए शुरू होगी समाधान योजना'

मुख्यमंत्री ने ली एचएसवीपी की बैठक, 15 नवंबर से छह माह तक सुलझाए जाएंगे एन्हांसमेंट के मुद्दे

- प्रदेश में 31 मार्च तक मिलेंगे ऑक्यूपेशन सर्टिफिकेट
- गिफ्ट डीड के आधार पर मिलेगी प्लाट ट्रांसफर की अनुमति

पायनियर समाचार सेवा। चंडीगढ़

हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह ने हरियाणा शहरी विकास प्राधिकरण के प्लॉट आवंटियों को एन्हांसमेंट से संबंधित मामलों के निपटान और आवंटियों को राहत देने के उद्देश्य से विवादों का समाधान योजना शुरू करने की घोषणा की है। योजना की शुरुआत गुरु नानक देव की जयंती के अवसर पर 15 नवंबर 2024 को होगी और छह माह तक योजना लागू रहेगी। इस योजना के तहत लगभग 7000 से अधिक प्लॉट आवंटियों को बड़ी राहत मिलेगी।

मुख्यमंत्री शुक्रवार को चंडीगढ़ में हरियाणा शहरी विकास प्राधिकरण की 127वीं बैठक की अध्यक्षता कर रहे थे। बैठक में कुल 65 एजेंडों को मंजूरी दी गई। नायब सिंह ने निर्देश देते हुए कहा कि प्लॉट आवंटियों को किसी भी प्रकार की परेशानी नहीं चाहिए और एन्हांसमेंट के अलावा अन्य लंबित मामलों का भी जल्द से जल्द निपटान सुनिश्चित किया जाए। बैठक में बताया गया कि पूर्व में चलाई गई इस योजना के तहत 40 हजार 762 डिफॉल्ट आवंटियों ने लाभ उठाया है और उन्हें लगभग 1560 करोड़ रुपये की राहत मिली है। अब 15 नवंबर, 2024 से एक बार फिर विवादों का समाधान योजना शुरू की जा रही है, जिसमें लगभग 7000 से अधिक आवंटियों को लाभ प्राप्त करने का अवसर मिलेगा।

मुख्यमंत्री ने हरियाणा शहरी विकास प्राधिकरण द्वारा नये सेक्टरों में विस्थापितों को प्लॉट देने के मामले में निर्देश देते हुए कहा कि विस्थापितों को प्लॉट के लिए आवेदन करने हेतु समान अवसर दिया जाए और ऐसे लंबित मामलों, जिनमें विस्थापितों को प्लॉट नहीं मिला है, उनके लिए दोबारा से विज्ञापन जारी किया जाए। अभी तक ऑक्यूपेशन सर्टिफिकेट नहीं लेने वालों को एक और अवसर दिया जाएगा ताकि वे ऑक्यूपेशन सर्टिफिकेट प्राप्त कर सकें। अभी तक ऑक्यूपेशन सर्टिफिकेट नहीं लेने वाले प्लाट आवंटी 31 मार्च, 2025 तक आवेदन कर सकते हैं। गिफ्ट डीड के आधार पर भी प्लॉट के हस्तांतरण की अनुमति दी जाएगी। प्राधिकरण के निर्देशों के अनुसार, पहले प्लॉट के हस्तांतरण की अनुमति केवल पंजीकृत बिक्री विलेख (सेल डीडी) पर ही मिलती थी।

2 लाख लोगों को मिलेंगे सौ-सौ गज के प्लॉट: सैनी

चंडीगढ़। मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि जल्द ही गांवों के अंदर दो लाख लोगों को 100-100 गज के प्लॉट वितरित किए जाएंगे। इसके साथ ही प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) के तहत इन लाभार्थियों को मकान बनाने हेतु वित्तीय सहायता भी उपलब्ध करवाई जाएगी। मुख्यमंत्री शुक्रवार की शाम चंडीगढ़ में हाउसिंग फॉर ऑल विभाग की समीक्षा बैठक की अध्यक्षता कर रहे थे। इस अवसर पर विकास एवं पंचायत मंत्री कृष्ण लाल पंवार और शहरी स्थानीय निकाय मंत्री विपुल गोयल भी उपस्थित रहे। उन्होंने कहा कि 100-100 गज के प्लॉट शहरों की तर्ज पर सभी बुनियादी सुविधाओं से सुसज्जित विकसित कॉलोनियों में दिए जाएंगे, जिनमें पक्की सड़कें, बिजली, स्वच्छ पेयजल, स्ट्रीट लाइट, सौर ऊर्जा, पार्क और ओपन ग्रीन स्पेस जैसी सभी भौतिक सुविधाएं उपलब्ध होंगी।

हरियाणा के सरकारी व निजी स्कूलों में दूसरे शनिवार को होगी छुट्टी

चंडीगढ़। हरियाणा सरकार ने आदेश जारी कर कहा है कि सभी सरकारी व निजी स्कूलों में महीने के दूसरे शनिवार को अवकाश रहेगा। सभी स्कूलों को इस संबंध में आदेशों का पालन करना होगा। यह आदेश शनिवार 9 नवंबर से मान्य होंगे। शिक्षा निदेशालय द्वारा शुक्रवार को जारी निर्देशों में कहा गया है कि इस तरह के आदेश पहले भी जारी किए गए हैं लेकिन ज्यादातर स्कूल इसका पालन नहीं कर रहे हैं। यह देखने में आ रहा है कि राजपत्रित स्थानीय अथवा अन्य घोषित छुट्टियों के दौरान कुछ स्कूल पढ़ाई के अतिरिक्त अन्य क्रियाकलापों के लिए विद्यार्थियों को स्कूल में बुलाते हैं, जो गलत है। इसलिए सभी जिला शिक्षा अधिकारियों को यह आदेश दिए गए हैं कि अवकाश के दौरान विद्यार्थियों को विद्यालय में न बुलाया जाए। यदि किसी विद्यालय द्वारा आदेशों की अवहेलना की जाती है तो उसका मामला विभागीय कार्रवाई हेतु उच्च अधिकारियों को भेज दिया जाएगा। इसको लेकर कोई भी कार्रवाई हुई तो संबंधित स्कूल के मुखिया-प्रशासन स्वयं इसके जिम्मेदार होंगे।

हरियाणा विधानसभा परिसर में सांप मिलने से मचा हड़कंप

- वन विभाग कर्मचारियों ने पकड़कर जंगल में छोड़ा
- अगले सप्ताह शुरू होगा विधानसभा का सत्र

पायनियर समाचार सेवा। चंडीगढ़

हरियाणा विधानसभा परिसर में शुक्रवार की सुबह सांप मिलने से हड़कंप मच गया। सामान्य की भांति आज सुबह जब कर्मचारी ड्यूटी पर आए तो विधानसभा में सांप देखकर उनके होश उड़ गए। कर्मचारियों ने तुरंत वरिष्ठ अधिकारियों को फोन कर इसकी सूचना दी। इसके बाद वन विभाग को सूचना दी गई।

विधानसभा में यह सांप सुरक्षा कक्ष में बैठा था। सुबह जब सफाई कर्मी रोजाना की तरह वहां आए तो उन्होंने सांप को देखा। सांप को देखते ही कर्मचारियों के हाथ पांव फूल गए। वह बाहर की ओर दौड़े और एक-एक कर कर्मचारी विधानसभा से बाहर आ गए। मौके पर वन विभाग को सूचित किया गया। वन विभाग ने स्नेक एक्सपर्ट को बुलाया। उसने औजारों की मदद से सांप पकड़ा। सांप करीब 3 फुट लंबा था। विधानसभा के जिस हिस्से से सांप पकड़ा गया है, वहां स्टेशनरी का सामान रखा जाता है।

आगामी 13 नवंबर से विधानसभा सत्र शुरू हो रहा है। विधानसभा सत्र के दौरान मुख्यमंत्री समेत पूरी कैबिनेट और दूसरी पार्टियों के विधायक मौजूद रहेंगे। ऐसे में सांप मिलने से उनकी सुरक्षा पर भी सवाल उठ रहे हैं। वन विभाग ने स्नेक एक्सपर्ट को मौके पर भेजा और सांप को पकड़ लिया। इसके बाद कर्मचारियों ने राहत की सांस ली। सांप खतरनाक प्रजाति का रसेल वाइपर है। फिलहाल सांप को पकड़कर जंगल में छोड़ दिया गया। करीब 4 महीने पहले चंडीगढ़ में हरियाणा सचिवालय में सांप मिलने से हड़कंप मच गया था। सांप सचिवालय की चौथी मंजिल तक पहुंच गया था। जहां मुख्यमंत्री तथा मुख्य सचिव का कार्यालय है।

बिना मंजूरी के केरल में प्रचार के लिए जा रहे हरियाणा के कांग्रेस नेता

- हरियाणा पार्टी अध्यक्ष ने लगाई रोक, कहा- पार्टी तय करेगी कहां जाकर करें प्रचार

पायनियर समाचार सेवा। चंडीगढ़

हरियाणा के कांग्रेस नेता प्रदेश के नेतृत्व को बाईपास करके चुनाव प्रचार करके केरल पहुंच रहे हैं। कांग्रेस नेताओं की इस कार्रवाई पर आपत्ति जताते हुए प्रदेश अध्यक्ष ने बिना स्वीकृति के केरल जाने पर रोक लगा दी है।

केरल की वायनाड सीट से इस समय कांग्रेस नेता प्रियंका गांधी चुनाव लड़ रही हैं। हरियाणा कांग्रेस के कई नेता प्रचार के लिए वायनाड में चुनाव प्रचार के लिए जा रहे हैं। उक्त नेताओं द्वारा प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष व अन्य नेताओं को भी विश्वास में नहीं लिया जा रहा है। महिला पहलवान एवं विधायक विनेश फोगाट और लोकसभा सांसद दीपेंद्र हुड्डा वायनाड पहुंच गए हैं। जहां वह पार्टी की राष्ट्रीय नेता प्रियंका गांधी के लिए वोट मांग रहे हैं। इस बीच हरियाणा कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष उदयभान ने एक पत्र जारी करके कहा है कि वायनाड में हो रहे उपचुनाव में हरियाणा से कार्यकर्ता अपने स्तर पर प्रचार करने के लिए न जाएं।

जिन कार्यकर्ताओं की वायनाड में ड्यूटी लगाई जाएगी, उन्हें अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी द्वारा सूचित किया जाएगा। वायनाड का उपचुनाव राहुल गांधी के इस्तीफे की वजह से कराया जा रहा है। कांग्रेस नेता का कहना है कि कार्यकर्ताओं की संख्या और काम को लेकर रणनीति बनाई गई है, उसके आधार पर जिम्मा सौंपा जाएगा। प्रदेश अध्यक्ष को कार्यकर्ताओं से वायनाड नहीं जाने की अपील करनी पड़ी है।

सरकारी कार्यालयों पर लगेंगे बिजली के प्रीपेड मीटर

- हरियाणा में घरों की छत बनेंगी सौर ऊर्जा का विकल्प
- गर्मी में होगी 14 हजार 662 मेगावाट की मांग

पायनियर समाचार सेवा। चंडीगढ़

हरियाणा में घरेलू व कृषि उपभोक्ताओं द्वारा बिजली के प्री-पेड मीटरों का विरोध किए जाने पर केंद्र सरकार ने पहले सरकारी कार्यालयों पर प्रीपेड मीटर लगाने का फैसला लिया है। हरियाणा में भी सरकारी कार्यालयों में प्रीपेड मीटर लगेंगे, बिजली विभाग की ओर से इसकी योजना तैयार की जा रही है। शुक्रवार को केंद्रीय ऊर्जा, आवास एवं शहरी विकास मंत्री मनोहर लाल की अध्यक्षता में हरियाणा में चल रही बिजली विभाग की योजनाओं का रिव्यू किया गया। जिसमें उन्होंने यह निर्देश जारी किए।

हरियाणा में 30 लाख प्रीपेड मीटर लगाने का लक्ष्य रखा गया था, लेकिन विरोध के कारण प्रोजेक्ट अधर में ही लटका हुआ है। पंचकूला, पानीपत, करनाल, फरीदाबाद और गुरुग्राम में पायलट प्रोजेक्ट के तौर पर 10 लाख प्रीपेड मीटर लगाने का लक्ष्य था, जिसके लिए केंद्र व राज्य सरकार की ओर से राशि की भी स्वीकृति दे दी थी। केंद्रीय ऊर्जा मंत्री मनोहर लाल ने कहा कि प्री-पेड मीटरों का विरोध किया जा रहा है, ऐसे में सबसे पहले सरकारी कार्यालयों पर प्रीपेड मीटर लगाए जाएंगे। इसके बारे रियायती दरों पर कमर्शियल, औद्योगिक संस्थानों के साथ शिक्षण संस्थानों में प्रीपेड मीटर लगेंगे। इसके बाद उन उपभोक्ताओं को प्रीपेड मीटर लगाए जाएंगे, जो अग्रिम भुगतान करने में सक्षम होंगे, इसके बाद साधारण उपभोक्ताओं को प्रीपेड मीटर का लाभ पता चलेगा और वे खुद आगे आएंगे।

अंबाला और यमुनानगर में मेट्रो की मांग

केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल की अध्यक्षता में आयोजित हुई बैठक में प्रदेश में चल रहे मेट्रो प्रोजेक्टों पर चर्चा हुई। हरियाणा सरकार की ओर से केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल के समक्ष नई मेट्रो की मांग उठाई गई। इनमें अंबाला शहर से अंबाला छावनी और यमुनानगर व जगाधरी में मेट्रो प्रोजेक्ट की मांग रखी गई। नई मांग के आधार का कार्ययोजना तैयार होगी। गुरुग्राम, फरीदाबाद, बहादुरगढ़ सहित दिल्ली के साथ लगते क्षेत्रों में मेट्रो प्रोजेक्ट का काम चल रहा है। इसके साथ ही प्रधानमंत्री ई-बस सेवा योजना के तहत 450 नई बसों की शुरुआत होगी। केंद्र सरकार की ओर से करनाल और फरीदाबाद शहर का स्मार्ट सिटी प्रोजेक्ट के लिए चयन किया गया है।

हरियाणा 50 लाख लोगों को भाजपा से जोड़ने का लक्ष्य पूरा करेगा: नायब

- मुख्यमंत्री आवास से भाजपा का प्रदेश स्तरीय सदस्यता अभियान शुरू
- नायब सिंह सैनी ने बतौर सदस्य कटवाई पर्ची

पायनियर समाचार सेवा। चंडीगढ़

हरियाणा में भारतीय जनता पार्टी ने तीन दिवसीय सदस्यता अभियान की शुरुआत शुक्रवार को चंडीगढ़ स्थित मुख्यमंत्री आवास पर आयोजित कार्यक्रम में मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने प्राथमिक सदस्यता का नवीनीकरण कर अभियान का शुभारंभ किया। इस दौरान भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री दुष्यंत कुमार गौतम, संगठन मंत्री फणीन्द्र नाथ शर्मा, सदस्यता अभियान के संयोजक वेदपाल एडवोकेट, प्रदेश महामंत्री सुरेंद्र पूनिया के अलावा अन्य वरिष्ठ नेता मौजूद रहे। सदस्यता अभियान को लेकर बैठक की गई जिसमें ज्यादा से ज्यादा लोगों को जोड़ने की योजना पर चर्चा की गई।

मुख्यमंत्री और राष्ट्रीय महामंत्री ने सदस्यता अभियान को लेकर उपस्थित कार्यकर्ताओं व नेताओं को जरूरी दिशा निर्देश दिए। मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने भाजपा की प्राथमिक सदस्यता लेने के बाद आम जनता से भी भाजपा से जुड़ने की अपील की।

मुख्यमंत्री ने कहा कि हर छह वर्ष के बाद भाजपा का सदस्यता अभियान चलता है और सभी सदस्य अपनी सदस्यता का नवीनीकरण कराते हैं। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को सदस्य बनाकर अभियान की शुरुआत की थी। सीएम सैनी ने कहा कि सदस्यता अभियान पूरे देश में चल रहा है और अब तक 10 करोड़ से भी अधिक सदस्य बन चुके हैं।

मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री दुष्यंत गौतम ने हरियाणा को 50 लाख नए सदस्य बनाने का लक्ष्य दिया है। उन्होंने कहा कि मुझे पूरा विश्वास है कि हरियाणा के लोग सदस्यता अभियान में बढ़चढ़ कर हिस्सा लेंगे और 50 लाख से अधिक लोग भाजपा से जुड़ेंगे। मुख्यमंत्री ने भाजपा के कार्यकर्ताओं और आम जन से भी अपील करते हुए कहा कि 8800 002024 नंबर पर मिस कॉल करके भाजपा के प्राथमिक सदस्य बनें।

मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि सदस्यता अभियान के शुभारंभ से पहले ही अब तक हरियाणा में 5 लाख से अधिक लोग भाजपा की सदस्यता ग्रहण कर चुके हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि हरियाणा में 50 लाख नए सदस्य जोड़ने का टारगेट मिला है। उन्होंने कहा कि मुझे विश्वास है कि जिस गति से हरियाणा में सदस्य बन रहे हैं उससे लगता है कि हरियाणा में एक करोड़ सदस्य बनाने के टारगेट को हम अचीव कर लेंगे। भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री दुष्यंत गौतम ने कहा कि भाजपा कार्यकर्ताओं की पार्टी है और कार्यकर्ता ही पार्टी की रीढ़ है। सदस्यता अभियान के प्रदेश संयोजक वेदपाल एडवोकेट ने कहा कि कार्यकर्ता दिन रात अभियान को सफल बनाने में जुटे हैं। वेदपाल एडवोकेट ने कहा कि हरियाणा में 20 हजार 629 बूथ हैं और कार्यकर्ताओं को हर बूथ पर 250 लोगों को जोड़ने का लक्ष्य दिया है। बैठक में सदस्यता अभियान के सदस्य संदीप जोशी, अशोक गुर्जर, वरूण श्योराण, गोपाल शर्मा, मीना परमार व आईटी विभाग के प्रमुख आदित्य चावला भी उपस्थित रहे।

23 जनवरी को राष्ट्रीय झंडा दिवस मनाने की मांग को पूरा करवाने का प्रयास करूंगा: जिंदल

पायनियर समाचार सेवा। कुरुक्षेत्र

फ्लैग फाउंडेशन ऑफ इंडिया के सहयोग से राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान एनआईटी में 72 फीट ऊंचा तिरंगा स्थापित किया गया। बतौर मुख्यातिथि फ्लैग फाउंडेशन ऑफ़ इंडिया के अध्यक्ष सांसद नवीन जिंदल ने इस तिरंगे का ध्वजारोहण करते हुए उद्घाटन किया। इस अवसर पर सांसद नवीन जिंदल ने कहा कि तिरंगा देश की आन बान शान है। इस तिरंगे के नीचे ना कोई राजा है ना कोई रंक है, ना कोई अमीर है ना ही गरीब है, ना कोई नौकर है ना कोई मालिक है। इसके नीचे हम सभी एक भारतीय हैं। हर व्यक्ति को राष्ट्रीय ध्वज फहराने का अधिकार दिलाने के लिए उन्हें लंबी लड़ाई लड़नी पड़ी। उन्होंने कहा कि 23 जनवरी 2004 को सर्वोच्च न्यायालय ने अपना निर्णय सुनाते हुए हर नागरिक को राष्ट्रीय ध्वज फहराने का अधिकार दिया। अब उनका प्रयास रहेगा कि 23 जनवरी को राष्ट्रीय झंडा दिवस घोषित करने की मांग उठाकर उसे केंद्र सरकार से पूरा करवाया जा सके। क्योंकि इस दिन नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती पराक्रम दिवस भी मनाया जाता है।

डेंगू की जांच को बनाए गए आइसोलेशन वार्ड: सिविल सर्जन

पायनियर समाचार सेवा। कुरुक्षेत्र

डा. सिविल सर्जन सुखबीर सिंह ने बताया कि डेंगू जो कि मादा एडीज एजिपटाई मच्छर के काटने से होता है और जो कि ज्यादातर साफ पानी में ही पनपता है। ऐसे में जिला स्वास्थ्य विभाग मलेरिया पिछले कुछ महीनों से ही आमजन को इस मच्छर से बचाने के हर संभव प्रयास कर रहा है। यदि किसी कोई भी डेंगू बुखार हो भी रहा है तो ऐसे मरीजों के लिए स्वास्थ्य विभाग ने लोकनायक जयप्रकाश नागरिक अस्पताल के साथ-साथ सभी सामुदायिक केंद्रों पर आइसोलेशन वॉर्ड भी बनाए गए है।

सिविल सर्जन डा. सुखबीर सिंह ने जिला में कार्यरत सभी सरकारी संस्थाओं के चिकित्सकों की बैठक ली। बैठक के दौरान उन्होंने सभी चिकित्सकों को दिशा-निर्देश दिए कि जिस प्रकार जिला मलेरिया विभाग शहरी क्षेत्रों में डेंगू की रोकथाम हेतु कार्य कर रही है। ग्रामीण क्षेत्रों में सरपंचों/पंचों के माध्यम से फॉगिंग करवाए व स्कूलों में बच्चों को इस विषय बारे जागरूक करें।

जिला मलेरिया अधिकारी डा. प्रदीप ने बताया कि डेंगू की रोकथाम के लिए आमजन को जागरूक करने के साथ-साथ सभी आवश्यक गतिविधियां भी करवाई जा रही है। जिला कुरुक्षेत्र में आज जोनल एनटोमोलोजिस्ट टीम ने शोरगिर बस्ती, आकाश नगर व वशिष्ठ कालोनी तीन जगहों का दौरा किया। जहां पर टीम ने मच्छरों की डेंसिटी नापने के लिये मच्छरों का संगठन किया व जल्द ही उसकी रिपोर्ट जिला मलेरिया अधिकारी के साथ साझा की जाएगी।

डेंगू की रोकथाम के लिए क्या-क्या करे

डा. प्रदीप ने बताया कि डेंगू को रोकने में आमजन भी अपनी व समाज की सुरक्षा कर सकता है। क्योंकि आमजन का इस बीमारी से फैलने वाले कारणों से परिचित होना अत्याधिक आवश्यक है। इसके लिए यदि आपके घरों के पास पानी खड़ा हो तो उसमें कोई भी चिकनाई युक्त पदार्थ/काला तेल डाल दे जिससे कि मच्छर पैदा नहीं हो सकेगा। सप्ताह में एक दिन ड्राई डे अवश्य बनाए अपने घरों के गमलों, कूलरों को व ऐसे बर्तन जिनमें पक्षियों व गायों के पीन के लिए पानी भरा रहता है उनको भी खाली करके सूखा कर प्रयोग करें। बच्चों बुजुर्गों को अवश्य ही पूरी बाजू के कपड़े पहनाएं। घरों में जाली वाले दरवाजों का प्रयोग करे, रात को सोते समय मच्छरदानी का प्रयोग करे। यदि किसी को बुखार सिरदर्द, घुटनों में दर्द के लक्षण दिखाई दे तो तुरंत नजदीकी स्वास्थ्य केन्द्र पर जाकर फ्री में मलेरिया की जांच करवाएं।

कुलपति ने की अंतर्राष्ट्रीय गीता कांफ्रेंस की वेबसाइट लांच

कुरुक्षेत्र। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सोमनाथ सचदेवा ने शुक्रवार को गीता जयंती समारोह के अवसर पर विश्वविद्यालय तथा कुरुक्षेत्र विकास बोर्ड (केडीबी) के सहयोग से 05 से 07 दिसंबर, 2024 तक श्रीमद्भगवद गीता आधारित संतुलित प्रकृति एवं शुद्ध पर्यावरण विषय पर आयोजित होने वाले 9वें अंतर्राष्ट्रीय गीता कांफ्रेंस की वेबसाइट को कुलपति व केडीबी के मानद सचिव उपेन्द्र सिंघल ने कमेटी रूम में लांच किया। इस मौके पर छात्र प्रतिभा खोज प्रतियोगिता का पोस्टर और ब्रोशर भी जारी किया गया।

सार्वजनिक सूचना

आम जनता को एतद्द्वारा सूचित किया जाता है कि श्री जगदीश शर्मा प्लॉट संख्या 128 और 128ए के हिस्से का मालिक हैं, जो खसरा नंबर 15/9 में से, कुल भूमि क्षेत्रफल 200 वर्ग गज में से क्षेत्रफल 63.64 वर्ग गज है, जो ग्राम राजापुर खुर्द, दिल्ली राज्य दिल्ली, कॉलोनी सैनिक एन्क्लेव, सेक्टर-V, मोहन गार्डन, उत्तम नगर, नई दिल्ली-110059 में स्थित है, GPA, ATS और वसीयत दिनांक 12.09.2018 के आधार पर, और श्री जगदीश शर्मा इसे इच्छुक उधारकर्ता यानी सौरव यादव को बेचने का इरादा रखते हैं, और उसी को एसएमएफजी इंडिया होम फाइनेंस कंपनी लिमिटेड द्वारा वित्तपोषित किया जाना है। यदि किसी व्यक्ति के पास उक्त संपत्ति में कोई प्रभार/हित/स्वामित्व है या किसी भी प्रकार का विवाद है, तो कृपया अधोहस्ताक्षरी को नीचे दिए गए पते पर लिखित रुप में वर्तमान से 07 दिनों के भीतर सूचित करें। राहुल राज पाठक, अधिवक्ता एसजी एसोसिएट्स (लॉ फर्म) एफएफ18, लोटस पॉन्ड प्लाजा, वैभव खंड, इंदिरापुरम, गाजियाबाद, यूपी ईमेल:sgassociatespl@gmail.com,फोन:7011172764, 01204440300

सार्वजनिक सूचना

आम जनता को सूचित किया जाता है कि श्री महेंद्र शिशोदिया और श्री कमल शिशोदिया, खसरा नंबर 26 में से 114.532 वर्ग मीटर यानी 137 वर्ग गज में निर्मित संपत्ति संख्या ए-1 पर निर्मित प्रथम तल के दाएं भाग का मालिक हैं, जो गली नंबर 5, शशि गार्डन, मयूर विहार फेज-1, गांव कोटला, इलाका शाहदरा, दिल्ली-110091 में स्थित है, जो उपहार विलेख दिनांक 19.07.2024 के आधार पर पंजीकृत है। दस्तावेज नंबर 2024/4/1/7140, श्रीमती सुशीला देवी द्वारा निष्पादित किया गया है तथा उसी संपत्ति को इच्छुक उधारकर्ता अर्थात श्रीमती कुसुम भारद्वाज को बेचा जाना है, जिसे एसएमएफजी इंडिया होम फाइनेंस कंपनी लिमिटेड द्वारा वित्तपोषित किया जाना है। यदि किसी व्यक्ति के पास उक्त संपत्ति में कोई प्रभार/हित/स्वामित्व है या किसी भी प्रकार का विवाद है, तो कृपया अधोहस्ताक्षरी को नीचे दिए गए पते पर लिखित रुप में वर्तमान से 07 दिनों के भीतर सूचित करें। राहुल राज पाठक,अधिवक्ता एसजी एसोसिएट्स (लॉ फर्म) एफएफ18, लोटस पॉन्ड प्लाजा, वैभव खंड, इंदिरापुरम, गाजियाबाद, यूपी ईमेल:sgassociatespl@gmail.com,फोन:7011172764, 01204440300

PUBLIC NOTICE

It is hereby notified for general public that my client Shri Chander Mohan Goel S/o Late Shri RD Goel and Smt. Raj Goel W/o Shri Chander Mohan Goel, has severed all her relations with her son namely Anshul Goel and his wife Divisha Aggarwal @ Divisha Goel W/o Anshul Goel and has debarred them from inheriting any moveable and immoveable properties of my client, due to their misbehavior, unbecoming act and neglecting their duties owing towards my client. If anybody deals with them shall do so at his/her own risks and my client shall not be responsible for any act of above named son and daughter-in-law in any manner whatsoever.

ALOK DEV (ADVOCATE) Off-Plot No. 255, Pocket-9, Sector-23 Rohini, Delhi-110085 Mob:-9718090890

सार्वजनिक सूचना

यह सूचना अतुल पांडे की ओर से दी जाती है कि जो मुखिया गार्डन, ग्राम इलाइचीपुर, परगना और तहसील लोनी, जिला-गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश में स्थित खसरा संख्या 150मीन का हिस्सा, 25 वर्ग गज क्षेत्रफल वाला प्लॉट श्री कपिल से खरीद रहे हैं, जिनके पास श्री गौरव डेढ़ा से, उपहार विलेख दिनांक 04.07.2023, दस्तावेज संख्या 9891, पुस्तक संख्या 1, खंड 1096, पृष्ठ 385-404, दिनांक 04.07.2023 SRO-II लोनी गाजियाबाद के आधार पर इसका स्वामित्व था। और उम्मीद हाउसिंग फाइनेंस प्राइवेट लिमिटेड से वित्तीय सहायता के लिए बंधक रखने का इरादा रखते हैं। कि श्री डेनमारिक द्वारा श्री मोहन सिंह वर्मा और श्री राम निवासी वर्मा को निष्पादित मूल बिक्री विलेख दिनांक 29.12.2020, दस्तावेज़ संख्या 12190, पुस्तक संख्या 1, खंड संख्या 2199, पृष्ठ संख्या 137-156, 29.12.2020 को, SR-लोनी गाजियाबाद खो गया है/गलत जगह पर है। बैंक/एनबीएफसी की आवश्यकताओं का अनुपालन करने के लिए, हम यह सार्वजनिक सूचना देते हैं कि यदि किसी व्यक्ति के पास उक्त संपत्ति पर किसी भी प्रकार का दावा/अधिकार/स्वामित्व/हित/बंधक बनाने में कोई आपत्ति है तो वह आज से 7 दिनों के भीतर अपनी आपत्तियों के बारे में नीचे दिए गए पते पर लिखित रुप में सूचित कर सकता है। ऐसा न करने पर यह माना जाएगा कि उक्त संपत्ति सभी प्रकार के भार, ग्रहणाधिकार आदि से मुक्त है। लुसेम लीगल एलएलपी प्लॉट नंबर 136, (बेसमेंट) उदय पार्क, नई दिल्ली-110049, संपर्क # 011-40046316

PUBLIC NOTICE

Notice is hereby given to the public at large, on behalf of our client, Mr. Jogender Singh S/o Mr. Rajender Singh R/o House No. D-1384, Boora Mohalla, Alawalpur (62), Palwal, Haryana-121102. **("Owner")**. Mr. Jogender Singh was the owner of schedule property by virtue of Sale Deed dated 29.01.2024 which was duly registered with the concerned Sub-Registrar-Palwal as Document No. 11156, in Addl. Book No.1, on 29.01.2024 and a Sale Deed dated 28.12.2005 executed by Mr. Devi Charan in favour of Mr. Kamal Kumar & Mr. Prem Chand Doc. No. 8764, Book No. 1 SRO-Palwal is stated to have been lost, an FIR Haryana Police Citizen Services bearing Application No. 132600102400705 was also lodged. (LOST SALE DEED DOCUMENTS). Public are warned not to deal with the said Document and any person receiving or dealing with the said Document would do so at their own risk and responsibility (including criminal liability) and our client shall not be liable in any manner whatsoever for any loss incurred by such person (s) on account of any such unauthorized dealing, our client will proceed to take such action including applying to concerned authorities for issue of duly Certified Copies / Certified True Copies/Duplicate Copies of the Document.

Schedule Property

(Property ID No. 3PA9NOC5) Land area measuring 66 sq. yds, part of Mustil No. 62 Killa No. 23/2(0-9), Mustil No. 75, Killa No. 2(2-0) 3/1(4-16) & Khasra No. 1969/1, (1-0), 1962(0-12) 1967(0-11), 1968(3-15) & Mustil No. 62Killa No. 21(2-6), 20/2(6-2) & Khasra No. 1963(1-1), Situated at Vaka Mauja Palwal under Nagar Parishad, known as Prakash Vihar Colony, Tehsil Palwal, District-Faridabad -121102 (Haryana)

Sachin Maheshwari & Associates (SMA) Law Offices, Sachin Maheshwari Advocate
Badarpur Border, New Delhi.
Mob. 9911380328 / Ph.: 011-69653588,

सार्वजनिक सूचना

यह सूचना अभिषेक शर्मा की ओर से दी जाती है कि जो ग्राम बिंदापुर कॉलोनी, जानकीपुरी, ब्लॉक-बी, उत्तम नगर, नई दिल्ली-110059 में स्थित खसरा संख्या 586 में से ऊपरी भूतल, सामने की ओर सामान्य छत के अधिकार के साथ, कुल क्षेत्रफल 125 वर्ग गज में से 62.5 वर्ग गज क्षेत्रफल वाले प्लॉट संख्या 98 को श्रीमती आशा सिंह से खरीद रहे हैं,जिन्होंने इसे नोटरीकृत जनरल पावर ऑफ अटॉर्नी, नोटरीकृत बिक्री समझौते और वसीयत दिनांक 30.05.2022 के आधार पर श्रीमती सुनैना राय से खरीदा था। और आदित्य बिड़ला हाउसिंग फाइनेंस लिमिटेड से वित्तीय सहायता के लिए बंधक रखने का इरादा रखते हैं। बैंक/एनबीएफसी की आवश्यकताओं का अनुपालन करने के लिए, हम यह सार्वजनिक सूचना देते हैं कि यदि किसी व्यक्ति के पास उक्त संपत्ति पर किसी भी प्रकार का दावा/अधिकार/स्वामित्व/ हित/बंधक बनाने में कोई आपत्ति है तो वह आज से 7 दिनों के भीतर अपनी आपत्तियों के बारे में नीचे दिए गए पते पर लिखित रुप में सूचित कर सकता है। ऐसा न करने पर यह माना जाएगा कि उक्त संपत्ति सभी प्रकार के भार, ग्रहणाधिकार आदि से मुक्त है। लुसेम लीगल एलएलपी प्लॉट नंबर 136, (बेसमेंट) उदय पार्क, नई दिल्ली-110049, संपर्क # 011-40046316

Indiabulls Enterprises Limited
(CIN: U71290HR2019PLC077579)

Extract of Consolidated Unaudited Financial Results for the quarter and half year ended 30 September 2024

(Rs. in Crores)

Particulars	Quarter ended 30-Sep-24	Quarter ended 30-Jun-24	Quarter ended 30-Sep-23	Year to date 30-Sep-24	Year to date 30-Sep-23	Year ended 31-Mar-24
	Unaudited	Unaudited	Unaudited	Unaudited	Unaudited	Audited
Total Income from operations	13.87	15.55	13.82	29.42	30.12	58.76
Net (Loss)/Profit for the period (before Tax, minority interest and Share of Profit / (Loss) of associates, Exceptional and/or Extraordinary items)	(13.36)	(2.97)	(2.94)	(16.33)	(2.94)	(25.20)
Net (Loss)/Profit for the period (before Tax, minority interest and Share of Profit / (Loss) of associates (after Exceptional and/or Extraordinary items))	(13.36)	(2.97)	(2.94)	(16.33)	(2.94)	(25.20)
Net (Loss)/Profit for the period (after Tax, minority interest and Share of Profit / (Loss) of associates (after Exceptional and/or Extraordinary items))	(11.97)	(3.39)	(3.92)	(15.36)	(5.04)	(25.24)
Total Comprehensive Income for the period [Comprising Profit / (Loss) for the period (after tax) and Other Comprehensive Income (after tax)]	(311.94)	(3.39)	(3.45)	(315.33)	(4.57)	(25.33)
Equity share capital	39.67	39.67	39.67	39.67	39.67	39.67
Reserves (excluding revaluation reserve) as shown in the audited Balance Sheet						206.07
Earnings per share (EPS) of Rs.2 each from continuing operations						
- Basic (Amount in Rs.)	(0.64)	(0.17)	(0.18)	(0.81)	(0.22)	(1.37)
- Diluted (Amount in Rs.)	(0.64)	(0.17)	(0.18)	(0.81)	(0.22)	(1.37)
Earnings per share (EPS) of Rs.2 each from discontinued operations						
- Basic (Amount in Rs.)	0.04	(0.00)	(0.02)	0.04	(0.03)	0.10
- Diluted (Amount in Rs.)	0.04	(0.00)	(0.02)	0.04	(0.03)	0.10

Notes:

1. The above results have been reviewed by the Audit Committee and subsequently approved at the meeting of the Board of Directors held on 08 November 2024.
2. **Key Standalone Financial Information:** (Rs. in Crores)

Particulars	Quarter ended 30-Sep-24	Quarter ended 30-Jun-24	Quarter ended 30-Sep-23	Year to date 30-Sep-24	Year to date 30-Sep-23	Year ended 31-Mar-24
	Unaudited	Unaudited	Unaudited	Unaudited	Unaudited	Audited
Total Income	18.56	13.50	10.52	32.06	22.61	48.43
Profit/(Loss) before Tax	0.30	(5.17)	(6.23)	(4.87)	(10.73)	(33.00)
Net Profit/(Loss) after Tax	1.03	(5.18)	(6.55)	(4.15)	(11.41)	(33.39)

3. The above is an extract of the detailed format of quarterly/half yearly financial results filed with the stock exchanges under Regulation 33 of the SEBI (Listing and Other Disclosure Requirements) Regulations, 2015. The full format of the Quarterly/half yearly Financial Results are available on the Company's website (https://www.indiabullsenterprises.com) and on the website of BSE (https://www.bseindia.com) and NSE (https://www.nseindia.com).

Registered Office: 5th Floor, Plot No. 108, IT Park, Udyog Vihar, Phase-1 Gurugram, Haryana 122016

By order of the Board of Directors
For Indiabulls Enterprises Limited

Place : Gurugram
Date : 08 November 2024

Sargam Kataria
Director

बदलाव का दौर

भारत-अमेरिका संबंध

डोनाल्ड ट्रंप के राष्ट्रपति पद पर वापस आने से अमेरिकी विदेश नीति में एक नया अध्याय जुड़ गया है, जिसका भारत के लिए काफी महत्व है। हालांकि, निवर्तमान बिडेन प्रशासन भारत के प्रति उदासीन नहीं था, लेकिन भारत में घरेलू राजनीति के तरीके को लेकर उसे कुछ संदेह था। लेकिन ट्रंप के सत्ता में आने के बाद यह संदेह चुपचाप दूर हो सकता है और ट्रंप प्रशासन नई दिल्ली को समायोजित करने के लिए अतिरिक्त कदम उठा सकता है। ट्रंप की जीत रणनीतिक गठबंधनों को नया आकार दे सकती है, व्यापार संबंधों को फिर से परिभाषित कर सकती है और नई दिल्ली के लिए महत्वपूर्ण क्षेत्रीय गतिशीलता को प्रभावित कर सकती है। ट्रंप के पिछले कार्यकाल के दौरान अमेरिका-भारत रक्षा संबंधों में काफी प्रगति हुई थी। उन्होंने चीन के बढ़ते प्रभाव को संतुलित करने के लिए भारत को इंडो-पैसिफिक में एक प्रमुख रणनीतिक साझेदार के रूप में बढ़ावा दिया, जिसके कारण सैन्य बिक्री में वृद्धि और क्वॉड (बेसिक एक्सचेंज एंड कोऑपरेशन एग्रीमेंट) सहित रक्षा समझौतों पर हस्ताक्षर जैसी पहल की गईं। ट्रंप की जीत इन नीतियों को मजबूत कर सकती है, क्योंकि वह इंडो-पैसिफिक सुरक्षा पर ध्यान केंद्रित करना जारी रख सकते हैं। रक्षा सहयोग, संयुक्त सैन्य अभ्यास और हथियारों के सौदों के लिए नए सिरे से जोर देने से क्षेत्र में भारत की सैन्य क्षमताएं बढ़ सकती हैं। हालांकि, उनकी सभी नीतियां भारत को पसंद नहीं आ सकती हैं।

अपने पिछले कार्यकाल में, ट्रम्प ने अमेरिकी उद्योग को प्राथमिकता दी, उनकी व्यापार नीतियों ने अक्सर टैरिफ और पुनर्वार्ता को बढ़ाया जिसका असर भारत पर पड़ा। उनके अमेरिका प्रथम दृष्टिकोण ने भारत पर अमेरिकी व्यापार घाटे को कम करने के लिए व्यापार सुधारों के लिए दबाव डाला। इस बार, भारत को विशेष रूप से प्रौद्योगिकी और दवा क्षेत्रों में समान दबावों का सामना करना पड़ सकता है, लेकिन अधिक अनुकूल शर्तों पर बातचीत करने के अवसर भी मिल सकते हैं, खासकर अगर ट्रम्प चीनी सामानों पर निर्भरता कम करना चाहते हैं। नए सिरे से व्यापार सौदों की संभावना है, लेकिन दोनों पक्षों को आपसी विकास के साथ संरक्षणवाद को संतुलित करने की आवश्यकता होगी। ट्रम्प की पिछली आव्रजन नीतियों, जिसमें सख्त वीजा नियम शामिल थे, ने भारतीय आईटी कर्मचारियों को प्रभावित किया, विशेष रूप से एच-1बी वीजा के संबंध में। यदि उनका प्रशासन इस रास्ते पर आगे बढ़ता है, तो यह भारतीय तकनीकी प्रतिभा को और सीमित कर सकता है।

हालांकि, कुशल भारतीय श्रमिकों के लिए लाभकारी शर्तों को सुरक्षित करने के लिए बातचीत की गुंजाइश हो सकती है, खासकर अगर ट्रम्प अन्य मोर्चों पर भारत के साथ घनिष्ठ संबंध चाहते हैं। एशिया में चीन की मुखर कार्रवाइयों को लेकर ट्रम्प और भारत दोनों ही एक समान चिंता रखते हैं। चीन के खिलाफ ट्रंप का दृढ़ रुख भारत के हितों के अनुरूप है, खास तौर पर भारत-चीन सीमा गतिरोध के मद्देनजर। ट्रंप का स्वतंत्र और खुले हिंद-प्रशांत के प्रति समर्थन और चीनी व्यापार प्रथाओं के प्रति उनका संदेह भारत के अपने रणनीतिक लक्ष्यों के साथ अच्छी तरह से प्रतिध्वनित होता है। ट्रंप के नेतृत्व में, अमेरिका क्षेत्रीय मुद्दों पर भारत की स्थिति का अधिक मुखर समर्थक हो सकता है, संभवत: क्वाड जैसे बहुपक्षीय मंचों में भी बड़ी भूमिका निभा सकता है। अमेरिका के लिए ऊर्जा स्वतंत्रता पर ट्रंप का रुख भारत के ऊर्जा सुरक्षा लक्ष्यों के लिए फायदेमंद हो सकता है। ट्रंप की जीत भारत के लिए अवसर और चुनौतियां दोनों प्रदान करती है। भारत के लिए, प्राथमिकता संभवत: साझा आधार बनाने की होगी, खास तौर पर उन क्षेत्रों में जहां हित संरेखित हैं, और विवाद के किसी भी बिंदु को संबोधित करने के लिए कूटनीतिक रूप से काम करना।

डोनाल्ड ट्रंप का दूसरा कार्यकाल

उत्साही समर्थकों के लिए, यह एक लंबे समय से प्रतीक्षित जीत है, 'अमेरिका को फिर से महान बनाओ' वाले नारे का पुनरुत्थान, जबकि आलोचक उनकी वापसी की वास्तविकता को अनदेखा करते हैं।

नीलांत इलांगमुआ
(लेखक, एक पत्रकार हैं)

वह वापस आ गए हैं। अपने आप को तैयार रखें: डोनाल्ड ट्रम्प संयुक्त राज्य अमेरिका के 47वें राष्ट्रपति के रूप में व्हाइट हाउस को पुन: प्राप्त करने के लिए तैयार हैं। वे 1892 में ग्रोवर क्लीवलैंड के बाद से लगातार दो कार्यकाल पूरा करने वाले पहले राष्ट्रपति बनेंगे। उनसे प्यार करें या उनसे नफरत करें, यह क्षण ऐतिहासिक से कम नहीं है। उनके समर्थकों के लिए, यह एक लंबे समय से प्रतीक्षित हिसाब है; उनके आलोचकों के लिए, यह एक दु:स्वप्न का साकार होना है। हॉलीवुड के अभिजात वर्ग - जिनमें जॉर्ज क्लूनी, लियोनार्डो डिकैप्रियो और ओपरा विनफ्रे शामिल हैं - संभवत: अविश्वास में डूबे हुए हैं, इस स्पष्ट संदेश को स्वीकार करने में असमर्थ हैं कि अमेरिका एक और ट्रम्प युग की शुरुआत करने के लिए तैयार है। इस बीच, मेगिन केली और टकर कार्लसन जैसी हस्तियां अपने मसीहा की वापसी की जीत का जश्न मना रही हैं, वह व्यक्ति जिसने अमेरिका को फिर से महान बनाने की कसम खाई थी।

चाहे आप इसे पसंद करें या न करें, यह लोकतंत्र की क्रिया है। अपने पहले विजय भाषण में, ट्रम्प ने अपने एजेंडे को स्पष्ट करने में कोई समय बर्बाद नहीं किया: मैं अपने समर्थकों को निराश नहीं करूंगा, उन्होंने घोषणा की। अमेरिका का भविष्य पहले से कहीं अधिक बड़ा, बेहतर, साहसी, समृद्ध, सुरक्षित और मजबूत होगा। वाकई, ये शब्द साहसिक हैं। फिर भी सवाल यह है कि इस विभाजित राष्ट्र में महानता की कीमत क्या होगी? इस बार, वह एलन मस्क जैसे सहयोगियों द्वारा मजबूत होकर लौटे हैं, जबकि अन्य दिग्गज - जेफ बेजोस, तटस्थ रहने का प्रयास कर रहे हैं।

फिर भी इसका परिणाम बहुत गहरा है। उदारवादी अंतर्राष्ट्रीयवाद के कट्टर समर्थक और अमेरिकी राजनयिक विक्टोरिया नुलैंड के पति रॉबर्ट कैगन जैसी प्रभावशाली आवाज़ों ने इस्तीफा दे दिया है, जो संकेत देता है कि जमीन बदल रही है। मुख्यधारा के मीडिया- द न्यू यॉर्क टाइम्स, एनबीसी और सीएनएन जैसे आउटलेट्स के लिए चुनाव परिणाम एक फटकार है जिसे वे अनदेखा नहीं कर सकते। ये मीडिया पावरहाउस, जो वर्षों से ट्रम्प के खिलाफ़ कथानक गढ़ते रहे हैं, अब एक ऐसे लोगों का सामना कर रहे हैं जो उन्हें खिलाए गए शानदार, अभिजात्य कहानियों से अलग-थलग महसूस कर रहे हैं। जैसे-जैसे नागरिक अभिजात्य कथाओं और उनके जीवन की वास्तविकताओं के बीच की खाई को देखते हैं, विश्वास की खाई और चौड़ी होती जाती है। ट्रम्प का दूसरा कार्यकाल संभवत: अन्य देशों के घरेलू मामलों पर आंख मूंद लेगा, जो अमेरिकी विदेश विभाग और उसके गुप्त निकायों द्वारा बनाए गए तथाकथित नागरिक समाज संगठनों और अन्य अंतरराष्ट्रीय हितों के लिए धन में संभावित कटौती का संकेत देता है।

आव्रजन नीति भी कठोर हो सकती है, क्योंकि सीमा सुरक्षा और बिडेन के तहत अप्रवासियों की आमद पर तनाव बढ़ रहा है। यह सख्त रुख घरेलू अशांति की आग को और भड़का सकता है, क्योंकि अमेरिकी राष्ट्रीय प्राथमिकताओं के एक और परिवर्तन से जूझ रहे हैं। यूक्रेन में युद्ध जल्द ही समाप्त हो सकता है, संभवत: रूस के साथ एक कड़वे समझौते के माध्यम से, क्योंकि यूरोप के कई देश ट्रम्प के साथ गठबंधन नहीं कर सकते हैं जैसा कि उन्होंने बिडेन प्रशासन के तहत किया था। हालांकि, अगर यूक्रेनी राष्ट्रपति ज़ेलेंस्की को स्थिति की एक अलग समझ है, तो उनके लिए चीनी शांति प्रस्ताव को आगे बढ़ाने पर गंभीरता से विचार करने का समय आ सकता है। इस बीच, पश्चिम एशिया में संघर्ष रुकने की संभावना है, लेकिन तनाव बढ़ सकता है, जिससे संभवत: ईरान पर नए तरह के हमले हो सकते हैं। पश्चिम एशिया में भविष्य के परिदृश्य को निर्धारित करने में ईरान और ट्रम्प प्रशासन के बीच संबंध महत्वपूर्ण होंगे, क्योंकि इस संदर्भ में लिए गए निर्णय क्षेत्र की भू-राजनीतिक गतिशीलता को महत्वपूर्ण रूप से बदल सकते हैं।

किसी को यह नहीं भूलना चाहिए कि ट्रम्प के पहले प्रशासन के दौरान ही इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कॉर्प्स में सेवा देने वाले ईरानी सैन्य अधिकारी कासिम सोलेमानी की इराक के बगदाद में रीपर ड्रोन (प्रिडेटर बी) का उपयोग करके हत्या कर दी गई थी। सुलेमानी ईरानी कार्रवाइयों का एक प्रमुख संवाहक था, और अब भी, उसे ईरान और उसके गठबंधनों में एक प्रमुख प्रभाव के रूप में माना जाता है।

घरेलू मोर्चे पर, विवादास्पद प्रोजेक्ट 2025 ब्लूप्रिंट अमेरिकी सरकार के संस्थानों को राष्ट्रवादी, अति-रूढ़िवादी दृष्टिकोण के अनुरूप फिर से तैयार करने के लिए एक साहसिक प्रयास के रूप में खड़ा है।

आलोचक एक सत्तावादी पतन की चेतावनी देते हैं। ट्रम्प ने खुद दावा किया कि उनका इस नीति में कोई हाथ नहीं है, जबकि उनके अभियान भाषणों में इसके विषय गूंज रहे थे। नियामक एजेंसियों को खत्म करना, वैचारिक रूप से प्रेरित कर्मियों को स्थापित करना, और कार्यकारी शक्ति को मजबूत करना - ऐसे कदम अमेरिकी प्रणाली को आधार देने वाले बहुत ही जाँच और संतुलन का परीक्षण कर सकते हैं।

संभावित लागत? नागरिक स्वतंत्रता, पर्यावरण संरक्षण और लोकतांत्रिक मानदंडों का नाटकीय रूप से कमजोर होना, गहरे राजनीतिक विभाजन और नागरिक अशांति को जन्म दे सकता है। यदि साकार हुआ, तो यह दृष्टिकोण वैश्विक मंच पर अमेरिका की भूमिका को भी फिर से परिभाषित करेगा।अमेरिका प्रथम सिद्धांत, जिसने ट्रम्प की पिछली विदेश नीति को आकार दिया, एक बार फिर जलवायु परिवर्तन, परमाणु निरस्त्रीकरण और व्यापार जैसे जरूरी मुद्दों पर बहुपक्षीय प्रयासों को अस्थिर कर सकता है। ट्रम्प की बयानबाजी अमेरिकी गठबंधनों को कमजोर कर सकती है, और जैसे-जैसे वाशिंगटन लोकतंत्र को बढ़ावा देने के दायित्व से पीछे हटता है, एक शून्य पैदा होता है - जिसे चीन, निस्संदेह, भरने के लिए उत्सुक है। 45वें राष्ट्रपति बनने के ठीक बाद सीआईए मुख्यालय की अपनी यात्रा के दौरान ट्रम्प का पहला नोट ध्यान देने योग्य है। मुख्यधारा की कहानियों में अक्सर उन्हें खुफिया तंत्र को खारिज करने वाले के रूप में चित्रित किया जाता था, लेकिन ट्रम्प के नोट ने एजेंसी के महत्व को स्वीकार करते हुए उस दृष्टिकोण को चुनौती दी। अब, जैसे-जैसे राजनीतिक हवाएं बदल रही हैं, ट्रम्प आतंकवाद और खुफिया सुधार में जड़ें रखने वाले भारतीय-अमेरिकी काश पटेल को अपने नए सीआईए प्रमुख के रूप में देख रहे हैं।

तथाकथित डीप स्टेट को चुनौती देने पर पटेल का विवादास्पद रुख अमेरिकी खुफिया नीति में एक क्रांतिकारी बदलाव को दर्शाता है - संभवत: संघीय सरकार के भीतर सत्ता समेकन के ट्रम्प के व्यापक एजेंडे की ओर एक कदम। अपनी पुस्तक गवर्नमेंट गैंगस्टर्स- द डीप स्टेट, द ट्रुथ, एंड द बैटल फॉर अवर डेमोक्रेसी के लिए प्रसिद्ध पटेल से उम्मीद की जाती है कि वे खुफिया सुधारों से सीधे निपटेंगे, जो ट्रम्प के सत्ता संरचनाओं को हिला देने के दृष्टिकोण के साथ संरेखित होंगे।

ट्रम्प का दूसरा प्रशासन चीन के साथ तनाव को भी बढ़ाएगा, विशेष रूप से इंडो-पैसिफिक में, जहाँ अमेरिका-चीन प्रतिद्वंद्विता नई ऊंचाइयों पर पहुँच रही है। ताइवान और दक्षिण चीन सागर पर ट्रम्प का आक्रामक रुख जापान, दक्षिण कोरिया और भारत के साथ सैन्य उपस्थिति, हथियारों के सौदे और मजबूत गठबंधन को बढ़ा सकता है। प्रशासन चीन की बेल्ट एंड रोड पहल को चुनौती दे सकता है और बीजिंग के प्रभाव को सीमित करने के उद्देश्य से चीनी फर्मों पर प्रतिबंध लगा सकता है।

इस बीच, क्षेत्र के छोटे देश खुद को एक उच्च-दांव वाली दुविधा में फंसते हुए पा सकते हैं - अमेरिका के साथ गठबंधन करने से बीजिंग के क्रोध का जोखिम है जबकि चीन की ओर झुकाव से वाशिंगटन की नाराजगी का जोखिम है। ट्रम्प द्वारा अमेरिकी विदेश नीति को फिर से परिभाषित करने के साथ, इन देशों को एक सख्त भू-राजनीतिक दोष में एक असंभव विकल्प का सामना करना पड़ सकता है।

विद्यार्थियों के लिए पीएम-विद्यालक्ष्मी योजना

सरकार ने कमज़ोर वर्गों के युवाओं की क्षमता का दोहन करने के लिए इस वित्तीय सहायता कार्यक्रम की शुरुआत की है।

राघवेंद्र पी तिवारी
(लेखक, पंजाब विवि भटिंडा के कुलपति हैं)

भारत में दुनिया में सबसे ज़्यादा मिलेनियल और जेन जेड हैं। यह आबादी उच्च शिक्षा में जीईआर को मौजूदा 28 प्रतिशत से बढ़ाकर 2035 तक 50 प्रतिशत करने के लिए एक महत्वपूर्ण जनसंख्या है, जैसा कि एनईपी-2020 में परिकल्पित किया गया है। इसके अलावा, भारत की 15-64 आयु वर्ग की कार्यशील आबादी लगभग 68 प्रतिशत है। वर्तमान जनसांख्यिकीय लाभांश लंबे समय तक उपलब्ध नहीं रहेगा, क्योंकि युवा आबादी बूढ़ी हो जाएगी और इस तरह अनुत्पादक हो जाएगी। इसी कारण से, पीएम मोदी ने भारत के जीवनकाल में वर्तमान समय को 'अमृत काल' कहा है और आत्मनिर्भर उपायों के माध्यम से इसे 2047 तक 'विकसित' बनाने का आह्वान किया है। दुनिया भर में कुशल युवाओं की काफी मांग है और यह चलन हमेशा बना रहेगा क्योंकि कार्यस्थल में लगातार विकसित हो रहे जॉब प्रोफाइल से निपटने के लिए स्किलिंग, अपस्किलिंग और रीस्किलिंग की हमेशा जरूरत होगी। हालांकि, पिछले एक दशक में देश में हुए आर्थिक परिवर्तन के कारण जीवन स्तर में काफी सुधार हुआ है जिससे जीवन यापन की लागत बढ़ गई है। और, शिक्षा कोई अपवाद नहीं है।

केंद्र सरकार ने गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा तक परेशानी मुक्त पहुंच सुनिश्चित करने के लिए कई पहल की हैं, खासकर एनईपी-2020 के कार्यान्वयन के संबंध में। इनमें समग्र शिक्षा के लिए बहु-विषयक और सीखने के परिणाम-आधारित पाठ्यक्रम शामिल हैं; नवीन शिक्षाशास्त्र (अनुभवात्मक शिक्षा, इंटर्नशिप, क्षेत्र विसर्जन, आदि); सीखने के परिणामों का परीक्षण करने के लिए मूल्यांकन; अकादमिक बैंक ऑफ क्रेडिट; भारतीय ज्ञान प्रणाली और सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों आदि पर जोर। इस लंबी सूची में नवीनतम संस्करण पीएम-विद्यालक्ष्मी योजना है, जो सभी श्रेणियों को कवर करने वाले जरूरतमंद मेधावी छात्रों को गुणवत्तापूर्ण

उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए वित्तीय बाधाओं से राहत देने के लिए संपार्श्विक-मुक्त, गारंटर-मुक्त वित्तीय ऋण प्रदान करती है। राष्ट्र को दीपावली उपहार के रूप में 5 नवंबर, 2024 को कैबिनेट द्वारा अनुमोदित, पीएम-विद्यालक्ष्मी एक मिशन मोड, सरल, पारदर्शी, छात्र-अनुकूल और पूरी तरह से डिजिटल तंत्र है, जो शीर्ष 860 गुणवत्ता वाले उच्च शिक्षा संस्थानों में प्रवेश लेने वाले मेधावी छात्रों को ऋण तक आसान पहुंच की सुविधा प्रदान करता है।

यह पहल शैक्षिक ऋण चाहने वाले छात्रों को इसके लिए आवेदन करने और अपने आवेदनों को ट्रैक करने के लिए एकल-खिड़की एकीकृत मंच प्रदान करती है। पीएम विद्यालक्ष्मी समाज के सामाजिक रूप से वंचित वर्गों के लिए गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा तक पहुंच को अधिकतम करने के लिए वर्तमान सरकार की पिछली पहलों के दायरे और पहुंच में इजाफा करेगी। इस योजना के तहत, छात्र शैक्षणिक कार्यक्रमों को आगे बढ़ाने के लिए ट्यूशन फीस और अन्य खर्चों की पूरी राशि को कवर करने के लिए बैंकों और वित्तीय संस्थानों से संपार्श्विक-मुक्त, गारंटर-मुक्त ऋण प्राप्त करने के पात्र होंगे। पीएम विद्यालक्ष्मी के तहत, सरकार कवरेज का विस्तार करने के लिए बैंकों को समर्थन देने के लिए 7.5 लाख रुपये तक की ऋण राशि के लिए बकाया डिफ़ॉल्ट की 75 प्रतिशत क्रेडिट गारंटी भी प्रदान करेगी।

यह योजना उन छात्रों के लिए अधिस्थगन अवधि के दौरान 10 लाख रुपये तक के ऋण पर 3 प्रतिशत ब्याज सहायता भी प्रदान करेगी, जिनकी वार्षिक पारिवारिक आय 8.00 लाख रुपये है और वे ब्याज सबवेंशन की किसी भी सरकारी छात्रवृत्ति के अंतर्गत नहीं आते हैं। यह 4.5 लाख रुपये तक की वार्षिक पारिवारिक आय वाले छात्रों को पहले से दी जाने वाली पूर्ण ब्याज सबवेंशन के अतिरिक्त होगा। 2024-25 से 2030-31 की अवधि के लिए 3,600 करोड़ रुपये का परिव्यय उपलब्ध कराया गया है और उपरोक्त समयावधि के दौरान 7 लाख नए छात्रों को इस ब्याज सब्सिडी का लाभ मिलने की उम्मीद है। पीएम-विद्यालक्ष्मी, प्रधानमंत्री उच्चतर शिक्षा प्रोत्साहन (पीएम-यूएसपी) योजना के दो घटकों, अर्थात् केंद्रीय क्षेत्र ब्याज सब्सिडी (सीएसआईएस) और शिक्षा ऋण के लिए क्रेडिट गारंटी फंड योजना (सीजीएफएस) का पूरक होगी, जो शिक्षा मंत्रालय द्वारा पहले से ही पेश की जा रही है। पीएम-यूएसपी-सीएसआईएस के तहत, अनुमोदित संस्थानों से तकनीकी/व्यावसायिक पाठ्यक्रम करने वाले छात्र। संक्षेप में, पीएम विद्यालक्ष्मी युवाओं, विशेष रूप से मध्यम वर्ग के युवाओं को उनकी पसंद की शिक्षा को आगे बढ़ाने के लिए आवश्यक वित्तीय सहायता के साथ सशक्त बनाने के लिए शुरू की गई एक पूरी तरह से नई योजना है। नई शुरू की गई योजना, मेधावी छात्रों को गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा उपलब्ध कराने के अलावा, ऋण लेने वाले छात्रों के तनाव को कम करेगी और उन्हें सीखने पर पूरी तरह से ध्यान केंद्रित करने में सक्षम बनाएगी।

एनईपी-2020 के कार्यान्वयन की अगुवाई करने के लिए एक नई शिक्षार्थी-केंद्रित योजना शुरू करने के लिए पीएम नरेंद्र मोदी और शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान को बधाई। पीएम विद्यालक्ष्मी वास्तव में, शिक्षा के क्षेत्र में नई तकनीकों का संगम है।

आप की बात

संविधान कांग्रेस ने तोड़ा

पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष व सांसद राहुल गांधी ने कहा कि हम संविधान के रक्षक है और वे (भाजपा) उसे ख़त्म करने वाले। संविधान की रक्षा करने वाले राहुलजी को थोड़ा इतिहास जान लेना चाहिए जब उनकी दादी इंदिरा गांधी ने 25 26 जून 1975 की रात को अचानक संविधान को ताक में रखकर आपातकाल लगाया था और सारे विपक्षियों जेल में डालकर स प्रेस के मुंह पर ताला लगवाकर अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को छीन लिया था। 18-19 महीने की प्रताड़ना के बाद जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में भारी बहुमत से जनता पार्टी का शासन आते ही संविधान की रक्षा करते हुए सबसे पहले देश को आपातकाल मुक्त किया गया। उसके बाद आज तक संविधान बरक़रार है. जिसे कोई सरकार हिला नहीं पायी और उसी के अनुसार देश की सत्ता चलाती चली आ रही है। राहुल गांधी संविधान की रक्षा की बात जरूर करते हैं किन्तु उन्होंने ही अपनी सरकार के विधेयक को संसद में फाड़ने का काम किया। सत्ता की आलोचना में मशगूल सांसद को अपने वचनों में परिपक्वता लाते हुए साथ ही अपनी और अपनी पार्टी की सरकार के कार्यों को ध्यान में रखते हुए ही बयान देना चाहिए ताकि उसकी विश्वसनीयता आम लोगों को प्रभावित कर सके और वे उनकी भावनाओं को तवज्जो दे सके। जब से (2014 से) मोदी सरकार सत्ता में आई है तब से ही वे उसके धुरंधर आलोचक बन गए हैं।

- **शकुंतला महेश नेनावा**, इंदौर

कनाडा की दोहरी नीति

कनाडा की हालिया नीति देखकर ऐसा लगता है जैसे वह दोस्ती और दुश्मनी के बीच संतुलन साधने में महारत हासिल कर चुका है। एक ओर, वह भारत के साथ दोस्ताना रिश्तों का दावा करता है, जबकि दूसरी ओर, उसकी धरती पर भारत-विरोधी गतिविधियों को खुला समर्थन मिलता है। यह वही कनाडा है जो अंतरराष्ट्रीय मंच पर लोकतंत्र और मानवाधिकारों का मसीहा बनकर घूमता है, लेकिन जब भारत की संप्रभुता का सवाल उठता है, तो उसकी चुप्पी आश्चर्यजनक होती है। भारतीय समुदाय, जो कनाडा की अर्थव्यवस्था में योगदान देता है, उसे नजरअंदाज कर वहां कुछ भारत-विरोधी तत्वों को जगह देना एक अजीब विरोधाभास है। क्या यह कनाडा का नया तरीक़ा है मित्र देशों के प्रति अपनी निष्ठा प्रदर्शित करने का? या फिर यह सिर्फ एक राजनीतिक खेल है, जहां उसे न अपने नागरिकों की परवाह है और न ही अंतरराष्ट्रीय संबंधों की? भारत को इस दोहरे चरित्र का सामना करने के लिए संयमित, पर सख्त कदम उठाने होंगे। एक स्पष्ट कूटनीतिक संदेश देकर, कनाडा को यह बताना होगा कि भारत किसी भी तरह की नापाक गतिविधियों को बर्दाश्त नहीं करेगा। इसके लिए अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को भी बढ़ाया जाना चाहिए, ताकि कनाडा जैसे देशों को यह एहसास हो कि उन्हें अपनी सीमाओं के भीतर रहकर ही काम करना चाहिए।

- **अवनीश कुमार गुप्ता,** आजमगढ़

वायु प्रदूषण की समस्या

वर्तमान में कई शहरों में वायु प्रदूषण का स्तर बढ़ता जा रहा है। जिससे सांस में तकलीफ आने लगी है। वायु प्रदूषण फैलाने वाले उद्योग के अलावा युद्ध जैसे माहौल से बचना चाहिए। वायु प्रदूषण फैलाने वाले उद्योग ,युद्ध में प्रयुक्त विस्फोटक सामग्रियों के प्रयोग से पर्यावरण को नुकसान होता है।वायु मंडल विषाक्त होता है।एक जानकारी के मुताबिक नासा के वैज्ञानिक थॉमस पूरे का कथन है कि फ़िलहाल जिस गति से पृथ्वी का वायुमंडल लिक हो रहा है ,उस हिसाब से एक से डेढ़ अरब साल में वायु मंडल पूरी तरह खत्म हो जाएगा। वायु मंडल को विषाक्त होने से बचाना चाहिए ताकि ओजोन पर्त सुरक्षित बनी रह सके। धरती या किसी ग्रह का वायुमंडल उस ग्रह के गुरुत्वाकर्षण के कारण बंधा रहता है। इस बंधे हुए वायुमंडल के बाहर अंतरिक्ष में कुछ ऐसी घटनाएं होती है,जिसके कारण वायुमंडल की कुछ वायु गुरुत्वाकर्षण को तोड़कर अंतरिक्ष में विलीन हो जाती है । इस प्रक्रिया को ओरेरा कहा जाता है। पृथ्वी के रहवासियों को कार्बन उत्सर्जन की मात्रा को कम करना होगा। वृक्षारोपण को ज्यादा संख्या में रोपण किया जाना होगा। ताकि वायु मंडल बना रहे। वृक्ष भी आक्सीजन प्रदान करते है। वायुमंडल से ही धरती के रहवासी सुरक्षित रह सकते है।

- **संजय वर्मा**, मनावर, धार

ध्यान देने की जरूरत

सुप्रीम कोर्ट के फैसले ने भले ही उच्च न्यालय के फैसले को बदलकर मदरसा बोर्ड को मान्यता दी है।
मगर जो कंडीशन रखी है वह सही बिमारी का इलाज़ है। अभी तक मदरसों में शरीयत के अनुसार कट्टर धार्मिक शिक्षा देने देने का प्रावधान था। और उस के तहत सभी तरह की डिग्रियां दी जा रही थी। मगर अब यूजीसी की गाइडलाइंस के अनुसार स्नातक और स्नातकोत्तर डिग्रियां मदरसा बोर्ड द्वारा नहीं दी जा सकेगी। गत दिनों ही यह मामला प्रकाश में आया था कि दिल्ली की उच्च शिक्षण संस्थानों में केरल के मदरसों में पढ़ें हुए छात्रों को सर्वाधिक अंकोंके कारण सबसे ज्यादा संख्या में प्रवेश मिला। ऐसे ही यूपीएससी जैसी उच्च स्तरीय परीक्षाओं मे इस्लामी स्टडी विषयको लेकर सर्वाधिक छात्र आईएएस और आईपीएस में सफल होकर उच्च पदों पर आसीन हो रहे हैं। सुप्रीमकोर्ट के नए फैसले लेकर बाद अब यूपीएससी के अनुसार परीक्षा देकर ही छात्र परीक्षाओं में बैठ सकेंगे। फिर भी इन परीक्षाओं में ,इस्लामी स्टडी, जैसे विषयों को हटाने की मांग मांग लंबे समय से की जा रही है। शिक्षा विभाग और सुप्रीम कोर्ट कोई इस पर भी ध्यान देना चाहिए।

- **सुभाष बुड़ावनवाला,** रतलाम

पाठक अपनी प्रतिक्रिया ई-मेल से
responsemail.hindipioneer@gmail.com
पर भी भेज सकते हैं।

पायनियर
नई दिल्ली, शनिवार, 9 नवम्बर 2024

जहां दिखे सपाई, वहां बिटिया घबराई: मुख्यमंत्री

● यूपी विधानसभा के उपचुनाव में उतरे सीएम योगी, पहले दिन मीरापुर, कुंदरकी व गाजियाबाद के भाजपा उम्मीदवारों के लिए की रैली

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ/ मुजफ्फरनगर/ मुरादाबाद/ गाजियाबाद

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ उत्तर प्रदेश में होने वाले विधानसभा उपचुनाव में शुक्रवार से प्रचार करने उतरे। पहले दिन उन्होंने मीरापुर में एनडीए (रालोद) तथा कुंदरकी-गाजियाबाद में भाजपा प्रत्याशी के समर्थन में रैली की। रैलियों में समाजवादी पार्टी व कांग्रेस सीएम योगी के निशाने पर रही। सीएम ने तंज कसा- जहां दिखे सपाई, वहां बिटिया घबराई। सीएम ने इशारों में कहा कि लोकसभा चुनाव में खटाखट-खटाखट (कांग्रेस) की सहयोगी रही समाजवादी पार्टी को फटाफट-फटाफट सफाचट करना है। सीएम ने आमजन से अपील की कि हमारे प्रत्याशी को वोट दें, विकास व सुरक्षा का दायित्व हमारे ऊपर छोड़ दें। योगी ने कहा कि 2012-17 के बीच नारा चलता था, जिस गाड़ी पर सपा का झंडा-समझो बैठा है कोई गुंडा। सीएम ने तंज कसा कि आज जहां दिखे सपाई, वहां बिटिया घबराई। अयोध्या, कन्नौज में सबने इनके कारनामे को देखा है। यह सपा का नए ब्रांड है। इन्हें लोकलाज की चिंता नहीं है। अगर इन्हें लातों से ठीक नहीं करेंगे तो यह ठीक कैसे होंगे। मान्यता रही है कि गांव की बहन-बेटी सबकी बहन-बेटी। हम सब इसे मानने वाले लोग हैं, लेकिन सपा ने इस तानेबाने को छिन्न-भिन्न किया है। सपा मीडिया सेल के सोशल मीडिया हैंडल पर इनके वास्तविक संस्कार दिखते हैं, जहां यह घटिया स्तर की बातें करते हैं।

सुख-शांति से मनते हैं पर्व-त्योहार तो सपा को होती है पीड़ा सीएम योगी ने कहा कि भारत निर्वाचन आयोग ने जनआस्था के कारण चुनाव की तिथि 13 से बढ़ाकर 20 नवंबर कर दी है। सपा को हर अच्छे कार्य से परेशानी होती है, क्योंकि समाज में अच्छे लोग और कार्य होगा तो कूड़ा-कचरा छंट जाएगा। उन्हें पीड़ा होती है कि कैसे लोग पर्व-त्योहार सुख-शांति से मना लेते हैं। सीएम योगी ने कहा कि प्राय: चांद दिखाई नहीं देता तो ईद की तिथि बदल दी जाती और सरकार उसी अनुसार छुट्टी घोषित करती है, तब विरोध नहीं होता है। जब हिंदू आस्था के प्रतीक पर्व के महत्व को देखते हुए संवैधानिक संस्था ने तिथि में परिवर्तन किया तो सपा को तकलीफ हुई।

योगी ने कहा कि सपा-कांग्रेस में तलाक हो रहा है। लोकसभा चुनाव में इन लोगों ने कहा था खटाखट-खटाखट, लेकिन इसका लाभ नहीं मिला। अब दोनों में खटपट शुरू हो गई है। कांग्रेस व सपा ने लोकसभा चुनाव में संविधान, आरक्षण के नाम पर झूठ बोलकर गुमराह किया था। अब समाजवादी पार्टी को सफाचट करने का अवसर है। हरियाणा में कांग्रेस ने सपा से कहा कि औकात में रहो। यूपी से बाहर निकले तो ठीक कर देंगे। महाराष्ट्र में भी यही कहा कि अपनी सीमा में रहो, जो बचा-खुचा है यह सब भी गायब हो जाएगा। यूपी में सपा ने कांग्रेस को ठनठन गोपाल कर दिया है। दोनों में ठन गई है, क्योंकि धोखा देना सपा की प्रवृत्ति है।

सीएम योगी ने कहा कि सपा सरकार के कारण पश्चिमी यूपी को पलायन का दंश झेलना पड़ता था। सत्ता के लिए सपा समाज को बांट रही थी। उन्होंने कहा कि यूपी में साढ़े सात साल में एनडीए सरकार है। बहन-बेटी की इज्जत से खिलवाड़, अन्नदाता किसान के बैल-भैंस व मोटर को चुराने और दंगे की कीमत कैसे चुकानी पड़ेगी। यह सभी को पता है। अब पश्चिम यूपी में दंगा व कैराना में पलायन नहीं हो रहा। अब मेरठ से दिल्ली तक रैपिड रेल चल रही है। मुजफ्फरनगर भी जल्द ही इस सुविधा का लाभ प्राप्त करता दिखेगा। योगी ने कहा कि 1995 से 2017 (22 वर्ष) में किसानों को जितना गन्ना मूल्य का भुगतान हुआ। सात वर्ष में उससे कई गुना (दो लाख 53 हजार करोड़ रुपये) गन्ना मूल्य भुगतान कराया गया। मार्च 2023 के बाद से निजी ट्यूबवेल वाले किसान को पैसे का भुगतान नहीं करना है। यह भुगतान सरकार कर रही है। सरकार ने चीनी मिल के पुनरोद्धार का भी काम कराया। सीएम ने कहा कि इस महीने के अंत तक 60, 200 पुलिस भर्ती के परिणाम आने वाले हैं। पहले शामली, मुजफ्फरनगर, मेरठ, बागपत, बुलंदशहर आदि जनपदों के नौजवान उपेक्षित होते थे, अब वे बिना भेदभाव सरकारी नौकरियों में भर्ती होते हैं। जब युवा पास होंगे तो सपाइयों के चेहरे फीके पड़ जाएंगे। पहले भर्ती में सैफई की सूची होती थी, अब मेरिट के आधार पर सूची निकलती है। नौकरियों में 20 फीसदी बेटियां होंगी, जब सपाई छेड़छाड़ करेंगे तो बेटियां घूसा, जूता-लात मारेंगी। यूपी सरकार एशियन, कॉमनवेल्थ, ओलंपिक व विश्व चैंपियनशिप में पदक जीतने वालों को पैसा व नौकरी देती है। मेजर ध्यानचंद के नाम पर खेल विश्वविद्यालय बन रहा है। यूपी के खिलाड़ियों को अब यूरोप नहीं जाना पड़ेगा, बल्कि वहां की सुविधा मेरठ व मुजफ्फरनगर में ही मिलेगी।

योगी ने कहा कि पीएम मोदी के नेतृत्व में %एक भारत-श्रेष्ठ भारत% बन रहा है तो इंडी गठबंधन देश को विभाजन की तरफ ले जा रहा है। जम्मू-कश्मीर विधानसभा के प्रस्ताव को देखा है कि फिर से 370 बहाल करेंगे। आखिर इस प्रस्ताव पर कांग्रेस व सपा का मुंह क्यों बंद है। फलीस्तीन और पाकिस्तान के नाम पर आंसू बहाने वाले लोग जम्मू-कश्मीर के नाम पर चुप क्यों बैठे हैं। सीएम योगी ने कहा कि हमारे आदर्श चौधरी चरण सिंह, धन सिंह कोतवाल व मातृभूमि के लिए सर्वस्व न्योछावर करने वाले महापुरुष व शहीद जवान हैं। मुख्यमंत्री ने मुजफ्फरनगर दंगे की चर्चा करते हुए कहा कि उस समय हथियारों का जखीरा बरामद हुआ था। सपा के तब और अब के मुखिया दंगाइयों को अपने आवास पर सम्मानित कर रहे थे। जो मुजफ्फरनगर दंगों की आंच को झेलते -झेलते झुलस रहा था, आज वह गन्ने की मिठास को दुनिया में पहुंचा रहा है। 2013 के मुजफ्फरनगर दंगे में हथियारों के जखीरे बरामद हुए थे। उन जखीरों को हम तबाह करेंगे। सीएम ने अपील की कि दंगा के सरगनाओं को सबक सिखाने व उनके बारूद पर हैंडपंप का पानी डालने के लिए मिथिलेश पाल को जिताना है।

सीएम योगी ने कहा कि हर-जाति समुदाय को खुशी से त्योहार मनाने की स्वतंत्रता मिलना चाहिए। होली-दीवाली हर्षोल्लास से मनाई जाएगी तो ईद में भी बाधा पैदा नहीं होगी, लेकिन ताली दोनों हाथ से बजती है। आस्था से खिलवाड़ करने वाले लोग किसी के नहीं हैं। कुंदरकी में सीएम ने कहा कि मुरादाबाद का ब्रास उद्योग 2017 के पहले दम तोड़ रहा था। हमने बैरियर हटाए तो मुरादाबाद से 16 हजार करोड़ रुपये तक का एक्सपोर्ट होता है। इसमें सिर्फ हिंदू नहीं, बल्कि जिसके पास कला-हिम्मत है, वह हर कोई इससे जुड़ा है। योगी ने सपा के कुकृत्यों को गिनाकर कहा कि यह लोग विकास, युवा, महिला, व्यापारी, जनआस्था की विरोधी हैं। हर जनपद का सबसे बड़ा माफिया, दुष्कर्मी, गुंडा सपा से अवश्य जुड़ा होगा। वोट देना तो दूर, इनका नाम लेना भी महापाप का कारण है। इन्हें जितना दूर रखेंगे, उतना ही कल्याण होगा। 2003-07 व 2012-17 के बीच सपा शासन में अनुसूचित जाति के उत्पीड़न की सर्वाधिक घटनाएं हुईं। सपा ने महापुरुषों का सर्वाधिक अपमान किया है। गाजियाबाद के विकास कार्यों का जिक्र कर सीएम ने कहा कि कई कार्यक्रमों को नई ऊंचाई देनी है, दुग्धेश्वर मंदिर कॉरिडोर का निर्माण हो या गाजियाबाद में एम्स का सेटेलाइट सेंटर, एम्स जैसी सुविधा गाजियाबाद व पश्चिमी यूपी को प्राप्त हो। ऐसे कार्यक्रमों को बढ़ाने के लिए गाजियाबाद में फिर से भाजपा का विधायक बनना चाहिए। सीएम ने अपील की कि चुनाव के दिन आलस्य नहीं करना है, बल्कि अधिकाधिक वोट कर रिकॉर्ड वोट से कमल खिलाना है।

योगी सरकार छात्रवृत्ति से संवरेगा ओबीसी छात्रों का भविष्य

● योजनाओं की समय सारिणी का दूसरा चरण शुरू ●कक्षा 9 से 12 तक के विद्यार्थियों को मिलेगा लाभ, ऑनलाइन कर सकेंगे आवेदन

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

योगी सरकार ने शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कदम उठाया है। सरकार ने वित्तीय वर्ष 2024-25 के लिए अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) के छात्रों के लिए पूर्वदशम् और दशमोत्तर छात्रवृत्ति योजनाओं की समय सारिणी का दूसरा चरण शुरू कर दिया है। इस योजना का उद्देश्य पिछड़े वर्ग के छात्रों को शिक्षा के क्षेत्र में प्रोत्साहन देना और उनके आर्थिक बोझ को कम करना है।

पिछड़ा वर्ग कल्याण एवं दिव्यांगजन सशक्तिकरण राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) नरेंद्र कश्यप ने बताया कि राज्य में कक्षा 9 से 12 तक के छात्रों और अन्य उच्च कक्षाओं के लिए छात्रवृत्ति योजनाओं का द्वितीय चरण जारी कर दिया गया है। इसके तहत छात्रों को ऑनलाइन आवेदन करने और जल्द से जल्द आर्थिक सहायता प्रदान करने की प्रक्रिया निर्धारित की गई है। इस पहल का उद्देश्य राज्य के ओबीसी छात्रों को उच्च शिक्षा के लिए प्रोत्साहित करना है, ताकि वे बिना आर्थिक बाधाओं के अपनी पढ़ाई जारी रख सकें।

निदेशक पिछड़ा वर्ग कल्याण, डॉ. वंदना वर्मा ने जानकारी दी कि छात्रवृत्ति योजनाओं के लिए आवेदन प्रक्रिया को पूरी तरह से डिजिटाइज्ड कर दिया गया है, जिससे पारदर्शिता और त्वरित वितरण सुनिश्चित हो सके। ओबीसी छात्रों को पोर्टल पर ऑनलाइन आवेदन करना होगा। द्वितीय चरण की समय सारिणी के अनुसार 31 दिसंबर 2024 तक सभी शिक्षण संस्थानों को मास्टर डाटा में सम्मिलित किया जाएगा। इसके बाद 5 जनवरी 2025 तक विश्वविद्यालय, एफिलिएटिंग एजेंसियों और जिला विद्यालय निरीक्षकों द्वारा फीस आदि का सत्यापन पूरा किया जाएगा।

इस योजना के तहत कक्षा 9-10 के छात्रों के लिए पूर्वदशम् छात्रवृत्ति और कक्षा 11-12 के छात्रों के लिए दशमोत्तर छात्रवृत्ति के आवेदन 15 जनवरी 2025 तक किए जा सकते हैं। इसके बाद 18 जनवरी 2025 तक शिक्षण संस्थानों को छात्रों के आवेदन सत्यापित करने और आगे बढ़ाने के निर्देश दिए गए हैं। इस पूरी प्रक्रिया का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि छात्रों को समय पर वित्तीय सहायता मिल सके और उनकी पढ़ाई में कोई रुकावट न आए।

सरकार ने यह भी सुनिश्चित किया है कि छात्रवृत्ति की राशि छात्रों के बैंक खातों में प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण (डीबीटी) के माध्यम से भेजी जाए। 25 फरवरी 2025 तक सभी पात्र छात्रों को पीएफएमएस (पब्लिक फाइनेंशियल मैनेजमेंट सिस्टम) के माध्यम से छात्रवृत्ति की राशि वितरित कर दी जाएगी। इस त्वरित प्रक्रिया से राज्य में शिक्षा के स्तर को और बेहतर बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण प्रगति होगी।

निदेशक पिछड़ा वर्ग कल्याण, डॉ. वंदना वर्मा ने बताया कि योगी सरकार शिक्षा के क्षेत्र में सुधार के लिए निरंतर प्रयासरत है। पिछड़ा वर्ग के छात्रों के लिए इस छात्रवृत्ति योजना का उद्देश्य न केवल उनकी आर्थिक मदद करना है, बल्कि उन्हें समाज की मुख्यधारा में लाना और उच्च शिक्षा के अवसर प्रदान करना भी है। यह योजना राज्य के पिछड़े वर्ग के छात्रों को आत्मनिर्भर और सशक्त बनाने की दिशा में एक बड़ा कदम है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश सरकार की यह पहल राज्य के युवाओं के भविष्य को उज्जवल बनाने में सहायक सिद्ध होगी। इस योजना से लाखों छात्रों को लाभ होगा और उनके लिए शिक्षा की राह को और भी सुगम बनाया जाएगा।

सपा प्रमुख को विदेश घूमने से ही फुर्सत नहीं: भूपेन्द्र सिंह चौधरी

● अखिलेश के पास परिवारवाद के अलावा किसी के लिए समय नहीं

लखनऊ। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष भूपेंद्र सिंह चौधरी ने सपा प्रमुख अखिलेश यादव के ट्वीट पर हमला करते हुए कहा कि जो प्रदेश की जनता के बीच ही नहीं जाते है, उन्हें भला कैसे उत्तम उत्तर प्रदेश की उपलब्धि के बारे में पता चलेगा। जिन्हें विदेश घूमने से ही फुर्सत नहीं है तो प्रदेश में क्या हो रहा है, उन्हें कैसे पता चलेगा। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि भाजपा उपचुनाव की सारी नौ की नौ सीटें जीत रही है। प्रदेश की जनता ने भाजपा प्रत्याशी को चुनाव से पहले ही जीत का सेहरा पहना दिया है। सपा प्रमुख को अगर ये देखना है तो उन्हें जनता के बीच जाना पड़ेगा, लेकिन उनके पास परिवारवाद के अलावा किसी के लिए समय नहीं है।

प्रदेश अध्यक्ष भूपेंद्र चौधरी ने अखिलेश यादव पर करारा हमला करते हुए कहा कि जो जनता के बीच नहीं जाता, वही असली डरा हुआ इंसान है क्योंकि वह जनता के सवालों के जवाब नहीं दे सकता। अखिलेश यादव जानते हैं कि वह जनता के बीच जाएंगे तो उन्हें उनकी पार्टी के नेताओं द्वारा किये जा रहे कुकृत्यों का जवाब उन्हें जनता को देना होगा, जो उनके पास नहीं है। इस उपचुनाव में सपा प्रमुख को उनके ही कार्यकर्ता चुनाव हराएंगे। वह इस बार लगातार उनकी अनदेखी का हिसाब करेंगे। जनता भी सपाई गुंडों को जवाब देने के लिए बेताब है। वह वोट के जरिये समाजवादी पार्टी से हिसाब चुकता करेगी। सपा के कार्यकर्ता प्रदेश की बेटियों की इज्जत के साथ खिलवाड़ करने से बाज नहीं आ रहे हैं। भाजपा सरकार बेटियों की सुरक्षा के लिए पूरी दृढ़ता से काम कर रही है। इसे जनता बखूबी जानती है।

गोरखपुर विवि की वीसी का एबीवीपी के कार्यक्रम का निमंत्रण बांटना निहायत शर्मनाम: अजय राय

लखनऊ। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अजय राय ने कहा है कि दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय की क्रीड़ा संकुल (मुख्य मैदान) पर हो रहे अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के 70 वें राष्ट्रीय अधिवेशन के निमित्त भूमि पूजन समारोह का आयोजन हो रहा है, जिसका आमंत्रण विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. पूनम टण्डन स्वयं बांट रही हैं। विश्वविद्यालय शिक्षकों के ग्रुप पर कुलपति और प्रति कुलपति शिक्षकों को आने के लिए बाध्य कर रहे हैं। राय ने जारी बयान में कहा कि शिक्षण संस्थानों के संघीकरण की कोशिश की जा रही है जिसकी हम घोर भर्त्सना करते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि आम छात्रों की शिक्षा एवं उनके विकास का पैसा संघ के विचारों को बढ़ाने एवं उसके अनुषांगिक संगठन एबीवीपी को मजबूत करने में खर्च किया जा रहा है, जो निंदनीय है। राय ने कहा कि यह घृणित कार्य सर्वोच्च शिक्षण संस्थान विश्वविद्यालय की कुलपति द्वारा सिर्फ सरकार की चाटुकारिता एवं पद पर बने रहने की लोलुप्ता की वजह से किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस पार्टी कुलपति द्वारा किये जा रहे इस निंदनीय कार्य की सख्त आलोचना करती है एवं राज्यपाल से इस पूर्वाग्रही कुलपति के खिलाफ कार्यवाही की मांग करती है।

शाहजहांपुर में जल्द शुरू होगी डबल लेन रामगंगा पुल के निर्माण की प्रक्रिया

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

उत्तर प्रदेश को कनेक्टिविटी के लिहाज से उत्तम प्रदेश बनाने के लिए प्रतिबद्ध योगी सरकार शाहजहांपुर डबल लेन युक्त रामगंगा पुल के निर्माण की प्रक्रिया जल्द शुरू करने जा रही है। कोलाघाट तहसील में रामगंगा व बैगुल नदी पर इस नए पुल का निर्माण किया जाएगा और इस कार्य को 137.02 करोड़ रुपए की लागत से पूरा किया जाएगा। उल्लेखनीय है कि नए पुल का निर्माण पुराने पुल के समीप ही किया जाएगा जिससे स्टेट हाइवे 163 पर यातायात सुगम होगा तथा जलालाबाद-शमशाबाद-मोहम्मदाबाद-सौरिख-बिधूना मार्ग पर कनेक्टिविटी बढ़ेगी। इस कार्य को उत्तर प्रदेश राज्य सेतु निगम लिमिटेड द्वारा पूरा किया जाएगा जिसकी तैयारी शुरू हो गई है। रामगंगा पुल के निर्माण के लिए सीएम योगी के मार्गदर्शन में एक कार्ययोजना तैयार की गई है जिस पर उत्तर प्रदेश राज्य सेतु निगम लिमिटेड द्वारा कार्य शुरू हो गया है। योजना के अनुसार, यह पुल 1802.14 मीटर लंबा और डबल लेन बेस्ड होगा जिसे पहुंच मार्गों के जरिए कनेक्टिविटी प्रदान की जाएगी। प्रक्रिया के अंतर्गत कुल 2,202.14 मीटर क्षेत्र में निर्माण व विकास कार्यों को पूरा किया जाएगा जिसमें 200 मीटर के दो कनेक्टिंग रोड समेत सुरक्षात्मक कार्यों को पूरा किया जाना निर्धारित है। डबल लेन पुल व कनेक्टिंग रोड्स के निर्माण व विकास कार्यों को पूरा करने के लिए डीटेल्ड प्रोजेक्ट रिपोर्ट (डीपीआर), आर्किटेक्चरल डिजाइन समेत प्रारंभिक चरण की रिपोर्ट निर्धारण प्रक्रिया विभाग में शुरू हो गई है और माना जा रहा है कि जल्द ही कार्यों को धरातल पर उतारने की प्रक्रिया भी शुरू हो जाएगी। इन सभी निर्माण व विकास कार्य को पूरा करने के लिए 24 महीने की अवधि निर्धारित की गई है। इसी के साथ, देवरिया के भाटपार रानी विधानसभा क्षेत्र के अंतर्गत केरवनिया घाट के समीप खनुआ नदी पर डबल लेन पुल के निर्माण व विकास की प्रक्रिया में तेजी लाने पर फोकस किया जा रहा है। यहां भी कनेक्टिंग रोड्स के निर्माण व सुरक्षा कार्यों की पूर्ति का कार्य पूरा किया जाएगा।

चंद पूंजीपतियों का खजाना भरना भारी पड़ेगा भाजपा सरकार को: गोप

लखनऊ/अंबेडकरनगर। चंद पूंजीपतियों का खजाना भरने के लिए महिलाओं किसानों नौजवानों बेरोजगारो छात्र-छात्राओं की समस्याओं जरूरत को नजर अंदाज करना मौजूदा सरकार को उपचुनाव में भारी पड़ेगा कटेहरी विधानसभा के मतदाताओं ने समाजवादी पार्टी के प्रत्याशी को भारी बहुमत से जीताने का मन बना लिया है। उक्त विचार समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय सचिव पूर्व कैबिनेट मंत्री अरविंद कुमार सिंह गोप ने विधानसभा कटेहरी उपचुनाव में गठबंधन प्रत्याशी शोभावती वर्मा के समर्थन में कस्बा भीठी, बनगांव, सम्मनपुर, सिंगरा आदि विभिन्न ग्रामों में आयोजित चौपालो में कहीं।

राष्ट्रीय सचिव गोप ने कहा कि भाजपा सरकार के झूठे वादों से सभी तंग आ चुके हैं मौजूदा सरकार ने सबसे ज्यादा नुकसान नौजवानों का किया है इसलिए नौजवानों को दुगनी ताकत से लगकर इस उपचुनाव में गठबंधन प्रत्याशी शोभावती वर्मा का समर्थन करते हुए उनको भारी बहुमत से चुनाव जीता कर अखिलेश यादव के हाथों को मजबूत करना होगा तभी छात्रों नौजवानों किसानों महिलाओं के सपने साकार होंगे। ग्राम चौपाल में मुख्य रूप से विधायक सुधाकर सिंह, पूर्व मंत्री शैलेंद्र यादव ललई, चंद्रशेखर सिंह, आत्रेय सिंह, अमर बहादुर सिंह, सुरेंद्र सिंह, रिंकू विश्वकर्मा,आकाश यादव, संतोष रावत,अरेंद्र सिंह प्रधान,गजेंद्र वर्मा, जयकरन,छेदा लाल वर्मा, कैलाश यादव सहित क्षेत्रीय प्रधान बीडीसी एवं गणमान्य लोग मौजूद रहे।

योगी सरकार ने लिया संज्ञान तो समस्या का हुआ समाधान

35 हजार बीसी सखियों के डिवाइस दोबारा हुए एक्टिवेट

● राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन से जुड़ीं बीसी सखियां रोजाना 40 करोड़ से अधिक का करतीं हैं वित्तीय लेनदेन

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

मुख्यमंत्री योगी प्रदेशवासियों की खुशहाली को लेकर हमेशा संवेदनशील रहते हैं। उनकी यह संवेदना अक्सर देखने को भी मिलती है। ऐसा ही एक मामला हाल में सामने आया है, जिसमें यूनिक आईडीफिकेशन अथॉरिटी ऑफ इंडिया (यूआईडीएआई) ने फिंगरप्रिंट सेंसिंग मशीन की एल-0 डिवाइस को बंद करने का निर्देश दिया, लेकिन उसकी जगह दूसरा ऑप्शन नहीं दिया। इस पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अधिकारियों को यूआईडीएआई से बातचीत कर जल्द जल्द से मामले को निस्तारित करने के निर्देश दिये। सीएम योगी के निर्देश पर मुख्य सचिव ने विभाग के उच्च अधिकारियों से बात कर दोबारा डिवाइस को शुरू कराया। बता दें कि यूआईडीएआई के फैसले से प्रदेश की 35 हजार से अधिक बीसी सखी समेत कुल 3 करोड़ लोग प्रभावित हुए थे।

मुख्य सचिव मनोज कुमार सिंह ने बताया कि राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन से 35 हजार से अधिक बीसी सखियां जुड़ी हुई हैं, जो रोजाना 40 करोड़ से अधिक का वित्तीय लेनदेन करती हैं। उन्हे लेनदेन के लिए यूआईडीएआई द्वारा फिंगरप्रिंट डिवाइस एल-0 दी गयी है। बीसी सखी लेनदेन के लिए आधार प्रमाणीकरण करती है, लेकिन यूआईडीएआई ने एक आदेश जारी करते हुए एल-0 डिवाइस का इस्तेमाल करने वाली 10 कंपनियों के 19 मॉडल पर 31 अक्टूबर को रोक लगा दी। यूआईडीएआई के आदेश पर इन डिवाइस को 31 अक्टूबर को बंद कर दिया गया। इनकी जगह एल-1 डिवाइस का इस्तेमाल किया जाना था, लेकिन इनकी ट्रेनिंग ही नहीं दी गयी। इसकी वजह से 35 हजार से अधिक बीसी सखियों का लेनदेन प्रभावित हो गया। मुख्यमंत्री योगी को मामले की जानकारी हुई तो उन्होंने मुख्य सचिव मनोज कुमार सिंह से यूआईडीएआई के अधिकारियों से बात करके समस्या का हल निकालने के निर्देश दिये।

सीएम योगी के निर्देश पर मुख्य सचिव ने यूआईडीएआई के अधिकारियों से बात की। अभी तक एल-1 के संचालन की ट्रेनिंग नहीं दी गयी है, जिसके वजह से बीसी सखियों को लेन देन प्रभावित हो रहा है। साथ ही बीसी सखी नई मशीन को खरीदने में फिलहाल सक्षम नहीं हैं। ऐसे में पुरानी डिवाइस को दोबारा शुरू करने का आग्रह किया। यूआईडीएआई के अधिकारियों ने मामले की गंभीरता को समझते हुए 6 नवंबर को दोबारा पुरानी डिवाइस को शुरू कर दिया, जिसके बाद लेनदेन शुरू हो गया।

भाजपा ने अर्थव्यवस्था को अनर्थ व्यवस्था बना दिया: अखिलेश यादव

● डालर के मुकाबले रुपया कमजोर होने पर सपा अध्यक्ष ने पीएम मोदी के नोटबंदी के फैसले पर उठाए सवाल

लखनऊ। सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कहा कि भारतीय अर्थव्यवस्था के इतिहास में नोटबंदी के नाम पर एक पूरे-का-पूरा अध्याय सिर्फ़ काले रंग से ही छापा जाएगा। नोटबंदी की 8वीं सालगिरह के ठीक एक दिन पहले ही, रुपया डॉलर के मुक़ाबले सबसे कमज़ोर स्थिति में आ गया। बुधवार को अमेरिकी डॉलर के मुकाबले रुपया 84.23 प्रति डॉलर पर खुला। तेजी से रुपए में यह गिरावट चिंतनीय है। जनता पूछ रही है क्या ये नोटबंदी की नाकामयाबी की वजह से हुआ या भाजपा की नकारात्मक नीतियों की वजह से। अब क्या भाजपाई फिर ये कहेंगे कि देश के इतिहास में रुपया डॉलर के मुक़ाबले सबसे निचले स्तर पर पहुँचकर 'रिकार्डतोड़' नहीं गिरा है बल्कि डॉलर ऊपर उठा है। भाजपा ने अर्थव्यवस्था को अनर्थ व्यवस्था बना दिया है।

अखिलेश ने कहा कि भाजपा सरकार ने देश की अर्थ व्यवस्था को बर्बाद कर दिया, आज जो चरम महंगाई, बेरोजगारी दिखाई दे रही है उसके लिए भाजपा सरकार जिम्मेदार है। भाजपा सरकार ने महंगाई कम करने के झूठे वादे किए लेकिन 10 साल में महंगाई कम होने के बजाय लगातार बढ़ती रही हर चीज के दाम बढ़ गए। आम जनता महंगाई बेरोजगारी से तबाह है।

यादव ने कहा कि भाजपा सरकार ने देश की जनता को टैक्सों के जाल में फंसा कर लूटने का काम कर रही हैं। जनता महंगाई के चक्रव्यूह में फंसकर छटपटा रही है। सब्जियों, दालों, तेल के दामों में मानों आग सी लगी हैं। मुनाफाखोरी और जमाखोरी पर कोई लगाम नहीं है। भाजपा सरकार भ्रष्टाचार को बढ़ावा दे रही है। जनता महंगाई से कराह रही है। भाजपा के मित्र उद्योगपति मालामाल हो रहे हैं। गरीब परिवारों की तो छोड़िए निम्न, मध्यम वर्गीय परिवारों के लिए खाने-पीने के सामान उनकी पहुंच से बाहर जा रहे हैं। अखिलेश यादव ने कहा कि केंद्र और प्रदेश की भाजपा सरकार जनता की जेब काटकर बड़े उद्योगपतियों को मुनाफा करा रही है। भाजपा सरकार की गलत आर्थिक नीतियों से गरीब और गरीब होता जा रहा है जबकि अमीर और अमीर होता जा रहा है। क्या यही सबका साथ, सबका विकास है?

यादव ने कहा कि पांच ट्रिलियन और एक ट्रिलियन डॉलर इकोनामी बनाने का दावा करने वाली डबल इंजन भाजपा सरकार पीडीए की एकजुटता से डरी हुई हैं। उसकी नकारात्मक बातों से साफ दिखाई पड़ रहा है कि वह उपचुनाव की हार से बहुत डरी हुई है। भाजपा की अपनी कोई उपलब्धि न होने से वह ऊलजुलूल की बाते करके लोगों को गुमराह करने में लगे हुए हैं। भाजपा की असलियत से सभी अवगत हो चुके हैं। जनता अब भाजपा की नकली मुस्कान और बहकावे में नहीं आने वाली है।

उपचुनाव में सभी नौ सीटें हार रही है भाजपा

सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने कहा कि डरे हुए इंसान की सबसे बड़ी पहचान उसकी नकारात्मक बाते होती हैं। जिनके पास अपनी कोई उपलब्धि नहीं है वह दूसरों की बात करते हैं। नकली मुस्कान असलियत नहीं छुपा सकती है। अगर प्रतिशत में समझों तो सौ की सौ। भाजपा उपचुनाव में सभी नौ-की-नौ सीटे हार रही है। पूरी भाजपा घबराई हुई है। लोकसभा चुनाव की हार से डरी भाजपा उपचुनाव का सामना नहीं कर पा रही है। उन्होंने कहा कि भाजपा की 8 साल की सरकार की कोई उपलब्धि नहीं है। जिसे जनता के बीच बताये। जनता भाजपा का सूपड़ा साफ करने को तैयार है। इसीलिए भाजपा नेतृत्व बदहवासी में अर्नगल और निम्न स्तरीय बयानबाजी पर उतर आया है। जनता सब कुछ देख रही है। भाजपा को कभी माफ नहीं करेगी।

गौ-तस्कर गिरोह का सरगना गिरफ्तार

लखनऊ। गौ-तस्कर गिरोह के सरगना और 25 हजार के ईनामी गुलाम वारिस उर्फ चिकने को एसटीएफ ने बलरामपुर जिले से गिरफ्तार किया है। अभियुक्त गुलाम वारिस उर्फ चिनके पुत्र जुम्मन ने पूछताछ में बताया कि वह पिछले काफी समय से गौ-वंशीय पशुओं की तस्करी का काम करता है। वह अपने साथियों के साथ मिलकर उत्तर प्रदेश के विभिन्न जनपदों सहित अन्य प्रदेषों के भी गोवंशी पशुओं को खरीदकर बिहार, बंगाल आदि राज्यों में उसकी सप्लाई करता है। गोवध निवारण अधिनियम, थाना गैसडी, जनपद बलरामपुर, में वांछित एवं ईनामी होने के उपरान्त मुम्बई में रहने लगा था। एक सप्ताह पहले मुम्बई से आकर यहां पर छुपकर रह रहा था। गिरफ्तार अभियुक्त गुलाम वारिस उर्फ चिनके पुत्र जुम्मन को थाना गैसडी, जनपद बलरामपुर में पंजीकृत मुकदमे में दाखिल किया गया है। अग्रिम विधिक कार्यवाही स्थानीय पुलिस द्वारा की जा रही है।

रोजगार सृजन में बस्ती जिला प्रदेश में अव्वल, आजमगढ़ का दूसरा स्थान

● यूपी के गांवों में चालू वित्तीय वर्ष में अब तक 60.17 लाख परिवारों को मिला रोजगार

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की प्रतिबद्धता और प्रशासनिक सजगता से उत्तर प्रदेश का ग्रामीण परिवेश तेजी के साथ विकास की राह पर आगे बढ़ रहा है। मनरेगा योजना के माध्यम से सीएम योगी ने ग्रामीण क्षेत्रों को रोजगार उपलब्ध कराने, महिलाओं का सशक्तिकरण करने और बुनियादी सुविधाओं में सुधार लाने के लिए कई तरह के प्रयासों को मूर्तिरूप दिया है। सीएम योगी की अगुवाई में प्रदेश में 2024-25 के चालू वित्तीय वर्ष में अब तक 60.17 लाख परिवारों को गांव में रोजगार से जोड़ा गया है। रोजगार सृजन में बस्ती जिला प्रदेश में नंबर वन प्रदेश के बस्ती जिले ने मनरेगा के तहत रोजगार सृजन में प्रदेश में शीर्ष स्थान प्राप्त किया है। बस्ती में अब तक 1,95,717 मांगों के सापेक्ष 1,95,714 परिवारों को गांव में रोजगार उपलब्ध कराया जा चुका है, जिससे 79,40,929 मानव दिवस का सृजन हुआ है। इस प्रयास के लिए बस्ती को प्रदेश में पहला स्थान प्राप्त हुआ है, जबकि आजमगढ़ और जौनपुर क्रमश: दूसरे और तीसरे स्थान पर हैं। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का स्पष्ट निर्देश है कि मनरेगा के तहत अधिक से अधिक मानव दिवस सृजित किए जाएं ताकि ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों को अपने गांव में ही रोजगार मिल सके। ग्राम्य विकास आयुक्त जीएस प्रियदर्शी ने संबंधित अधिकारियों को यह निर्देश दिए हैं कि मनरेगा योजनाओं का क्रियान्वयन और बेहतर तरीके से हो ताकि ग्रामीण लोगों के लिए रोजगार के अवसर सुनिश्चित किए जा सकें।

मनरेगा के अंतर्गत न केवल रोजगार बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों के समग्र विकास के लिए कई योजनाओं का संचालन किया जा रहा है। रोजगार के साथ-साथ आवास, पेयजल, महिला सशक्तिकरण, सिंचाई, सड़क निर्माण और पौधरोपण जैसी महत्वपूर्ण योजनाएं शामिल हैं। इन योजनाओं का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों की समग्र प्रगति और लोगों के जीवन स्तर में सुधार करना है। मुख्यमंत्री योगी की सरकार ने मनरेगा को ग्रामीण विकास का महत्वपूर्ण साधन बना दिया है। उनके नेतृत्व में, उप्र के गांवों में न केवल लोगों को रोजगार मिल रहा है बल्कि गांवों का ढांचा भी सशक्त हो रहा है। रोजगार के साथ-साथ बुनियादी सुविधाओं की उपलब्धता और सशक्तिकरण की दिशा में हुए प्रयासों से ग्रामीण क्षेत्र नई ऊंचाइयों की ओर अग्रसर हैं।

मिट्टी खनन का कारोबार खनन माफिया बेखौफ प्रशासन मौन

● एनजीटी के आदेशों का उड़ाया जा रहा मखौल

● देहात में धड़ल्ले से चल रहा अवैध मिट्टी खनन, पुलिस जानकर भी बनी अनजान

हुसैनगंज (फतेहपुर)। हुसैनगंज थाना क्षेत्र में पुलिस की मिलीभगत से मिट्टी खनन का अवैध कार्य जोरों पर है। खनन माफिया धरती का सीना चीर रहे हैं। जिम्मेदार मूकदर्शक बने हुए हैं। इस समस्या पर लगाम लगाने को लेकर जिम्मेदार खनन माफिआओं पर अंकुश नहीं लगा पा रहा है। सूचना के बाद भी स्थानीय प्रशासन मौन बैठा हुआ है। लोगों का आरोप है कि खनन माफिया पुलिस को मोटी रकम देकर यह अवैध धंधा कर रहे हैं। दिन रात में ट्रैक्टर–ट्राली मिट्टी खनन कर राजस्व विभाग को चूना लगाया जा रहा है। स्थानीय पुलिस की नाक के नीचे चल रहे इस अवैध खनन पर खनन अधिकारियों से लेकर स्थानीय पुलिस तक ने आंखें बंद कर रखी हैं। जबकि यह खनन माफिया इतने बेखौफहो गए हैं कि थाना, चौकी के बगल से ही मिट्टी भरे हुए ट्रैक्टर तेज रफ्तार सरपट भरते रहते हैं। न तो पुलिस की परवाह है और न ही प्रशासन का डर। क्षेत्र में जगह–जगह खनन का कार्य जोरों पर चल रहा है। जिससे तहसील प्रशासन व पुलिस विभाग की कार्यप्रणाली भी सवालों के घेरे में है।

देर भोर पहर से रात्रि तक ट्रैक्टर–ट्राली थाना चौकी मार्ग पर देखे जाते हैं। सूत्रों की माने तो अपनी चौकी क्षेत्र के मदारीकापुरवा में खनन माफिया जेसीबी ट्रैक्टर–ट्राली गरजती हैं, लेकिन असनी चौकी पुलिस द्वारा नजरअंदाज कर दिया जाता है। इन खनन माफियाओं के सामने नतमस्तक होता दिखाई दे रहा है। प्रशासन यही सब जिम्मेदारों की कार्यप्रणाली पर सवालिया निशान लगा रही है। इसके बावजूद खनन विभाग सबकुछ जानकर अनजान बना हुआ है। इस सरकार को राजस्व का भारी नुकसान हो रहा है। अवैध खनन के लिए बदनाम है। हुसैनगंज थाना क्षेत्र के महेशपुर में अवैध खनन से भरे ट्रैक्टर–ट्राली मिट्टी ले जाते साफ देखे जा सकते हैं। एनजीटी के आदेशों को पूरी तरह हवा में उड़ाते हुए खनन माफिया, पुलिस, प्रशासन और खनन विभाग तीनों से सेटिंग कर धड़ल्ले से अपना काम कर रहे हैं। क्षेत्र में जरुरत मंदों को रातों–रात खनन कर सैकड़ों ट्रालियां डंपर सड़कों पर दौड़ रहे हैं। मिट्टी खनन की शिकायतें लोगों ने कई बार जिम्मेदार अधिकारियों से की लेकिन खनन माफिया पर कोई कार्रवाई नहीं की गई।

अवैध वसूली न देने पर ट्रक चालको को मारकर कर देते है जख्मी

● जिला पंचायत बैरियर गैर जिले व गैर प्रांत में बना चर्चा का विषय, कोई सुनने वाला नही

हमीरपुर। मौरंग खदानों से निकलने वाले ट्रकों से टैक्स लेने वाले जिला पंचायत बैरियर में ट्रक चालकों से मारपीट कर मनमानी पैसा वसूला जाता है,जिससे गैर जिले व गैर प्रांत के चालको ने जिले में आना ही छोड दिया है। यही नही मनमानी का आलम यह है कि यदि ट्रक चालको ने बैरियर में लगे गुर्गो के मुहंमागी पैसा नही दिया तो मारपीट कर जख्मी कर देते है। इस मामले की शिकायत गैर जिले की पुलिस से की गया है मगर जिला पंचायत प्रशासन इस ओर कोई ध्यान नही दे रहा है।

जिला पंचायत बैरियर हमीरपुर का हमेशा चर्चा में रहता है। कई सालों से पंचायत अपनी मनमर्जी से ठेका उठाता है इसके बाद ठेकेदार अपने अनुसार गुंडई के बल पर ट्रक चालको से वसूली करता है। खदान से दूरी बैरियर लगाने व हर गाड़ी की धनराशि निश्चित है मगर ठेकेदार अपनी मर्जी के अनुसार बैरियर लगाता है और वसूली करता है। बैरियर में भारी अनियमितताएं की जा रही है। मगर जिला पंचायत के अपर मुख्य अधिकारी इस मामले में चुप्पी साधे हुये बैठे हुये है। जोट्रक अन्य जिले से खनन शुल्क देकर आते है उनसे कतई शुल्क लेने का प्राविधान नही है मगर सभी ट्रको से वसूली की जाती है बैरियर को लेकर अन्य जिलो में व गैर प्रांत में शासन व प्रशासन की छवि खराब हो रही है मगर जिला पंचायत के अपर मुख्य अधिकारी इस ओर कोई ध्यान नही दे रहे है। चालको का कहना है कि जब वह बैरियर गुजरते है तो उनकी रुह कांप जाती है। कई चालकों को जख्मी किया जा चुका है।

उगते सूर्य को दिया अर्घ्य, छठी मईया को लगा ठेकुआ का भोग

● चार दिवसीय छठ महापर्व उत्सव के साथ हुआ संपन्न

● व्रतियों ने उदीयमान सूर्य को अर्घ्य देकर मांगी सुख-समृद्धि

संवाददाता। फतेहपुर

चार दिवसीय लोक आस्था का महापर्व छठ शुक्रवार को संपन्न हो गया। व्रतियों ने उगते हुए सूर्य को अर्घ्य दिया और छठी मैया को नमन किया। सुबह-सुबह भगवान भास्कर के उषा किरण को सभी ने पूरी श्रद्धा से आराधना की। सूर्यदेव को अर्घ्य देने के बाद 36 घंटे का महापर्व संपन्न हो गया। ओमघाट के गंगा घाट, बांके बिहारी मंदिर, पीएसी परिसर समेत अन्य स्थानों में छठ पूजा की गई।

36 घंटे का निर्जला उपवास के महापर्व के दौरान नदी और तालाबों में छठ व्रतियों के श्रद्धा का विहंगम दृश्य देखने को मिला। शुक्रवार को उगते सूर्य को अर्घ्य देने के बाद छठ व्रतियों ने पूरे विधि विधान से छठी मैया की पूजा-अर्चना की। इसके बाद व्रत का पारण किया। व्रतियों का 36 घंटे का निर्जला उपवास खत्म हुआ। खासकर पूर्वांचल में बड़े ही उत्साह के साथ छठ पूजा मनाया जाता है। दोआबा के भी कई स्थानों में व्रतियों ने पानी में उतरकर छठी मैया की आराधना की। यह व्रत छठी मैया और भगवान भास्कर को समर्पित होता है। मान्यता है कि छठी मैया की पूजा से घर में सुख, समृद्धि और वंश की वृद्धि होती है।

चार दिनों तक चला महापर्व: पूर्वांचल के लोगों ने बताया कि इस व्रत के कठिन नियम हैं, जिसमें व्रती 36 घंटे का निर्जला उपवास करती हैं। सूर्य उपासना का महापर्व छठ 5 नवंबर को नहाए खाए के साथ शुरू हुआ था। इस दिन व्रती स्नान ध्यान कर लौकी की सब्जी, चना दाल और चावल का भोग लगाए थे। चार दिन बाद शुक्रवार को उगते सूर्य को अर्घ्य देकर उपासना की गई। कौन हैं छठी मईया: माना जाता है कि छठी मईया सूर्यदेव की बहन हैं और उन्हीं को प्रसन्न करने के लिए सूर्य और जल की महत्ता को मानकर आराधना की जाती है। मार्कण्डेय पुराण में उल्लेख है कि सृष्टि की अधिष्ठात्री प्रकृति की देवी ने खुद को 6 भागों में बांटा है। उनके छठे अंश को सर्वश्रेष्ठ मातृ देवी के रूप में जाना जाता है। छठे स्वरूप को ही छठी मईया के नाम से जाना जाता है।

पुराणों में छठी मईया की चर्चा: मां कात्यायनी पुराणों में इन्हें मां दुर्गा के छठे स्वरूप कात्यायनी कहा गया था। इसलिए दिवाली से छह दिन बाद माता के षष्ठी (छठा) सनरूप छठी मईया की आराधना की जाती है। सनातन धर्म में बच्चे के जन्म के छठे दिन इन्हीं माता की पूजा की जाती है।

25 हजार का ईनामी अपराधी पुलिस मुठभेड में गिरफ्तार

कानपुर देहात। एसपी बीबीजीटीएस मूर्ति के निर्देशन में अपराध नियन्त्रण की दिशा में घटनाओं की रोकथाम व खुलासे हेतु चलाये जा रहे 'जागते रहो' विशेष अभियान के क्रम में, अकबरपुर पुलिस द्वारा बारा जोड़ कानपुर इटावा हाइवे पर संदिग्ध व्यक्ति/ वस्तु/वाहन की चेकिंग की जा रही थी कि तभी एक बाइक आती दिखाई दी उक्त बाइक पर दो व्यक्ति सवार थे जिनको रोकने का प्रयास किया गया परन्तु बाइक सवार व्यक्तियों ने पुलिस को देखकर पुलिस पर फायरिंग करते हुए भागने का प्रयास किया तो बाइक फिसलकर गिर गई तथा पुलिस द्वारा भागकर आवश्यक बल का प्रयोग करते हुए एक व्यक्ति को ग्राम मिसिरपुर जाने वाली सडक पर हाइवे से करीब 100 मी. अंदर समय करीब 01.35 बजे गिरफ्तार किया गया तथा दूसरा व्यक्ति अंधेरे का फायदा उठाकर पुलिस पर फायरिंग करते हुए भाग गया। अपराधी की पहचान थाना अकबरपुर पर पंजीकृत चोरी के विभिन्न मुकदमों में वांछित चल रहे रू0 25,000 के पुरस्कार घोषित अभियुक्त मनोज सिंह पुत्र वीरेन्द्र उर्फमुन्ना निवासी रेउरी थाना सचेण्डी कानपुर उम्र 28 वर्ष के रूप में हुई। कब्जे से 01 अदद अवैध तमंचा 315 बोर व 01 अदद खोखा कारतूस, 01 अदद जिन्दा कारतूस बरामद हुआ। गिरफ्तारी व बरामदगी के आधार पर मुअस 524/2024 धारा 3/25/27 आर्म्स एक्ट व धारा 109 बीएनएस बनाम मनोज सिंह पुत्र वीरेन्द्र उर्फ मुन्ना निवासी रेउरी थाना सचेण्डी कानपुर नगर उम्र 28 वर्ष, राकेश उर्फ ठाकुर पुत्र अज्ञात निवासी देविनपुरवा थाना सचेण्डी कानपुर नगर (भागा हुआ) पंजीकृत किया गया।

पबजी गेम खेलते खेलते आठवी के छात्र ने लगायी फांसी

राठ। पबजी गेम खेलते खेलत आठवी के विद्यार्थी ने फांसी लगाकर जान दे दी. स्वजन बिना पोस्टमार्टम कराए शव को घर ले गए। कस्बे के तहसील परिसर के पीछे पठानपुरा मोहल्ला निवासी राम प्रताप वर्मा ने बताया कि वह तहसील परिसर में संग्रह लेखक के पद पर कार्यरत हैं। उसके तीन पुत्र हनी अभिषेक और 14 वर्षीय मनीष वर्मा है। उसका सबसे छोटा पुत्र मनीष कस्बे के एक इंग्लिश मीडियम में कक्षा आठवीं का छात्र था। वह दिन रात पबजी गेम खेलता रहता था। रात में भी वह पबजी गेम खेलता रहता था। बताया चार दिनों से उसे बुखार आ रहा था। जिसके कारण वह स्कूल नहीं जा रहा था। शुक्रवार की सुबह करीब दस बजे उसने पुत्र को दवा खिलाई। इसके बाद मनीष दूसरी मंजिल पर जाकर कमरे में चला गया। जब वह कमरे में गया तो दरवाजा अंदर से बंद था। उसने आवाज लगाई। लेकिन दरवाजे नहीं खुले। बताया कि जब उसकी मां ने खिड़की से देखा तो पुत्र चादर के सहारे फंसे से लटका हुआ था।

शिक्षिका तबादला किया नही शिकायतकर्ताओं पर दर्ज की रिपोर्ट

मौदहा (हमीरपुर)। मौदहा विकास खंड के गांव सिजनौडा के प्राथमिक विद्यालय से हेडमास्टर नेहा गुप्ता का तबादला नही किया गया बल्कि हेडमास्टर ने एक ग्रामीण व शिक्षा मित्र पर रिपोर्ट दर्ज करा दी है सैकड़ों की संख्या में मासूम बच्चो सहित महिलायें मौदहा तहसील गेट पहुंचकर नारे बाजी कर सड़क जाम कर दी जिस पर उपजिलाधिकारी ने ज्ञापन लेकर कार्यवाही की बात कहते हुए जाम खुलवाया। ग्रामीणों ने 48 घंटे में कार्यवाही न होने पर जिले में बड़े आंदोलन की चेतावनी दी है। हेडमास्टर नेहा गुप्ता कार्यशैली से परेसान अभिभावकों ने बीती 28 अक्टूबर को उपजिलाधिकारी को शिकायती पत्र देकर प्रधानाध्यापिका पर शिक्षण कार्य को सही ठंग से न करने व मिडडे मिल के भोजन में अनिमितताओं की शिकायत व अभिभावकों से अभद्र व्यवहार करने की शिकायत कर तत्काल उसे विद्यालय से हटाए जाने की मांग की थी साथ ही ग्रामीणों ने कहा था कि जब तक उसे स्कूल ट्रांसफर अन्यंत्र नही किया जाता तब तक वह अपने बच्चों को स्कूल नही भेजेंगे ग्रामीणों का आरोप है कि शिकायत के बाद उक्त अध्यापिका ने ग्रामीणों को फर्जी मुकदमे में फंसाने की धमकी भी थी और उसी के बाद शिक्षिका ने तीन नवंबर 24 को प्रधानाध्यापिका द्वारा गांव के हरिओम साहनी व शिक्षामित्र शांति देवी सहित आठ अज्ञात लोगों पर शिक्षण कार्य मे बाधा व विद्यालय अभिलेखों के साथ छेड़छाड़ करने जैसे संगीन धाराओं में मुकदमा दर्ज करवा दिया जिसकी भनक लगने के बाद ग्रामीणों में गुस्सा फूट पड़ा और सैकड़ों की तादाद में मौदहा तहसील पहुंच मुख्य मार्ग में छोटे.छोटे मासूम बच्चों के साथ महिला पुरुषों के साथ सड़क में बैठकर जाम लगाते हुए नेहा गुप्ता हाय हाय, शिक्षा विभाग मुर्दाबाद, पुलिस प्रशासन मुर्दाबाद के जमकर के नारेबाजी की।

नावों के लिए विशेष अभियान मतदाता सूची में नाम जोड़ने और सुधार का मौका

फर्रुखाबाद। आगामी विधानसभा चुनावों के मद्देनजर भारत निर्वाचन आयोग द्वारा मतदाता सूची में नाम जोड़ने और सुधार के लिए विशेष अभियान की घोषणा की गई है। यह अभियान 10 नवंबर से 25 नवंबर तक जिले के सभी मतदान केंद्रों पर चलाया जाएगा। निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार, जिन व्यक्तियों की आयु 1 जनवरी 2025 तक 18 वर्ष पूरी हो चुकी हैए वे इस अभियान के तहत अपने नाम मतदाता सूची में दर्ज करवा सकते हैं। यदि किसी मतदाता की जानकारी में कोई त्रुटि है या उन्हें सुधार की आवश्यकता हैए तो वे फॉर्म 6ए 6बीए 7 और 8 के माध्यम से आवेदन कर सकते हैं। जिला निर्वाचन अधिकारी और उप जिला निर्वाचन अधिकारी समेत अन्य संबंधित अधिकारी सक्रिय रूप से निगरानी करेंगे। सभी मतदान केंद्रों पर विशेष पर्यवेक्षक नियुक्त किए गए हैंए जो मतदाताओं की सुविधा और आवश्यक जानकारी के लिए उपलब्ध रहेंगे।

क्विक न्यूज

प्रदेश सरकार किसी दुर्घटना में मृत्यु होने पर कृषक के परिवार को दे रही है 5 लाख रुपये

कानपुर देहात। हमारे देश का किसान अपनी फसल की बुवाई से लेकर कटाई तक बड़ी जीतोड़ मेहनत करता है। चाहे गर्मी का मौसम होए सर्दी का मौसम हो या बरसात का मौसम हो हमारे देश का किसान हर मौसम से लड़ते हुए बहुत मेहनत से फसल को घर तक ले आता है। इस दौरान ठंड एगर्मी या आकाशीय बिजली गिरने ए किसी दुर्घटना से कभी.कभी किसानों की मौत भी हो सकती है। इस तरह असामयिक मौत या दुर्घटना हो जाने से किसान परिवार के ऊपर दुखों का पहाड़ टूट पड़ता है। इस दौरान किसानों की मदद को कोई भी आगे नही आता है। इसी समस्या को दृष्टिगत रखते हुए उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी ने उप्र मुख्यमंत्री कृषक दुर्घटना कल्याण योजना की शुरूआत की है। यदि किसी किसान की असामयिक मृत्युध्दिव्यांगता होती है तो उसके परिवार को रु. 05 लाख तक की आर्थिक सहायता दी जाती है। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री द्वारा प्रदेश के किसानों को सामाजिक सुरक्षा प्रदान करने हेतु उप्र मुख्यमंत्री कृषक दुर्घटना कल्याण योजनाश् की शुरूआत 2019 में शुरू की गई थी और जनवरी 2020 में इसे कैबिनेट की मंजूरी दी गई थी। इस योजना का संचालन जिले के जिलाधिकारी द्वारा किया जा रहा है। मुख्यमंत्री कृषक दुर्घटना कल्याण योजना के अंतर्गत जो किसान 14 सितंबर 2019 के बाद से किसी दुर्घटना में शिकार हुए हैं उन्हें इस योजना का लाभ प्रदान किया जा रहा है। किसानों की आजीविका का एकमात्र साधन कृषि ही होता हैए अगर किसी किसान की दुर्घटनावश मृत्यु हो जाती हैए या वह शारीरिक रूप से अक्षम हो जाता हैए जिसके कारण वह कृषि करने के लायक नहीं रह जाता तो उसके परिवार की जीविका चलाने के लिए कोई साधन नहीं बचता है। इसी समस्या से निपटने के लिए राज्य सरकार ने इस योजना को शुरू करने का निर्णय लिया है। उप्र मुख्यमंत्री कृषक दुर्घटना कल्याण योजना के तहत किसी किसान की दुर्घटनावश असामयिक मृत्यु हो जाती है तो उसे उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा रु5 लाख तक का मुआवजा प्रदान किया जाता है और यदि किसान की मृत्यु नहीं होती है फिर भी वह विकलांग होता है तो उसे आर्थिक सहायता प्रदान की जाती है। इस योजना के तहत राज्य के सभी किसानों को शामिल किया गया है। मुख्यमंत्री कृषक दुर्घटना कल्याण योजना में विभिन्न दुर्घटनाओं में मृत्युध्गंभीर घायलोंको लाभ प्राप्त होता हैए जिनमें सांप अथवा अन्य जीव.जंतु व जानवर के काटने, मारने व आक्रमण की स्थिति में, आग लगनेए बाढ़ए बिजली गिरने, करंट लगने से होने वाली दुर्घटना की स्थिति में, हत्याए आतंकवादी हमला, लूट, डकैती, मारपीट में हुई दुर्घटना में, समुद्र, नदी, झीलए तालाब, पोखर व कुएं में डूबने से, रेल, सड़क और हवाई यात्रा के दौरान होने वाली दुर्घटनाए आंधी.तूफान, वृक्ष गिरने, दबने व मकान गिरने से होने वाली क्षति के कारणए आकाश से बिजली गिरने, आग लगने, बाढ़ आदि में होने वाली दुर्घटना की स्थिति में और सीवर चैम्बर में गिरने से होने वाली दुर्घटना की स्थिति में किसानध्संबंधित परिवार को लाभान्वित किया जाता है। मुख्यमंत्री कृषक दुर्घटना कल्याण योजना के अंतर्गत लाभ उन्ही किसानों को दिया जायेगा जो उप्र के स्थायी निवासी हैं। जिनकी आयु 18 से 70 वर्ष के मध्य हो। भूलेख निर्गत खतौनी में दर्ज खातेदारध्सह खातेदारए भूमिहीन व्यक्ति जो पट्टे से प्राप्त कृषि भूमि के पट्टाधारक हो या बटाईदार जो कृषि का कार्य करते हो उनकी दुर्घटनावश मृत्यु अथवा विकलांगता के शिकार हुए हों उनके माता.पिता, पत्नी, पुत्र.पुत्री, पुत्रवधू, पौत्र.पौत्री जिनकी आय का जरिया खातेदार/सहखातेदार में दर्ज कृषिभूमि से चलता होए इस योजना के लिए पात्र होंगें। ऐसे किसान जिनके पास खुद की जमीन नहीं है किन्तु वह बटाई अथवा पट्टे की भूमि लेकर खेती करतें हैं उन्हें अथवा उनके आश्रितों को भी योजना का लाभ दिया जाता है। प्रमुख दस्तावेज लगाने होते है जिनमें तहसील से प्राप्त खतौनी की प्रमाणित प्रति, रजिस्टर्ड निजी पट्टेदार हेतु प्रस्तर (क) के अनुसार पट्टे की प्रमाणित प्रति, बटाईदार हेतु प्रस्तर 3 (ख) के अनुसार कोई एक प्रमाण पत्रए मृतक विकलांग व्यक्ति की आयु का प्रमाणए मृत्यु प्रमाण पत्रए मृतक/विकलांग निवास का प्रमाण, मृतक की पोस्टमार्टम रिपोर्ट अथवा जहां पर पोस्टमार्टम संभव नहीं है वहां पर पंचनामा, दिव्यांगता की स्थिति में सीएमओ द्वारा जारी प्रमाण पत्रए मृतक के उत्तराधिकार प्रमाण पत्र, मोबाइल नंबर, आधार कार्ड, बैंक पासबुक की छायाप्रति संलग्न करने होते है।

पत्रकारों के साथ मारपीट के मामले में चेयरमैन का भतीजा व पूर्व लिपिक गिरफ्तार

हमीरपुर। पत्रकारों के साथ मारपीट के मामले में चेयरमैन समेत छह लोगो को जेल भेजने के बाद आज पुलिस ने दो आरोपियों को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है। जिसमे नगर पंचायत सरीला का पूर्व लिपिक गंगाबाबू यादव भी शामिल है। चर्चित पत्रकारो के साथ मारपीट के मामले में चेयरमैन पवन अनुरागी व उसके गुर्गो को जेल भिजवाने के बाद पुलिस ने आज फरार चेयरमैन के भतीजे आकाश अनुरागी व गंगा बाबू यादव को भी जेल भेज दिया है। एक सप्ताह पहले चेयरमैन पवन अनुरागी के गुर्गो ने पत्रकार अमित दिवेदी व शैलेंद्र मिश्रा को साजिश के तहत घर में बुलाकर मारपीट की थी बाद में भाजपा ने चेयरमैन को दल से निष्कासित किया था। पुलिस ने चेयरमैन समेत छह लोगो को जेल भेज दिया था दो अभियुक्त वांछित चल रहे थे पुलिस ने आज दोनो को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस का कहना है कि जिन लोगो के नाम रिपोर्ट दर्ज हुई थी।

दो गौकशों से पुलिस की फिर हुई मुठभेड़, एक घायल

फतेहपुर। हथगाम थाना पुलिस व एसओजी की संयुक्त टीम से शुक्रवार को दो गौकशों की बिसुई नहर के पास महुआ व आम के बाग में मुठभेड़ हो गई। जिसमें एक अभियुक्त जहां घायल हो गया वहीं दोनों को पुलिस ने हिरासत में ले लिया। घायल का नजदीकी अस्पताल में उपचार कराया गया। पुलिस ने मौके से तमंचा, कारतूस, एक गौवंश समेत उपकरण भी बरामद किए हैं। लगातार दूसरे दिन गौकशों से पुलिस की मुठभेड़ होने पर गौ हत्या व गौ तस्करी से जुड़े लोगों के बीच हड़कंप मचा हुआ है।

अपर पुलिस अधीक्षक विजय शंकर मिश्र ने बताया कि हथगाम थाना पुलिस व एसओजी की संयुक्त टीम शुक्रवार को इनामिया अभियुक्तों की गिरफ्तारी के लिए शाहपुर तिराहा के समीप आकर मिले। तभी मुखबिर ने सूचना दिया कि बिसुई नहर के पास महुआ व आम के बाग में कुछ लोग गौकसी करने के इरादे से मौजूद हैं। सूचना मिलते ही संयुक्त टीम मौके पर पहुंची और बाग की घेराबंदी कर ली। पुलिस से अपने आपको घिरता देख एक गौकश ने पुलिस टीम पर फायरिंग कर दी। जवाबी फायरिंग में इलियास पुत्र मुख्तार निवासी रामपुर मुआरी थाना हथगांव के पैर में गोली लगनेसे घायल हो गया। पुलिस ने दूसरे गौकश अफसर अली पुत्र अशरफ अली निवासी रामपुर मुआरी को भी मौके से गिरफ्तार कर लिया।

पुलिस ने मौके से दो तमंचा 315 बोर, तीन खोखा कारतूस, एक जिंदा कारतूस, एक गौवंश, एक कुल्हाड़ी, चार चाकू, एक लकड़ी का ठिहा, दो बंडल काली पन्नी व एक पीली बड़ी पन्नी, एक मोटर साइकिल व 320 रूपये नगद बरामद किए। पुलिस ने घायल का नजदीकी अस्पताल में उपचार कराया और न्यायालय भेज दिया। एएसपी ने कहा कि गौकशों के विरूद्ध लगातार हो रही कार्रवाई से अपराध व अपराधिक गतिविधियों पर अंकुश लगेगा।

नावालिग किशोरी को भगा ले जाने का मामला दर्ज

गुरसहायगंज, कन्नौज। एक नाबालिक किशोरी को एक युवक कहीं बहला–फुसला कर भगा ले गया। पीड़ित पिता ने कोतवाली पुलिस को तहरीर देकर कार्रवाई की मांग की है। ग्राम निवासी पीड़ित पिता द्वारा कोतवाली में दर्ज कराए गए मुकदमे में कहा गया है कि शुक्रवार की सुबह 04 बजे उसकी 16 वर्षीय पुत्री को गांव का ही अनूप सिंह पुत्र मानसिंह कहीं बहला–फुसला कर भगा ले गया है।

दूरगामी ट्रेन की चपेट में आई किशोरी की हुई मौत

गुरसहायगंज, कन्नौज। अपने गंतव्य की ओर तेज रफ्तार से जा रही छपरा एक्सप्रेस की चपेट में आई किशोरी की मौके पर ही मौत हो गई। शुक्रवार को 03:30 बजे 16 वर्षीय सायबीन पुत्री इरशाद निवासी ग्राम मिरगावां बाजार से अपने घर ग्राम मिरगावा जा रही थी तभी मिरगावा क्रॉसिंग के आगे रेलवे ट्रैक को पार करते समय फर्रुखाबाद की तरफ से आ रही छपरा–फर्रुखाबाद एक्सप्रेस से कटकर मृत्यु हो गई।

सीडीओ के औचक निरीक्षण में आरबीएस के 5 डाक्टर रहे नदारद

● अवैध लैब संचालकों सहित पीएचसी परिसर में घुमंतू दलाल भागे

संवाददाता। फतेहपुर

प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र गोपालगंज में शुक्रवार को अपरान्ह 01 बजे के समीप मुख्य विकास अधिकारी के औचक निरीक्षण से पीएचसी सहित लैब संचालकों में हडकम्प मच गया, जहां निरीक्षण के दौरान खामियां मिली। 60 मिनट के निरीक्षण के दौरान सीडीओ पवन कुमार मीणा द्वारा लेबर रूम, दवाओं के स्टॉक रजिस्टर, आर.बी.एस.के के दस्तावेज, परिसर की साफ सफाई सहित खंगाले विभागीय अभिलेख की पड़ताल करतें हुए आरबीएस के टीम द्वारा डे रोस्टर उपलब्ध नहीं कराया जा सका।

निरीक्षण के दौरान पीएचसी प्रभारी चिकित्साधिकारी डां. बृजेश कुमार की गैर मौजूदगी पर सीडीओ ने दूरभाष के जरिए जानकारी लेते हुए आरबीएस के 07 में से 05 डॉक्टरों के गैर मौजूदगी का कारण पूछा। संतुष्टि पूर्ण जवाब न मिलने पर स्पष्टीकरण मांगा। सीडीओ पवन कुमार मीणा ने बताया कि औचक निरीक्षण के क्रम में उपस्थित स्टाफ का रजिस्टर से मिलन किया गया। अनुपस्थित 04 से 05 डॉक्टरों का स्पष्टीकरण मांगा गया है। बाहर से लिखे जाने वाली दवाएं संबंधित शिकायत प्राप्त हुई। अवैध लैब संचालकों में मचा हडकम्प: शुक्रवार को अपरान्ह सीडीओ के औचक निरीक्षण की जानकारी मिलते ही पीएचसी परिसर में घुमंतू अवैध पैथोलॉजी संचालकों के बीच हड़कंप मच गया। मेडिकल स्टोर संचालक शटर गिरा कर दुकान बंद कर दिया।

छात्राओं को डाकघर की कार्य प्रणाली की दी गयी जानकारी

छात्राओं को जानकारी देते डाक अधीक्षक

संडीला (हरदोई)। उच्च प्राथमिक विद्यालय जामू की छात्राओं ने मुख्य डाकघर पहुंचकर पोस्ट ऑफिस की कार्यप्रणाली तथा सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं के बारे में समझा। उच्च प्राथमिक विद्यालय जामू की छात्राएं अपने प्रधानाध्यपक मोसं हारून के साथ पोस्ट ऑफिस पहुंची यहां डाक अधीक्षक हरिशकर लाल ने छात्राओं का स्वागत किया। उन्होंनें पोस्ट कार्डए अंर्तदेशीय पत्र के विषय में विस्तार से जानकारी दी। इसके अलावा सरकार द्वारा चलाई जा रही कन्य सुमंगला योजना के अंतर्गत खाता खोलने की प्रक्रिया को उन्होंनें समझाया। इसके अलावा बचत खाता योजना के विषय में बताया कि डाकघर में खाता खोलकर छोटी बचत करके अधिक धनराशि एकत्र की जा सकती है। डाक अधीक्षक ने छात्राओं को विभिन्न जनपदों से आने वाली डाक की छटाई को भी बताया। उन्होंनें बताया यदि पता गलत होता है तो पत्र भेजने वाले के पते पर वापस भेज दिया जाता है। छात्राओं ने पोस्ट ऑफिस के विभिन्न काउंटरों को भी देखा।

मिलेट्स रेसीपी जागरूकताः खीरी में हुआ भव्य कार्यक्रम, डीएम व विधायक ने किया शुभारंभ

● मिलेट्स व्यंजनों की कुकिंग प्रतियोगिता के विजेता पुरस्कृत, खिले चेहरे ●श्री अन्न किसानों के लिए समृद्धि का द्वारए पोषण की आधारशिलाः डीएम

●विधायक ने किया आवाह्नए श्री अन्न उत्पादन के लिए आगे आए किसान

लखीमपुर खीरी। शहर के वंदन गार्डन में शुक्रवार को उप्र मिलेट्स पुनरोद्धार कार्यक्रम के तहत जनपदीय मिलेट्स मेला सह प्रदर्शनी, मिलेट्स रेसीपी विकास एवं उपभोक्ता जागरूकता कार्यक्रम और रबी उत्पादकता गोष्ठी कार्यक्रम हुआ। इस भव्य कार्यक्रम में एक तरफ जहां श्रीअन्न के पोषक मूल्य खेती.प्रसंस्करण पर चर्चा हुई। वहीं दूसरी तरफ जिले के नामचीन होटल व रेस्तरां सहित आंगनवाड़ी कार्यकत्रियोंए स्वयं सहायता समूह एफपीओ एवं महाविद्यालय के विद्यार्थियों ने भी मिलेट्स व्यंजनों की कुकिंग प्रतियोगिता में हिस्सा लिया। कार्यक्रम का सफल संयोजन उप कृषि निदेशक अरविंद मोहन मिश्रा ने किया।

शुक्रवार को कृषि महकमे के तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम का शुभारंभ डीएम दुर्गा शक्ति नागपाल और विधायक धौरहरा विनोद शंकर अवस्थी ने पीडी एसएन चौरसिया, डीडी (कृषि) अरविंद मोहन मिश्रा की मौजूदगी में दीप जलाकर किया। इससे पूर्व डीएम ने अफसरो के साथ कृषिए गन्नाए उद्यानए पशुपालन इफ्कोए कृभकोए बैंकए पीएम सूर्य घर शाहिद विभिन्न विभागों के स्थान का अवलोकन किया। उन्होंने श्री अन्न रेसिपी स्टालों का भी अवलोकन कर श्रीअन्न से तैयार रेसिपी की जानकारी ली एवं उनका मनोबल बढ़ाया।

कार्यक्रम में डीएम दुर्गा शक्ति नागपालए विधायक धौरहरा विनोद शंकर अवस्थी ने अफसरों संग श्री अन्न व्यक्तिगत भोज्य पदार्थए होटलध्रेस्टोरेंटध्कैटर्स भोज्य पदार्थए समूह भोज्य पदार्थए एफपीओ भोज्य पदार्थ और महाविद्यालय भोज्य पदार्थ के स्तर पर हुई प्रतियोगिताओं में अपनी रेसिपी के अनुसार प्रथमए द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विजेताओं को पुरस्कृत किया। वही इंटरमीडिएट एवं स्नातक स्तर पर हुई श्री अन्न प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में विजेताओं को पुरस्कृत कर सम्मानित किया। रेसिपी प्रतियोगिता में

निर्णायक की भूमिका में पीडी डीआरडीए एस एन चौरसिया की अध्यक्षता में वाईडी कॉलेज की डॉ ज्योति पंतए रॉयल प्रूडेंस कॉलेज डा0 अंशू वर्माएकृषि वैज्ञानिक डॉ सुहैल, खाद्य सुरक्षा अधिकारी ने निभाई।

विधायक ने किया आवाह्नन, श्री अन्न उत्पादन के लिए आगे आए किसान

विधायक धौरहरा विनोद शंकर अवस्थी ने कहा कि भारत ने योगाए आयुर्वेद एवं मिलेट्स ;श्री अन्नद्ध से पूरे विश्व को परिचित कराया। दुनिया आज इसे हाथों हाथ ले रही है। पीएम ने मिलेट्सए मोटा अनाज को श्री अन्न कहकर प्रतिष्ठा दी है। मिलेट्स के प्रयोग से जहां हम बीमारियों से बच सकते हैं। वही इससे प्रतिरोधक क्षमता में भी वृद्धि होती है। यह स्वादिष्ट होने के साथ ही स्वास्थ्यवर्धक है। उन्होंने मौजूद किसानों से श्री अन्न उत्पादन के लिए आगे आने का आवाह्नन करते हुए मिलेट्स को आज की आवश्यकता बताई।

श्री अन्न किसानों के लिए समृद्धि का द्वार, पोषण की आधारशिलाः डीएम'

डीएम दुर्गा शक्ति नागपाल ने श्री अन्न रेसिपी कार्यक्रम के विजेता और प्रतिभागियों को शुभकामनाएं दी। मिलेट्स आधारित उत्पादन के उपयोग से थाली में जो पोषक तत्वों का अभाव हैए उसे पूरा किया जा सकता है। बीमारियों से लड़ने में श्री अन्न की बड़ी भूमिका है। श्री अन्न समृद्धि व समग्र विकास का माध्यम बन रहा है। इससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी लाभ मिलेगा। श्री अन्न किसानों के लिए समृद्धि का द्वारए पोषण की आधारशिला है। श्री अन्न समूची दुनिया के लिए महत्वपूर्ण कृषि उत्पाद है। पोषक तत्वों से भरपूर श्री अन्न की खेती को सामान्य भूमि में किया जा सकता है। इसमें फर्टिलाइजर की आवश्यकता नहीं होती है। जनपदीय रबी गोष्ठी में उपस्थित किसानों को योजनाओं का लाभ लेकर आर्थिक समृद्धि की ओर बढ़ने का आह्वान भी किया। कृषि महकमें की पूरी टीम के प्रयासों के चलते रेसिपी का जो अनूठा प्रदर्शन यहां हुआ, वह काबिले तारीफहै।

इनको मिला श्री अन्न रेसिपी के लिए खिताब

होटल रेस्टोरेंट कैटर्स भोज्य पदार्थ प्रतियोगिता में अतिथि रेस्टोरेंट प्रथम, कंफर्ट इन द्वितीय, श्रीअन्न ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। समूह भोज्य पदार्थ में सरस्वती स्वयं सहायता समूह प्रथम, प्रगति स्वयं सहायता समूह द्वितीय, महेशपुर, कुंभी स्वयं सहायता समूह ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। एफपीओ भोज्य पदार्थ में जगदेवपुर प्रथम, सनराइज फार्मर प्रोड्यूसर कंपनी द्वितीय, महालक्ष्मी फार्मर प्रोड्यूसर कंपनी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

नोटबंदी ने एमएसएमई और असंगठित क्षेत्र को तबाह करके एकाधिकार का रास्ता साफ किया : राहुल

भाषा। नई दिल्ली

लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने शुक्रवार को आरोप लगाया कि नोटबंदी ने सूक्ष्म,लघु और मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) और असंगठित क्षेत्र को तबाह करके एकाधिकार का मार्ग प्रशस्त किया है। उन्होंने कहा कि भारत में आठ साल पहले के मुकाबले अधिक नकदी का इस्तेमाल अनवरत जारी है। विपक्षी दल कांग्रेस ने नोटबंदी के आठ साल पूरे होने पर सरकार पर निशाना साधा और कहा कि यह नॉन बायोलॉजिकल प्रधानमंत्री द्वारा अर्थव्यवस्था को दिया गया पहला झटका था जिससे देश की अर्थव्यवस्था ने गति खो दी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आठ नवंबर, 2016 को राष्ट्र के नाम एक संबोधन में नोटबंदी की घोषणा करते हुए कहा था कि 500 रुपए और 1,000 रुपए के नोट अब वैध मुद्रा नहीं रहेंगे। तत्कालीन सरकार ने उस समय ऐसा करने के जो कारण बताए थे उनमें डिजिटल अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देना और भ्रष्टाचार तथा काले धन पर रोक लगाने के लिए नकद लेनदेन को कम करना शामिल था। राहुल ने कहा, भारत आज आठ साल पहले की तुलना में अधिक नकदी का उपयोग कर रहा है जब नोटबंदी लागू की गई थी। गांधी ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा, नोटबंदी ने एमएसएमई और असंगठित क्षेत्र को तबाह करके एकाधिकार का मार्ग प्रशस्त किया। कांग्रेस के पूर्व प्रमुख ने कहा कि व्यवसायों के लिए भय का माहौल बनाने वाली अक्षम और गलत इरादे से तैयार नीतियां भारत की आर्थिक क्षमता को खत्म कर देंगी। गांधी ने एक चार्ट भी साझा किया जिसमें दिखाया गया है कि कैसे जनता के पास मौजूद नकदी 2013-14 में सकल घरेलू उत्पाद के 11 प्रतिशत से गिरकर 2016-17 में आठ प्रतिशत रह गई थी, लेकिन 2020-21 में यह बढ़कर सकल घरेलू उत्पाद का 14 प्रतिशत हो गई। चार्ट से पता चलता है कि 2022-23 में जनता के पास नकदी सकल घरेलू उत्पाद का 12 प्रतिशत थी। पार्टी महासचिव जयराम रमेश ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा, आज नॉन बायोलॉजिकल प्रधानमंत्री द्वारा अर्थव्यवस्था को दिए गए पहले झटके और अर्थव्यवस्था के गति खोने की शुरुआत की 8वीं वर्षगांठ है। उन्होंने आरोप लगाया, एमएसएमई बर्बाद हो गए और लाखों लोगों की आजीविका पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। यह एक तुगलकी कदम था जिससे व्यापक तबाही हुई। काले धन पर बिल्कुल भी प्रभाव नहीं पड़ा और आज अर्थव्यवस्था में पहले से कहीं अधिक नकदी प्रचलन में है।

नोटबंदी के आठ साल पूर्ण होने पर तेजस्वी ने मृतको को श्रद्धांजलि दी

पटना। राष्ट्रीय जनता दल (राजद) नेता तेजस्वी यादव ने शुक्रवार को उन लोगों को श्रद्धांजलि दी, जिन्होंने नोटबंदी के बाद अमान्य हो चुके नोट जमा करने के लिए बैंकों के बाहर लगी लंबी कतारों में अपनी जान गंवा दी। बिहार के पूर्व उपमुख्यमंत्री ने यहां संवाददाताओं से बातचीत में व्यंग्यात्मक लहजे में बरसी शब्द का भी इस्तेमाल किया जो पुण्यतिथि पर आयोजित की जाने वाली रस्म है। उन्होंने कहा कि इसी दिन प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 500 और 1000 रुपए के पुराने नोटो को अमान्य घोषित किया था। यादव ने कहा, मुझे नही पता कि आप लोगों को याद है या नही। लेकिन आज आठ नवंबर है, एक बड़ा दिन है। यह नोटबंदी की बरसी है। उन्होंने कहा, आज के दिन मैं उन लोगों को श्रद्धांजलि देता हूं जिन्होंने लंबी कतारों में खड़े होकर अपनी जान गंवाई। बड़े-बड़े दावे किए गए थे कि काला धन खत्म कर दिया जाएगा। लेकिन वादे खोखले साबित हुए। उन्होने आरोप लगाया कि इसके बजाय भारतीय जनता पार्टी ने देशभर में जमीन खरीदी और उन पर भव्य पार्टी कार्यालय बनाए।

उमर अब्दुल्ला ने शांतिपूर्ण माहौल के महत्व पर जोर दिया पूर्ण राज्य का दर्जा बहाल करने की हिमायत की

भाषा। श्रीनगर

जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने शांतिपूर्ण माहौल के महत्व पर जोर देते हुए शुक्रवार को कहा कि अगर शांति स्थापित नहीं होगी तो अन्य चीजों पर काम करना असंभव हो जाएगा, इसलिए यह हमारी जिम्मेदारी है कि हम शांतिपूर्ण स्थिति बनाए रखने में मदद करें। अब्दुल्ला ने जम्मू कश्मीर का पूर्ण राज्य का दर्जा बहाल करने की पुरजोर वकालत भी की। उन्होंने कहा, यह वह विधानसभा नहीं है जो हम चाहते हैं।

हम एक पूर्ण विधानसभा चाहते हैं, जिसका वादा प्रधानमंत्री ने किया है। मुख्यमंत्री सदन में उपराज्यपाल के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव पर बोल रहे थे। पांच अगस्त 2019 को केंद्र सरकार द्वारा अनुच्छेद 370 को निरस्त करने और जम्मू-कश्मीर को दो केंद्र शासित प्रदेशों में विभाजित करने के बाद, पहली बार सोमवार को विधानसभा की बैठक हुई। अब्दुल्ला ने कहा, हम एक केंद्र शासित प्रदेश हैं। जनता द्वारा चुनी गई सरकार को बहुत सारी जिम्मेदारियां सौंपी गई हैं, लेकिन शांति, कानून और व्यवस्था बनाए रखने और आतंकवाद से लड़ने की जिम्मेदारी उसके पास नहीं है।

उन्होंने कहा, स्थिति को शून्य में सामान्य नहीं किया जा सकता। मैं पुलिस और अर्धसैनिक बलों को आश्वस्त करना चाहता हूं कि हम शांति बनाए रखने में उनके साथ हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि अगर शांति नहीं होगी तो अन्य चीजों पर काम करना असंभव हो जाएगा।

अब्दुल्ला ने कहा, इसलिए यह हमारी जिम्मेदारी है कि हम शांति बनाए रखने में मदद करें। शांति कायम करने के दो तरीके हैं - गिरफ्तारी और ऐसे अन्य उपाय करना, और दूसरा लोगों को शांति में भागीदार बनाकर। उन्होंने कहा कि दुर्भाग्य से, हमारा इन चीजों पर अधिकार नहीं हैं, लेकिन मैंने वरिष्ठ अधिकारियों से कहा है कि ऐसा तंत्र होना चाहिए, जिससे हम लोगों को असहज किए बिना सुरक्षा बलों की सुरक्षा सुनिश्चित कर सकें। मुख्यमंत्री की टिप्पणी ऐसे समय में आई है, जब 16 अक्टूबर को उनकी सरकार बनने के बाद से आतंकवादी घटनाओं में तेजी से वृद्धि होते देखी गई है। अब्दुल्ला ने कहा, हमें सम्मान के साथ जीने का अधिकार है...हम राज्य का दर्जा क्यों मांग रहे हैं? हमारी पहचान और संस्कृति को नुकसान पहुंचा है और हमें लगता है कि राज्य का दर्जा इसे बहाल करने का एक तरीका है। अपनी जमीन और संसाधनों पर हमारा अधिकार होना चाहिए। मुख्यमंत्री ने कहा कि हालांकि वह एक्स पर बहुत कुछ लिखते हैं, लेकिन वह लोगों को आश्वस्त करना चाहते हैं कि सोशल मीडिया उपयोगकर्ता उनकी सरकार का एजेंडा तय नहीं करेंगे।

केंद्रीय व राज्य एजेंसियां आतंकवाद व साइबर अपराध के विरुद्ध बेहतर तालमेल पर सहमत : एनआईए

भाषा। नई दिल्ली

राष्ट्रीय अन्वेषण अभिकरण (एनआईए) द्वारा आयोजित एक सम्मेलन के दौरान पुलिस बलों के अलावा विभिन्न केंद्रीय और राज्य एजेंसियों ने आतंकवाद से निपटने के लिए, विशेष रूप से साइबर अपराध के संबंध में, एक मानकीकृत रणनीति के साथ बेहतर तालमेल की आवश्यकता पर सहमति जताई। एक आधिकारिक बयान के अनुसार एनआईए द्वारा आयोजित दो दिवसीय आतंकवाद-विरोधी सम्मेलन शुक्रवार को संपन्न हुआ जिसमें राष्ट्रीय सुरक्षा के हित में सभी राज्यों में आतंकवाद से निपटने के लिए एकीकृत दृष्टिकोण की आवश्यकता पर जोर दिया गया। इसमें कहा गया है कि विभिन्न सत्रों के दौरान एक समग्र रणनीति के महत्व पर आम सहमति बनी।

जिसमें सरकार से लेकर पुलिस व्यवस्था और जांच के निम्नतम स्तर तक संपूर्ण राष्ट्रीय ढांचे को शामिल किया जाना चाहिए। बयान में कहा गया, एनआईए का दो दिवसीय आतंकवाद- विरोधी सम्मेलन शुक्रवार को विभिन्न केंद्रीय और राज्य एजेंसियों और पुलिस बलों के बीच आतंकवाद के खतरे से निपटने के लिए मानकीकृत रणनीति के साथ बेहतर तालमेल की आवश्यकता पर आम सहमति के साथ संपन्न हुआ, विशेष रूप से साइबर अपराध और वित्तीय आतंकवाद के संबंध में।

नाबालिग लड़की से सामूहिक दुष्कर्म पर कांग्रेस सांसद ने भाजपा सरकार पर साधा निशाना

भाषा। पालनपुर

गुजरात के बनासकांठा जिले में 15 वर्षीय एक लड़की के साथ छह लोगों ने कथित तौर पर सामूहिक बलात्कार किया। पुलिस के एक अधिकारी ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। पुलिस निरीक्षक आर.बी. गोहिल ने बताया कि यह घटना पांच नवंबर को अंबाजी कस्बे में हुई।

उन्होंने कहा, छह नवंबर को अंबाजी थाने में मामला दर्ज किया गया। अभी तक किसी की गिरफ्तारी नहीं हुई है। प्राथमिकी के अनुसार, लड़की शाम को अपने चाचा के घर जा रही थी, तभी लाला परमार नामक एक व्यक्ति, जो उसका परिचित था, ने उसे अपने दोपहिया वाहन पर लिफ्ट देने की पेशकश की। पुलिस ने बताया कि परमार उसे एक सुनसान जगह पर ले गया, जहां उसने और उसके पांच साथियों ने उसके साथ कथित तौर पर बलात्कार किया और जब वह बेहोश हो गई तो वे भाग गए।

इस बीच, गुजरात से कांग्रेस की एकमात्र लोकसभा सदस्य गेनीबेन ठाकोर ने राज्य की भाजपा सरकार पर निशाना साधा। ठाकोर ने कहा, गुजरात में कानून व्यवस्था की स्थिति खराब हो गई है। हाल ही में ऐसी कई घटनाएं हुई हैं। भाजपा सरकार के गृह मंत्री हर्ष संघवी यहां चुनाव प्रचार में व्यस्त हैं। अगर संघवी अपने काम पर ध्यान देते और लोगों की सुरक्षा के लिए पर्याप्त संख्या में पुलिस बल का इस्तेमाल करते तो यह हादसा नहीं होता।

वह बनासकांठा जिले की वाव विधानसभा सीट पर होने वाले उपचुनाव के लिए चल रहे प्रचार अभियान का जिक्र कर रही थीं।यह सीट तब खाली हुई थी जब ठाकोर ने बनासकांठा लोकसभा सीट से चुने जाने के बाद विधायक पद से इस्तीफा दे दिया था।

लीक ऑडियो क्लिप की प्रमाणिकता दर्शाने वाली सामग्री पेश करे कुकी संगठन : न्यायालय

भाषा। नई दिल्ली

उच्चतम न्यायालय ने शुक्रवार को एक कुकी संगठन को निर्देश दिया कि वह लीक किए गए उन ऑडियो क्लिप की प्रमाणिकता का संकेत देने वाली सामग्री पेश करे जिनके आधार पर उसने अपनी याचिका में जातीय हिंसा में मणिपुर के मुख्यमंत्री की कथित भूमिका की अदालत की निगरानी में एसआईटी जांच कराने का अनुरोध किया है। भारत के प्रधान न्यायाधीश डी वाई चंद्रचूड़ और न्यायमूर्ति जे बी पारदीवाला और न्यायमूर्ति मनोज मिश्रा की पीठ ने यह भी कहा कि संवैधानिक न्यायालय के रूप में उसका कर्तव्य है और वह चीजों को छिपाने के किसी भी प्रयास की सराहना नहीं करता है। इसने कुकी ऑर्गनाइजेशन फॉर ह्यूमन राइट्स ट्रस्ट (केओएचयूआर) की ओर से पेश वकील प्रशांत भूषण से ऑडियो क्लिप की विश्वसनीयता दिखाने के लिए सामग्री को रिकॉर्ड पर रखने के लिए कहा।

पीठ ने कहा, इससे पहले कि अदालत ऑडियो क्लिप के आधार पर दी गई दलीलों पर विचार करे, हम याचिकाकर्ता को क्लिप की प्रामाणिकता का संकेत देने वाली सामग्री इस अदालत के समक्ष दाखिल करने की अनुमति देना उचित समझते हैं।

शुरुआत में भूषण ने कहा कि रिकॉर्ड की गई बातचीत प्रथम दृष्टया कुकी जो समुदाय के खिलाफ हिंसा में राज्य मशीनरी की मिलीभगत और भागीदारी को दर्शाती है। उन्होंने दावा किया कि क्लिप में परेशान करने वाली बातचीत थी और मुख्यमंत्री को हिंसा भड़काने और हमलावरों की रक्षा करते हुए सुना जा सकता था। उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि मुख्यमंत्री ने न केवल वहां हिंसा को बढ़ावा दिया, बल्कि हथियार और गोला-बारूद लूटने की भी अनुमति दी।

राज्य सरकार की ओर से पेश सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने याचिका का कड़ा विरोध करते हुए कहा कि संगठन को मणिपुर उच्च न्यायालय का रुख करना चाहिए। अटॉर्नी जनरल आर वेंकटरमणी ने भी याचिका का विरोध किया और कहा कि राज्य सरकार को शांति बहाल करने की छूट दी जानी चाहिए। मेहता ने कहा, हम जमीनी स्थिति नहीं जानते हैं। हमारे पास एक छिद्रयुक्त सीमा है। हमारे पास सीमा पार से सामग्री आती है। श्रीमान तो एक आइवरी टॉवर में बैठे हैं।

पीठ ने इस टिप्पणी पर आपत्ति जताई और कहा, हम आइवरी टावर में नहीं रह रहे हैं। हम आइवरी टावर में नहीं बैठे हैं इसलिए याचिका खारिज नहीं की गई। हम यह भी जानते हैं कि मणिपुर में क्या हो रहा है। मेहता ने अपनी टिप्पणी के लिए माफी मांगी और कहा कि इस शब्द का इस्तेमाल अपमानजनक अर्थ में नहीं किया गया था।

यह मानना पूर्णतः गलत है कि अल्पसंख्यकों को शिक्षा के लिए सुरक्षित स्थान की आवश्यकता हैः न्यायमूर्ति

भाषा। नई दिल्ली

उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश सतीश चंद्र शर्मा ने शुक्रवार को कहा कि यह मानना पूरी तरह गलत है कि देश में अल्पसंख्यकों को शिक्षा और ज्ञान के लिए किसी सुरक्षित स्थान की आवश्यकता है। प्रधान न्यायाधीश (सीजेआई) डी.वाई. चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली सात न्यायाधीशों की संविधान पीठ ने 4:3 के बहुमत के फैसले में कहा कि कोई कानून या कार्यकारी कार्वाई जो शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना या प्रशासन में धार्मिक या भाषाई अल्पसंख्यकों के खिलाफ भेदभाव करती है, संविधान के अनुच्छेद 30(1) के विरुद्ध है। प्रधान न्यायाधीश ने न्यायमूर्ति संजीव खन्ना, न्यायमूर्ति जे बी पारदीवाला और न्यायमूर्ति मनोज मिश्रा की ओर से भी 118 पृष्ठ का फैसला लिखा। संविधान पीठ के तीन अन्य न्यायाधीशों न्यायमूर्ति सूर्यकांत, न्यायमूर्ति दीपांकर दत्ता और न्यायमूर्ति सतीश चंद्र शर्मा ने अलग राय लिखी। न्यायमूर्ति शर्मा ने कहा, यह मान लेना कि देश के अल्पसंख्यकों को शिक्षा और ज्ञान प्राप्त करने के लिए किसी सुरक्षित स्थान की आवश्यकता है, पूरी तरह गलत है। न्यायाधीश ने कहा कि देश के अल्पसंख्यक न केवल मुख्यधारा में शामिल हो गए हैं, बल्कि वे इसका एक महत्वपूर्ण पहलू भी हैं। न्यायमूर्ति शर्मा ने कहा, देश की राष्ट्रीय प्रकृति की संस्थाएं सदैव अल्पसंख्यकों के हितों की सेवा करती हैं तथा शिक्षा के विविध केंद्र हैं। प्रधान न्यायाधीश डी.वाई. चंद्रचूड़ द्वारा लिखित बहुमत के फैसले में कहा गया कि एएमयू के अल्पसंख्यक दर्जे के विवादास्पद कानूनी प्रश्न पर अब नियमित पीठ द्वारा निर्णय लिया जाएगा। न्यायमूर्ति शर्मा ने 193 पृष्ठों के फैसले में कहा कि संविधान के अनुच्छेद 30 के तहत प्रशासन के अधिकार का दावा करने के लिए अल्पसंख्यक द्वारा किसी संस्था की स्थापना आवश्यक है। अनुच्छेद 30 अल्पसंख्यकों को शैक्षणिक संस्थान स्थापित करने और उनका प्रशासन करने के अधिकार से संबंधित है।

पांच न्यायाधीशों की संविधान पीठ ने 1967 में एस. अजीज बाशा बनाम भारत संघ मामले में फैसला दिया था कि एएमयू एक केंद्रीय विश्वविद्यालय है इसलिए इसे अल्पसंख्यक संस्थान नहीं माना जा सकता।

न्यायमूर्ति शर्मा ने कहा कि दो न्यायाधीशों की पीठ, प्रधान न्यायाधीश के पीठ का हिस्सा न होने की स्थिति में मामले को सीधे सात न्यायाधीशों की पीठ को संदर्भित नहीं कर सकती थी।

न्यायमूर्ति शर्मा ने कहा कि 1967 के फैसले में अल्पसंख्यकों को विश्वविद्यालय स्थापित करने से नहीं रोका था, बल्कि किसी संस्थान की प्रकृति को निर्धारित करने में विधाई मंशा और वैधानिक प्रावधानों के महत्व पर प्रकाश डाला था। न्यायमूर्ति शर्मा ने कहा कि अनुच्छेद 30 में स्थापना शब्द का अर्थ अस्तित्व में लाना या सृजन करना है, तथा इसे संस्था की उत्पत्ति या संस्था की स्थापना जैसे सामान्य वाक्यांशों के साथ नहीं जोड़ा जा सकता।

कांग्रेस भ्रष्टाचार की गारंटी, भाजपा लोगों के हित के लिए काम करती हैः नरेंद्र सिंह तोमर

भाषा। श्योपुर

मध्यप्रदेश विधानसभा अध्यक्ष नरेंद्र सिंह तोमर ने शुक्रवार को कहा कि कांग्रेस वंशवादी राजनीति, तुष्टीकरण और भ्रष्टाचार की गारंटी है, जबकि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) गरीबों के कल्याण और विकास के लिए काम करती है।तोमर विजयपुर विधानसभा सीट पर होने वाले उपचुनाव के लिए सभाओं को संबोधित कर रहे थे, जहां 13 नवंबर को मतदान होना है। इस साल के लोकसभा चुनाव से पहले रामनिवास रावत के कांग्रेस विधायक के रूप में इस्तीफा देने और सत्तारूढ़ भाजपा में शामिल होने के बाद विजयपुर सीट खाली हो गई थी। वह वर्तमान में राज्य के वन मंत्री हैं। तोमर ने कहा, कांग्रेस वंशवादी राजनीति, तुष्टीकरण और भ्रष्टाचार की गारंटी है। जब वह कमल नाथ के नेतृत्व में सत्ता में थी, तो पार्टी ने वल्लभ भवन (राज्य सचिवालय) को बिचौलियों का अड्डा बना दिया था। भाजपा एकमात्र पार्टी है जो गरीबों के कल्याण और विकास के लिए काम करती है। विधानसभा अध्यक्ष ने कहा, मध्यप्रदेश को 2003 से पहले बीमारू राज्य कहा जाता था।

लेकिन भाजपा के सत्ता में आने के बाद राज्य में खुशहाली और समृद्धि आई है।

छत्तीसगढ़ के दुर्ग में मुठभेड़ के दौरान कुख्यात अपराधी को पुलिस ने किया ढेर

दुर्ग। छत्तीसगढ़ में दुर्ग जिले की पुलिस ने शुक्रवार को मुठभेड़ में एक कुख्यात बदमाश को मार गिराया। पुलिस अधिकारियों ने यह जानकारी दी।

दुर्ग जिले के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक जितेंद्र शुक्ला ने बताया कि जिले के भिलाई शहर में पुलिस ने मुठभेड़ में हिस्ट्रीशीटर अमित जोस को मार गिराया।

शुक्ला ने बताया कि इस वर्ष जून में जोस हत्या की कोशिश के मामले में फरार था तथा गिरफ्तारी से बच रहा था। जोस ने इस दौरान शहर के सेक्टर-सात इलाके में दो लोगों को गोली मारकर घायल कर दिया था। इस मामले में पुलिस ने जोस के सिर पर 30 हजार रुपए का इनाम घोषित किया था। उसके खिलाफ हत्या, हत्या के प्रयास, लूट आदि सहित करीब 35 मामले दर्ज थे। पुलिस अधिकारी ने बताया कि शहर में उसकी मौजूदगी की सूचना के आधार पर पुलिस दल ने आज तलाशी अभियान शुरू किया था। इस दौरान वह शहर के जयंती स्टेडियम के पीछे एक अन्य अज्ञात व्यक्ति के साथ मोटरसाइकिल पर दिखा। उन्होंने बताया कि जब पुलिस ने जोस का पीछा किया तब मोटरसाइकिल सवार भागने में सफल रहा और जोस स्टेडियम की ओर भाग गया। शुक्ला ने बताया कि इसी बीच जोस ने पुलिस दल पर गोली चला दी।

पेज 1 का शेष

अनजाने में...

हों, लेकिन इससे उनका हौसला नहीं टूटता और वह अपने विरोधियों का सम्मान करते हैं। उन्होंने कहा, मुझे उम्मीद है कि आपको पता होगा कि मुझे कितनी ट्रोलिंग का सामना करना पड़ा है। मैं शायद पूरे सिस्टम में सबसे ज़्यादा ट्रोल किया जाने वाला जज हूँ। मैं सिर्फ़ एक शायरी कहूँगा - मुख़ालिफ़ से मेरी शख़्सियत संवरती है, मैं दुश्मनों का बड़ा एहतराम करता हूँ। सीजेआई ने हल्के-फुल्के अंदाज़ में यह भी कहा कि अगले हफ़्ते सोमवार से उनके ट्रोल्स बेरोज़गार हो जाएँगे। उन्होंने कहा, हल्के-फुल्के अंदाज़ में, मैं सोच रहा हूँ कि सोमवार से क्या होगा, क्योंकि मुझे ट्रोल करने वाले सभी लोग बेरोज़गार हो जाएँगे।11 नवंबर, 1959 को जन्मे जस्टिस चंद्रचूड़ का न्यायपालिका में एक विशिष्ट करियर रहा है। क्रिकेट के प्रति उनका जुनून बचपन से ही है, जब वे लुटियंस दिल्ली में अपने पिता के घर के पिछवाड़े में क्रिकेट खेला करते थे। उन्हें जून 1998 में बॉम्बे हाई कोर्ट द्वारा वरिष्ठ अधिवक्ता के रूप में नामित किया गया था और 29 मार्च, 2000 को बॉम्बे हाई कोर्ट के न्यायाधीश नियुक्त होने से पहले उन्होंने अतिरिक्त महाधिवक्ता के रूप में कार्य किया था। बाद में वे 31 अक्टूबर, 2013 को इलाहाबाद उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश बने। जस्टिस चंद्रचूड़ के पास दिल्ली के सेंट स्टीफंस कॉलेज से अर्थशास्त्र में बीए की डिग्री, दिल्ली विश्वविद्यालय के कैंपस लॉ सेंटर से एलएलबी और हार्वर्ड लॉ स्कूल से एलएलएम और न्यायिक विज्ञान में डॉक्टरेट (एसजेडी) की डिग्री है।

एमवीए में...

आरोप लगाया कि कांग्रेस ने धर्म पर राजनीति की जिसके कारण भारत का विभाजन हुआ और अब पार्टी जाति की राजनीति कर रही है। उन्होंने उत्तरी महाराष्ट्र के इस जिले में कहा कि देश के खिलाफ इससे बड़ी कोई साजिश नहीं हो सकती।

मोदी ने चुटकी लेते हुए कहा कि कांग्रेस, शिवसेना और राकांपा (सपा) से मिलकर बनी महा विकास आघाडी (एमवीए) ऐसा वाहन है जिसमें न तो पहिए हैं और न ही ब्रेक हैं और चालक सीट पर बैठने के लिए वहां लड़ाई चल रही है।

धुले और महाराष्ट्र के साथ अपने लगाव को याद करते हुए मोदी ने कहा कि जब भी उन्होंने राज्य के लोगों से कुछ मांगा है तो वे दयालु रहे हैं। उन्होंने कहा, मैंने 2014 में पिछली सरकार के 15 साल के कुशासन को समाप्त करने के लिए आपका आशीर्वाद मांगा था। आपने शालीनता से सुनिश्चित किया कि भाजपा को अभूतपूर्व सफलता मिले। आज मैं महाराष्ट्र में अपने अभियान की शुरुआत धुले से कर रहा हूं। महायुति का प्रत्येक उम्मीदवार आपका आशीर्वाद चाहता है। मोदी ने कहा, मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि पिछले ढाई साल में महाराष्ट्र के विकास ने जिस गति से रफ्तार पकड़ी है, उसे रुकने नहीं दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि आने वाले पांच वर्षों में महाराष्ट्र की प्रगति और विकास को नई ऊंचाइयों पर ले जाया जाएगा।न्होंने कहा, केवल महायुति ही सुशासन दे सकती है। एमवीए एक ऐसा वाहन है जिसमें कोई पहिया नहीं है, कोई ब्रेक नहीं है और चालक की सीट पर बैठने की लड़ाई है। अलग-अलग तरह के हॉर्न सुनाई दे सकते हैं। उन्होंने कहा कि एमवीए का लोगों और राज्य के विकास के लिए काम करने का कोई इरादा नहीं है और उसके नेताओं का लक्ष्य जनता को लूटना है। एमवीए का गठन धोखे से किया गया था और राज्य ने उनके द्वारा किए गए काम को देखा है। शिवसेना में एकनाथ शिंदे के विद्रोह से पहले एमवीए दो साल तक सत्ता में था। बाल ठाकरे द्वारा स्थापित पार्टी जून 2022 में दो धड़ों में विभाजित हो गई थी। एक धड़े का नेतृत्व उद्धव ठाकरे जबकि दूसरे का नेतृत्व मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे कर रहे हैं।

इजराइली फुटबॉल ...

भी तरह से बचाव नहीं किया जा सकता। अधिकारियों ने कहा कि आने वाले दिनों में अतिरिक्त पुलिसकर्मी शहर में गश्त करेंगे और शहर में यहूदी संस्थानों पर सुरक्षा बढ़ाई जाएगी।एम्स्टर्डम के मेयर फेम्के हल्सेमा ने फुटबॉल स्टेडियम के पास फलस्तीन समर्थक प्रदर्शन पर प्रतिबंध लगा दिया था, जिसके बावजूद हिंसा भड़क उठी। उन्होंने प्रदर्शनकारियों और इजराइली फुटबॉल क्लब के समर्थकों के बीच झड़पों की आशंका जताई थी।हालांकि हल्सेमा ने शुक्रवार को बताया कि आतंकवादी रोधी विभाग ने कहा है कि इजराइली फुटबॉल प्रशंसकों पर हमले की आशंका के बारे में कोई पुख्ता जानकारी नहीं थी। इजराइल ने इजराइलियों को देश वापस लाने के लिए दो विमान एम्सटर्डम भेजने का आदेश दिया है।

इजराइली प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू के कार्यालय ने एक बयान में कहा, 'एम्स्टर्डम में हमारे नागरिकों पर हमले को नजरअंदाज नहीं किया जाएगा और नेतन्याहू' इस भयावह घटना को अत्यंत गंभीरता से ले रहे हैं।' उन्होंने नीदरलैंड सरकार से इस मामले में कड़ी कार्रवाई करने की मांग की। नीदरलैंड के प्रधानमंत्री डिक शूफ ने एक्स पर कहा कि उन्होंने हिंसा की खबरें देखी हैं।

16 अक्टूबर...

हुई है, क्योंकि सनातन धर्म सभा द्वारा बुलाए गए दिन भर के बंद के दौरान महिलाओं सहित कई निवासी विरोध प्रदर्शनों में शामिल हुए। किश्तवाड़ के विभिन्न इलाकों में लोग हत्याओं के विरोध में सड़कों पर उतर आए। प्रदर्शनकारियों ने स्थानीय लोगों में विश्वास बहाल करने के लिए हत्याओं में शामिल आतंकवादियों को 'तत्काल समाप्त' करने की मांग की।उपराज्यपाल मनोज सिन्हा, मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला और पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी, कांग्रेस और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नेताओं ने वीडीजी सदस्यों की हत्या की निंदा की।इस बीच, कश्मीर में सुरक्षा बलों की एक संयुक्त टीम ने शुक्रवार को उत्तरी कश्मीर के बारामुल्ला जिले के सोपोर इलाके में रात भर चले अभियान में दो और आतंकवादियों को मार गिराया। पुलिस अधिकारियों को अभी तक मारे गए आतंकवादियों की पहचान का पता नहीं चल पाया है।सोपोर की वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक दिव्या डी ने कहा, 'कल रात हमें सोपोर के पानीपुरा इलाके में आतंकवादियों की मौजूदगी की सूचना मिली। हमने तुरंत भारतीय सेना के साथ घेराबंदी और तलाशी अभियान शुरू किया। किसी भी तरह के नुकसान को रोकने के लिए हमने स्थानीय ग्रामीणों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया।

भारत ने ...

जुलाई में 36.5 प्रतिशत अधिक बारिश हुई और अगस्त में दूसरा सबसे अधिक न्यूनतम तापमान रहा।रिपोर्ट के अनुसार, जनवरी और फ़रवरी के बीच, चरम मौसम की घटनाएँ 50 दिनों तक चलीं, जो 2022 में 38 दिनों और 2023 में 28 दिनों से काफ़ी ज़्यादा है। ठंड के दिन और शीत लहरें हावी रहीं, जो 38 दिनों तक चलीं - पिछले साल की तुलना में 17 दिन की वृद्धि।इसके अलावा, बिजली और तूफ़ान 17 दिनों तक दर्ज किए गए, जो पिछले साल 5 दिनों से ज़्यादा है। प्री-मानसून मार्च और मई के बीच, 83 दिनों में चरम मौसम की घटनाएं दर्ज की गईं, जो 2022 (85 दिन) से थोड़ा कम और 2023 के बराबर है। 2024 में 54 दिन हीटवेव होंगी, जो 2023 में 28 दिनों से लगभग दोगुनी है। इस वृद्धि ने मृत्यु दर में वृद्धि में योगदान दिया, जिसमें 507 लोगों की जान चली गई, जबकि पिछले वर्ष 321 लोगों की जान गई थी।जून से सितंबर के बीच, 2023 की तरह सभी 122 मानसून दिनों में चरम मौसम बना रहा। हालांकि, मौतों की संख्या बढ़कर 2,716 हो गई, जो 2023 में 2,594 और 2022 में 2,431 थी।घटनाओं के प्रकारों के संदर्भ में, पिछले नौ महीनों में 32 राज्यों में बिजली और तूफान से लेकर 1,021 मौतें और लगातार मानसून की बारिश तक सब कुछ देखा गया है, जिसके कारण विभिन्न क्षेत्रों में बाढ़ आ गई। अकेले असम में, 122 दिनों में भारी बारिश, बाढ़ और भूस्खलन दर्ज किए गए, जिससे राज्य के बड़े हिस्से जलमग्न हो गए और समुदाय तबाह हो गए। पूरे देश में बाढ़ के कारण 1,376 लोगों की जान चली गई।रिपोर्ट में कहा गया है कि मध्य प्रदेश ने 176 दिनों तक चरम मौसम का अनुभव किया, जो देश में सबसे अधिक है। केरल में सबसे अधिक 550 मौतें दर्ज की गईं, उसके बाद मध्य प्रदेश (353) और असम (256) का स्थान रहा। आंध्र प्रदेश में सबसे ज़्यादा घर क्षतिग्रस्त हुए (85,806), जबकि महाराष्ट्र, जहाँ 142 दिनों तक चरम घटनाएँ हुईं, में देश भर में प्रभावित फसल क्षेत्र का 60 प्रतिशत से ज़्यादा हिस्सा था, उसके बाद मध्य प्रदेश (25,170 हेक्टेयर) का स्थान था।

एनएससीएन...

को छोड़कर शांतिपूर्ण राजनीतिक बातचीत के जरिए मुद्दे को हल करने के लिए पूर्व प्रधानमंत्रियों पीवी नरसिम्हा राव, एचडी देवेगौड़ा, अटल बिहारी वाजपेयी और अन्य की प्रतिबद्धता का भी सम्मान किया। उन्होंने कहा कि तदनुसार, राजनीतिक वार्ता 1 अगस्त, 1997 को शुरू हुई और तब से भारत और विदेश दोनों में बिना किसी पूर्व शर्त के 600 से अधिक दौर की वार्ता हुई, जिसके परिणामस्वरूप 3 अगस्त, 2015 को रूपरेखा समझौते पर हस्ताक्षर हुए। मुइवा ने आरोप लगाया कि अधिकारियों और सरकार के नेतृत्व ने नागा 'संप्रभुता राष्ट्रीय ध्वज और संप्रभु राष्ट्रीय संविधान' को मान्यता देने और स्वीकार करने से इनकार करके रूपरेखा समझौते की भावना के साथ 'जानबूझकर विश्वासघात' किया है।उन्होंने कहा कि सरकार और एनएससीएन के बीच राजनीतिक समझौते के लिए मानदंड रूपरेखा समझौते की भावना के अनुसार होना चाहिए, जिसमें अन्य बातों के अलावा, नागा 'संप्रभु राष्ट्रीय ध्वज और नागा संप्रभु राष्ट्रीय संविधान' राजनीतिक समझौते का अभिन्न अंग होना चाहिए। मुइवा ने कहा कि आज या कल, नागा का 'अद्वितीय इतिहास, संप्रभुता और स्वतंत्रता, संप्रभु क्षेत्र, संप्रभु राष्ट्रीय ध्वज और संप्रभु राष्ट्रीय संविधान पर कोई समझौता नहीं किया जा सकता है।'

किसान के...

खुराना ने आगे कहा, यदि पुष्टि हो जाती है, तो ये हथियार भारतीय स्वतंत्रता के पहले युद्ध में क्षेत्र की भागीदारी के लिए एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में काम कर सकते हैं। वे 1857 के विद्रोह में लड़ने वालों के साहस और संघर्ष से एक ठोस संबंध प्रदान करते हैं। जिला प्रशासन ने पुरातत्व विभाग को इन धरोहरों का विस्तृत विश्लेषण शुरू करने के लिए पत्र लिखा है, जिससे इनके ऐतिहासिक महत्व की पुष्टि हो सकेगी और संभवतः इस क्षेत्र में 1857 के विद्रोह की घटनाओं पर प्रकाश पड़ सकेगा।

राहुल व उनके वंशज तक 370 को बहाल नहीं कर पाएंगेः शाह

भाषा। सांगली (महाराष्ट्र)

केंद्रीय मंत्री अमित शाह ने शुक्रवार को कहा कि न तो कांग्रेस नेता राहुल गांधी और न ही उनकी आने वाली पीढ़ियां जम्मू-कश्मीर को विशेष दर्जा देने वाले अनुच्छेद 370 को वापस ला पाएंगी। शाह ने पश्चिमी महाराष्ट्र के सांगली में विधानसभा चुनाव के लिए एक प्रचार रैली को संबोधित करते हुए अनुच्छेद 370 को बहाल करने के प्रयास में नेशनल कॉन्फ्रेंस का समर्थन करने के लिए कांग्रेस पर निशाना साधा। जम्मू-कश्मीर विधानसभा ने विशेष दर्जा बहाल करने की मांग करने वाला प्रस्ताव बुधवार को पारित किया था। सत्तारूढ़ महायुति गठबंधन के उम्मीदवारों सुधीर गाडगिल और संजय काका पाटिल के लिए सांगली में एक रैली को संबोधित करते हुए भाजपा नेता ने कहा कि राहुल गांधी और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी -शरदचंद्र पवार (राकांपा-एसपी) प्रमुख शरद पवार सहित विपक्षी दलों के नेताओं ने अनुच्छेद 370 को रद्द किए जाने का विरोध किया था। शाह ने कहा, राहुल बाबा, छत्रपति शिवाजी महाराज की धरती से मैं आपको बता रहा हूं कि न तो आप और न ही आपकी चौथी पीढ़ी अनुच्छेद 370 को बहाल कर पाएगी। देश का हर बच्चा कश्मीर के लिए लड़ने के लिए तैयार है। शाह ने कहा, जब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अनुच्छेद 370 को हटाने का फैसला लिया था तब मैं (संसद में) विधेयक लेकर आया था, लेकिन राहुल गांधी, शरद पवार, ममता बनर्जी, अखिलेश यादव और (एम के) स्टालिन ने इस कदम का विरोध किया था। उन्होंने कहा था कि अनुच्छेद 370 को न हटाएं क्योंकि इससे घाटी में खून-खराबा होगा। खून की नदियां बहना तो दूर, किसी ने पत्थर फेंकने तक की हिम्मत नहीं की। शाह ने कहा कि सोनिया गांधी और मनमोहन सिंह की पूर्ववर्ती संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन (संप्रग) सरकार के दौरान आतंकवादी हमले अक्सर होते थे, लेकिन मोदी के प्रधानमंत्री बनने के बाद उरी और पुलवामा की घटनाओं के जवाब में सर्जिकल स्ट्राइक की गईं, जिससे पाकिस्तान में आतंकवादियों का सफाया हो गया। उन्होंने कहा कि मोदी के प्रयासों से अयोध्या में भव्य राम मंदिर का निर्माण हुआ जिसे कांग्रेस पिछले 70 वर्ष से रोक रही थी। उन्होंने कहा, मोदी के सत्ता में आने के बाद पांच साल में अदालत का फैसला आया, मंदिर की आधारशिला रखी गई, इसका निर्माण हुआ और प्राण प्रतिष्ठा समारोह हुआ। शाह ने भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) पर हमला करने के लिए अपनी रैलियों में संविधान की प्रति दिखाने को लेकर कांग्रेस नेता राहुल गांधी पर निशाना साधते हुए कहा कि संविधान चुनावी एजेंडा आगे बढ़ाने के लिए नहीं है। उन्होंने कहा, संविधान का मतलब विश्वास है लेकिन ए लोग (कांग्रेस) संविधान के नाम पर वोट मांग रहे हैं और झांसा दे रहे हैं। आज एक चुनावी रैली में संविधान की प्रतियां बांटी गईं। पुस्तक का आवरण ठीक था लेकिन अंदर के पन्ने खाली थे। उस पर एक भी शब्द नहीं छपा था। गांधी ने संविधान का अपमान किया है, बाबासाहेब आंबेडकर और भारत के लोगों का अपमान किया है। शाह ने कहा कि गांधी को लोगों को बताना चाहिए कि संसद में सांसद के रूप में शपथ लेते समय उन्होंने संविधान की जो प्रति अपने हाथ में थामी थी, वह असली थी या नकली।

हिमंत ने राहुल की तुलना दिशाहीन मिसाइल से की, सोनिया गांधी से प्रशिक्षित करने का आग्रह किया

रांची। असम के मुख्यमंत्री हिमंत विश्व शर्मा ने कांग्रेस नेता राहुल गांधी पर हमला करते हुए शुक्रवार को उनकी तुलना दिशाहीन मिसाइल से की और पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी से उन्हें प्रशिक्षित करने का अनुरोध किया। झारखंड के लिए भाजपा के चुनाव सह-प्रभारी शर्मा ने राज्य में जनजातीय समुदायों की सुरक्षा पर चिंता व्यक्त करते हुए दावा किया कि मणिपुर के जनजातीय समुदायों की तुलना में उन्हें अधिक गंभीर खतरे का सामना करना पड़ रहा है। शर्मा ने कहा, मैं सोनिया गांधी से राहुल गांधी को प्रशिक्षित करने का आग्रह करता हूं क्योंकि एक अनियंत्रित मिसाइल दिशाहीन हो जाती है। उन्होंने राहुल पर जनजातीय समुदायों, दलितों और अन्य पिछड़ा वर्गों (ओबीसी) को विभाजित करने का प्रयास करने का आरोप लगाया। उन्होंने पत्रकारों से कहा कि मणिपुर में जनजातीय आबादी बढ़ रही है जबकि झारखंड में बड़े पैमाने पर घुसपैठ के कारण यह कम हो रही है। उन्होंने कहा, झारखंड में जनजातीय समुदायों की हालत मणिपुर से बदतर है...राहुल गांधी ने भोगनाडीह और गैबाथन जैसे घुसपैठ प्रभावित इलाकों का कभी दौरा नहीं किया। शर्मा ने कहा, राहुल गांधी को कोई गंभीरता से नहीं लेता...हमारा चुनावी एजेंडा झारखंड में झामुमो (झारखंड मुक्ति मोर्चा) के नेतृत्व वाले गठबंधन द्वारा माटी, बेटी, रोटी के शोषण पर केंद्रित है। भाजपा द्वारा आदिवासियों को वनवासी कहे जाने संबंधी राहुल गांधी द्वारा लगाए आरोपों को लेकर शर्मा ने कहा, हम जनजातीय समुदायों को आदिवासी मानते हैं। भाजपा नेता आदिवासी शब्द का हमेशा सम्मान के साथ इस्तेमाल करते हैं। शर्मा ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर लिखा, राहुल गांधी झारखंड आए, लेकिन उन्होंने घुसपैठियों के बारे में एक भी शब्द नहीं कहा और न ही उनकी इंडिया गठबंधन सरकार ने ओबीसी के लिए किए गए वादों को पूरा किया है। राहुल गांधी आदिवासी विरोधी और ओबीसी विरोधी है। झारखंड में विधानसभा चुनाव 13 और 20 नवंबर को होंगे तथा मतगणना 23 नवंबर को होगी।

फर्जी खबर फैलाने के आरोप में तेजस्वी सूर्या, कन्नड़ समाचार पोर्टल के संपादकों के खिलाफ मामला दर्ज

बेंगलुरु। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के सांसद तेजस्वी सूर्या और कुछ कन्नड़ समाचार पोर्टल के संपादकों के खिलाफ एक किसान की आत्महत्या के मामले को वक्फ बोर्ड के साथ भूमि विवाद से जोड़कर फर्जी खबर फैलाने के आरोप में मामला दर्ज किया गया है। पुलिस ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। सोशल मीडिया मंच एक्स पर इन समाचार पोर्टल की खबर को साझा करते हुए बेंगलुरु दक्षिण के सांसद ने सात नवंबर को आरोप लगाया था कि हावेरी जिले में एक किसान ने वक्फ बोर्ड द्वारा उसकी जमीन अधिगृहित कि ए जाने के बारे में पता चलने पर कथित रूप से आत्महत्या कर ली। सूर्या ने आरोप लगाया, अल्पसंख्यकों को खुश करने की जल्दबाजी में मुख्यमंत्री सिद्धरमैया, कर्नाटक सरकार में आवास, वक्फ एवं अल्पसंख्यक विकास मंत्री बी. जेड. जमीर अहमद खान ने राज्य में विनाशकारी हालात पैदा कर दिए हैं, जिसे हर गुजरते दिन के साथ रोकना असंभव होता जा रहा है। बाद में हावेरी जिले के पुलिस अधीक्षक (एसपी) द्वारा समाचार लेख को फर्जी बताए जाने के बाद सांसद ने पोस्ट को हटा दिया था। एसपी ने कहा, साझा की गई खबर फर्जी है। ऐसी कोई घटना सामने नहीं आई। यहां उल्लिखित किसान रुद्रप्पा चन्नप्पा बालिकाई की छह जनवरी 2022 को आत्महत्या की सूचना मिली थी। बताया जाता है कि उसने कर्ज एवं फसल नुकसान के कारण आत्महत्या की थी। उन्होंने बताया कि आदर थाने में दंड प्रक्रिया संहिता (सीआरपीसी) की धारा 174 के तहत मामला दर्ज किया गया था और अंतिम रिपोर्ट पहले ही पेश की जा चुकी है। एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने कहा, हावेरी जिला पुलिस के सोशल मीडिया निगरानी प्रकोष्ठ में तैनात एक पुलिस अधिकारी की शिकायत के आधार पर भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) की धारा 353 (2) (विभिन्न समूहों के बीच घृणा, दुर्भावना या दुश्मनी की भावना पैदा करने या बढ़ावा देने के इरादे से बयान देना, प्रकाशित करना या प्रसारित करना) के तहत कन्नड़ दुनिया ई-पेपर और कन्नड़ न्यूज ई-पेपर के संपादकों तथा तेजस्वी सूर्या के खिलाफ मामला दर्ज किया गया है।

स्वदेशी और पारिवारिक मूल्यों को बढ़ावा दें, पर्यावरण की रक्षा करेंः भागवत

जबलपुर। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) प्रमुख मोहन भागवत ने शुक्रवार को संगठन के सदस्यों से स्वदेशी चीजों को बढ़ावा देने और पर्यावरण संरक्षण के लिए काम करने को कहा। भागवत आरएसएस के मध्य क्षेत्र के महाकौशल प्रांत के 60 से अधिक प्रचारकों की एक बैठक को संबोधित कर रहे थे। मध्य क्षेत्र में मध्य भारत, मालवा और छत्तीसगढ़ आता है। भागवत ने कहा, स्वदेशी वस्तुओं का उपयोग करें। स्वदेशी उत्पादों को बढ़ावा दें। कुटीर उद्योगों से प्राप्त वस्तुओं के उपयोग और प्रचार पर ध्यान दें। बैठक में भाग लेने वाले एक पदाधिकारी ने पीटीआई-भाषा को बताया कि उन्होंने सदस्यों से भारतीय मूल्यों के साथ संयुक्त परिवार व्यवस्था को बढ़ावा देने को भी कहा। आरएसएस पदाधिकारी ने कहा, भागवत ने कार्यकर्ताओं से कहा कि वे परिवार की अवधारणा और मूल्यों को बढ़ावा दें। उन्होंने प्रचारकों से पर्यावरण संरक्षण के लिए काम करने और लोगों में नैतिक जिम्मेदारी को समझने के लिए भी कहा। उन्होंने सभी को पॉलीथिन बैग का इस्तेमाल न करें और बिजली की बर्बादी रोकने के निर्देश दिए। शाम को भागवत ने रामपुर में कॉलेज के छात्रों के साथ आरएसएस की शाखा का दौरा किया। भागवत सोमवार को नागपुर के लिए रवाना होंगे।

शीर्ष न्यायालय ने सार्वजनिक अनुबंधों में एकतरफा मध्यस्थ नियुक्त करने पर रोक लगाई

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने शुक्रवार को संविदा संबंधी विवादों में सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों द्वारा मध्यस्थों की एकतरफा नियुक्ति के खिलाफ फैसला सुनाते हुए कहा कि इस तरह की प्रथाएं संविधान के तहत गारंटीकृत निष्पक्षता, न्याय और समानता के सिद्धांतों का उल्लंघन करती हैं। शीर्ष अदालत ने माना कि मध्यस्थों की नियुक्ति के लिए सार्वजनिक-निजी अनुबंधों में एकतरफा नियुक्ति खंड संविधान के अनुच्छेद 14 (समानता का अधिकार) का उल्लंघन है। प्रधान न्यायाधीश डी.वाई. चंद्रचूड़ और न्यायमूर्ति ऋषिकेश रॉय, न्यायमूर्ति पी.एस. नरसिम्हा, न्यायमूर्ति जे.बी. पारदीवाला और न्यायमूर्ति मनोज मिश्रा की पांच सदस्ईय संविधान पीठ ने जटिल कानूनी मुद्दों पर तीन अलग-अलग और सहमति वाले फैसले सुनाए। अपने और न्यायमूर्ति पारदीवाला तथा न्यायमूर्ति मिश्रा के लिए 113 पृष्ठों का निर्णय लिखते हुए प्रधान न्यायाधीश ने कहा कि पक्षों के साथ समान व्यवहार का सिद्धांत मध्यस्थता कार्यवाही के सभी चरणों पर लागू होता है, जिसमें मध्यस्थों की नियुक्ति का चरण भी शामिल है। पीठ ने केन्द्रीय रेलवे विद्युतीकरण संगठन (कोर) और ईसीआई-एसपीआईसी-एसएमओ-एमसीएमएल संयुक्त उद्यम कंपनी से संबंधित याचिकाओं पर विचार किया, जिसमें इस बात पर ध्यान केंद्रित किया गया कि क्या किसी एक पक्ष, विशेषकर सरकारी संस्थाओं को मध्यस्थों की नियुक्ति का एकमात्र अधिकार दिया जाना स्वीकार्य है।

सुक्खू के लिए लाया गया समोसा उनकी प्लेट तक नहीं पहुंचा, उत्पन्न हुआ विवाद

नई दिल्ली-शिमला। हिमाचल प्रदेश में समोसा राजनीतिक विवाद का विषय बन गया है। कल एक सरकारी कार्यक्रम में मुख्यमंत्री के लिए मंगाए गए समोसे चूकवश उनके स्टाफ को परोसे जाने को लेकर उत्पन्न इस विवाद पर सरकार और पुलिस ने शुक्रवार को अपना-अपना पक्ष रखा जबकि इस मुद्दे पर विपक्ष ने सरकार पर निशाना साधा। मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू ने इस मुद्दे को उछालने की बचकानी हरकत को लेकर भाजपा की निंदा की, वहीं विपक्षी दल ने सरकार की प्राथमिकताओं को लेकर सवाल उठाया और कहा कि यह सरकार देशभर में हंसी का पात्र बन गई है। मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू ने शुक्रवार को नई दिल्ली में कहा कि जांच समोसे के बारे में नहीं थी जैसा कि मीडिया ने पेश किया है, बल्कि यह अधिकारियों के खराब आचरण का पता लगाने के लिए थी।सुक्खू ने इस मुद्दे को लेकर उन पर भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के हमले को भी बचकाना करार दिया। इस बीच, अपराध जांच विभाग (सीआईडी) ने कहा कि सही व्यक्ति को समोसा और केक नहीं परोसे जाने के लिए जिम्मेदार लोगों ने अपने एजेंडे के अनुसार काम किया। विभाग ने कहा कि वह मामले की जांच नहीं कर रहा है। लेकिन एक लिखित रिपोर्ट सौंपी गई है। जब अपराध अन्वेषण विभाग (सीआईडी) मुख्यालय में 21 अक्टूबर को एक समारोह में भाग लेने गए मुख्यमंत्री को परोसने के लिए लक्कड़ बाजार स्थित एक होटल से समोसे और केक लाए गए थे। हालांकि, पुलिस उपाधीक्षक स्तर के अधिकारी द्वारा की गई जांच की रिपोर्ट के अनुसार खाने की चीजें समन्वय की कमी के कारण सुरक्षा कर्मचारियों को परोसी गई थी। सुक्खू ने नई दिल्ली में संवाददाताओं से कहा, यह जांच अधिकारियों के खराब आचरण के बारे में थी लेकिन मीडिया ने इसे समोसे की सीआईडी जांच का रंग दे दिया।

अयोध्या में 121 फीट की अगरबत्ती ने इतिहास रचा

मुंबई। भारत का प्रमुख घरेलू पूजा ब्रांड भारत में रघुकुल फाउंडेशन के सहयोग से इसमें भव्यता, दिव्यता और मनमोहकता का स्पर्श जोड़ा गया अयोध्या के भरतकुंड महोत्सव में अद्भुत 121 फीट की अगरबत्ती की सुगंध। सात.इस दिन के कार्यक्रम का उद्घाटन अशोक कुमार द्वारा अपनी तरह की सबसे बड़ी अगरबत्ती जलाकर किया गया। सैनी उपविभागीय मजिस्ट्रेट और आशुतोष तिवारी कमांडो अधिकारी अयोध्या उपस्थित रहे। इस साल अयोध्या राम मंदिर के उद्घाटन के दौरान साइकिल प्योर ने 111 फुट का मॉडल तैयार किया मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा का जश्न मनाने के लिए मैसूर में अगरबत्तीए जिसे सुश्री सरस्वती ने जलाया था। प्रसिद्ध मूर्तिकार अरुण योगीराज की मां थीं। प्रकाश समारोह सांस्कृतिक गौरव और आध्यात्मिक महत्व को दर्शाता है जिसका उद्देश्य इसे समृद्ध बनाना है। उल्लासए एकता और पारिवारिक सौहार्द का संदेश देता महोत्सव। उद्घाटन समारोह में बोलते हुएए अशोक कुमार सैनी उप.विभागीय मजिस्ट्रेट अयोध्या ने कहा कि भरतकुंड महोत्सव में इस विशेष अवसर का हिस्सा बनना सम्मान की बात है। उत्सव जो हमारी सांस्कृतिक विरासत और आध्यात्मिकता के सार को दर्शाता है। 121 फीट साइकिल प्योर अगरबत्ती और रघुकुल फाउंडेशन द्वारा तैयार की गई अगरबत्ती एक शक्तिशाली प्रतीक है भक्ति और एकता,ऐसी महत्वपूर्ण पहलों का समर्थन करना एक विशेषाधिकार है। यह संतुष्टिदायक है भरतकुंड महोत्सव की भावना को ऊपर उठाते हुए हमारी सांस्कृतिक परंपराओं को संरक्षित करने में योगदान दें। साइकिल प्योर अगरबत्ती की 121 फीट लंबी उत्कृष्ट कृति को एक समर्पित टीम द्वारा 23 दिनों में तैयार किया गया था18 कुशल व्यक्तियों में सेए शुभ दशांगरू शहदए कोनेरी जैसी हाथ से चुनी गई सामग्रियों का उपयोग करते हैं। घी, चंदन पाउडर, गुगुला, अगरू, संब्रानी, ेवदारूए लोबन और सफेदसरसों ;बिली सेसिव चारकोल, जिगाट और गुड़ के साथ। विनिर्माण प्रक्रियाइस में साइकिल प्योर की विशेषज्ञ टीम द्वारा तैयार की गई एक अनूठी तकनीक शामिल है। 121 फीट की अगरबत्ती की रोशनी पर टिप्पणी करते हुएए साइकिल प्योर के एमडीए अर्जुन रंगाअगरबत्ती ने कहा कि आध्यात्मिकता को अपने मूल में रखते हुए हम कलाकार समुदाय के उत्थान के लिए प्रतिबद्ध हैंऔर लोगों के जीवन में आशा लाना।

एडीएम आत्महत्या मामलाः केरल की अदालत से जमानत मिलने के बाद माकपा नेता जेल से रिहा

कन्नूर-त्रिशूर (केरल)। केरल की एक अदालत द्वारा कन्नूर के पूर्व अतिरिक्त जिलाधिकारी (एडीएम) नवीन बाबू की मौत से संबंधित मामले में शुक्रवार को जमानत दिए जाने के कुछ घंटों बाद मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी (माकपा) की नेता पी. पी. दिव्या जेल से रिहा हो गईं। इतना ही नहीं, सत्तारूढ़ पार्टी ने यह कहकर उनके प्रति अपना समर्थन जताया कि वह दुश्मन नहीं बल्कि पार्टी कार्यकर्ता है। जेल से रिहा होने पर दिव्या ने कहा कि वह कन्नूर के पूर्व अतिरिक्त जिलाधिकारी नवीन बाबू की मौत से दुखी है और उन्होंने दावा किया कि वह भी उनके परिवार की तरह ही उनकी मौत की उचित जांच चाहती हैं। उन्होंने कहा, मुझे कानून पर भरोसा है। मैं अदालत के सामने अपना पक्ष रखूंगी। मुझे विश्वास है कि मुझे अदालत के सामने अपनी बेगुनाही साबित करने का मौका मिलेगा। कन्नूर जिला पंचायत की पूर्व अध्यक्ष दिव्या ने कहा कि उन्होंने हमेशा अधिकारियों से नेक मंशा से ही बात की है। इस बीच, माकपा की कन्नूर जिला इकाई के सचिव एम वी जयराजन ने ऐलान किया कि कन्नूर जिला समिति की सदस्य दिव्या को पार्टी के भीतर निर्वाचित पदों से हटा दिया जाएगा।

बत्तीस शिराला में नाग पूजा की प्रथा फिर से शुरू की जाएगीः शाह

सांगली। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने शुक्रवार को कहा कि महाराष्ट्र में चुनाव के बाद महायुति गठबंधन के सत्ता में आने पर उनकी सरकार सांगली जिले के बत्तीस शिराला कस्बे में नाग पूजा प्रथा फिर से शुरू करेगी।यहां एक रैली को संबोधित करते हुए शाह ने कहा कि महा विकास आघाडी (एमवीए) ने जीवित सांपों की पूजा बंद कर दी है, जो नाग पंचमी के दिन की जाती थी।शाह ने कहा, मैं बत्तीस शिराला नाग मंदिर की धरती पर यह कह रहा हूं कि हमारी सरकार दोबारा बनने पर पूरे रीति-रिवाज के साथ इस प्रथा को शुरू करेगी। मैं कहना चाहता हूं कि कानून का भी सम्मान किया जाएगा और नाग पूजा भी परंपरा के अनुसार होगी। बत्तीस शिराला सावन के महीने में मनाए जाने वाले नाग पंचमी के दिन जीवित सांपों की पूजा करने की अपनी प्राचीन प्रथा के लिए जाना जाता है। बंबई उच्च न्यायालय ने 2002 में शहर में नागों के जुलूस पर प्रतिबंध लगा दिया था।।

कानूनी दस्तावेज़ों के प्रबंधन के लिए एआई समाधान

बेंगलुरू। विधिक टेक्नोलॉजी और लार्ज लैंग्वेज मॉडल्स Lexlegis.ai में सबसे आगे स्मगसमहपेंण्प ने परिवर्तनकारी सुविधाए इंटरैक्ट के पेशकश की घोषणा कर दी हैए जिसे कानूनी व्यावसायियों द्वारा दस्तावेज़ की कार्य.प्रणाली का प्रबंधन ए विश्लेषण और उन्हें अनुकूलित करने के तरीके को बदलने के लिए तैयार किया गया है। एक शक्तिशाली लीगल सर्च टूल के रूप में Lexlegis.ai की प्रतिष्ठा पर आधारित इंटरैक्ट कानूनी प्रक्रियाओं को और भी अधिक सुचारुए तेज़ और अधिक कुशल बनाने के लिए एआईए.आधारित क्षमताओं को एकीकृत करते हुए इस प्लेटफ़ॉर्म के विकास को केस प्रबंधन के एक संपूर्ण समाधान के रूप में प्रदर्शित करता है। संस्थापक साकार एस यादव ने कहा कि इंटरैक्ट कानूनी दस्तावेज़ों प्रबंधन को अगले स्तर पर ले जाता है। इसका उद्देश्य केवल शोधकार्य को तेज़ करना नहीं हैकृबल्कि उन कार्यों को स्वचालित करना है जिनके लिए बहुत परिश्रम करना पड़ता है और जो अक्सर विधिक कार्य.प्रणाली की रफ़्तार को धीमा कर देते हैं, जिससे व्यावसायी महत्वपूर्ण निर्णयों और केस के सर्वश्रेष्ठ परिणामों पर पूरा ध्यान नहीं दे पाते हैं।

एसीबी ने जम्मू में भूमि घोटाले का पर्दाफाश किया

जम्मू। भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो (एसीबी) ने जम्मू जिले में करोड़ों रुपए के भूमि घोटाले का पर्दाफाश कर कई राजस्व अधिकारियों, भूमि हड़पने वालों और उनके सहयोगियों के खिलाफ मामले दर्ज किए हैं। एक अधिकारी ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। एसीबी के प्रवक्ता ने कहा कि इस हालिया सफलता से राजस्व अधिकारियों और भू-माफियाओं के बीच एक नेटवर्क का पर्दाफाश हुआ जो असरवान क्षेत्र में भू-माफिया द्वारा अवैध रूप से जब्त की गई लगभग 40 कनाल कस्टोडियन भूमि के घोटाले में शामिल है। इससे पहले, एसीबी ने 62 एकड़ से अधिक कस्टोडियन भूमि से जुड़े एक अन्य घोटाले का पर्दाफाश किया था, जिसकी जांच के लिए पहले ही 15 प्राथमिकी दर्ज की जा चुकी है।प्रवक्ता ने बताया कि जमीन हड़पने वालों अपराधियों ने जम्मू के असरवान, मिश्रीवाला और भलवाल में सैकड़ों कनाल भूमि पर कुछ राजस्व और पुलिस अधिकारियों के सहयोग से धोखाधड़ी से कब्जा कर लिया। उन्होंने बताया कि कई मामलों में अभिलेखों से छेड़छाड़ की गई और जमीन अलग-अलग लोगों को बेची गई। प्रवक्ता ने बताया कि एसीबी ने सत्यापन के दौरान पाया कि पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर से आए शरणार्थियों से आपराधिक साजिश के तहत प्रपत्र 3-ए (फॉर्म अल्फ) और पावर ऑफ अटॉर्नी (मुख्तारनामा) दस्तावेज हासिल किए गए। उन्होंने बताया कि जमीन हड़पने वालों से जुड़े बिचौलियों ने उन्हें अतिरिक्त जमीन देने या जल्द पैसे देने का झूठा वादा किया था।

केवल कांग्रेस ही मणिपुर में साम्प्रदायिक सौहार्द सुनिश्चित कर सकती है : इबोबी

इम्फाल। मणिपुर के पूर्व मुख्यमंत्री ओकराम इबोबी सिंह ने शुक्रवार को दावा किया कि केवल कांग्रेस ही राज्य में साम्प्रदायिक सौहार्द सुनिश्चित कर सकती है और जातीयता में भिन्नता के बावजूद विकास लाएगी। यहां पार्टी के प्रदेश मुख्यालय में एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए सिंह ने आरोप लगाया कि राज्य में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने सत्ता में आने के बाद ऐसे कई कदम उठाए जिसने समुदायों के बीच अशांति, विभाजन और गलतफहमी पैदा की है। उन्होंने कहा, मेरा दृढ़ता से मानना है कि राज्य में भाजपा सरकार के सत्ता में रहने तक समुदायों के बीच शांति, परस्पर सहमति और सम्मान की भावना नहीं आ सकती।

महाराष्ट्र सरकार की लाडकी बहिन योजना पूरे देश में लोगों का ध्यान आकर्षित कर रही हैः मोदी

भाषा। नासिक

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शुक्रवार को महाराष्ट्र में वंचित महिलाओं के लिए महायुति सरकार की लाडकी बहिन योजना की सराहना करते हुए कहा कि यह योजना पूरे देश में लोगों का ध्यान आकर्षित कर रही है। इस वर्ष जून में घोषित इस योजना के तहत महायुति सरकार 21-65 वर्ष की आयु की उन महिलाओं को 1,500 रुपए की मासिक सहायता प्रदान करती है, जिनकी वार्षिक पारिवारिक आय 2.5 लाख रुपए तक सीमित है।महायुति सरकार में भाजपा, शिवसेना और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) शामिल हैं।महायुति उम्मीदवारों के समर्थन में उत्तर महाराष्ट्र के नासिक में एक चुनावी रैली को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने इस योजना की सराहना की और इसका विरोध करने के लिए विपक्षी गठबंधन महा विकास आघाडी (एमवीए) की आलोचना की। उन्होंने कहा, एमवीए महाराष्ट्र की महिलाओं की सबसे बड़ी दुश्मन है। महाराष्ट्र सरकार की एक योजना लाडकी बहिन योजना पूरे देश में लोकप्रिय हो रही है। एमवीए इस योजना के खिलाफ है और इसके खिलाफ अदालत का दरवाजा खटखटाया है। प्रधानमंत्री ने कहा कि उनकी सरकार महिला सशक्तीकरण के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा, हमने तीन करोड़ महिलाओं को लखपति दीदी बनाया है। हम महिलाओं के नाम पर (प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत) मकान भी आवंटित कर रहे हैं। लखपति दीदी एक स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) की सदस्य हैं, जिनकी वार्षिक आय एक लाख रुपए या उससे अधिक है। उन्होंने किसानों के कल्याण के बारे में भी बात की। उन्होंने कहा कि महाराष्ट्र में किसानों को प्रधानमंत्री शेतकारी योजना और नमो शेतकारी योजना का लाभ मिल रहा है। क्षेत्र के प्याज उत्पादकों को लुभाने के लिए प्रधानमंत्री ने कहा कि केंद्र ने इस वस्तु से संबंधित निर्यात नीतियों में बदलाव किए हैं। मोदी ने कहा, सोयाबीन, कपास किसानों को मदद मिल रही है। इथेनॉल उत्पादन से गन्ना किसानों की आय बढ़ी है। किसानों के लिए प्याज निर्यात नीतियों में बदलाव किए गए हैं।

महाराष्ट्र में सब चाहते हैं कि चुनाव के बाद महायुति सरकार बनी रहे, फडणवीस विजई हों: अमित शाह

भाषा। सांगली (महाराष्ट्र)

भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के वरिष्ठ नेता अमित शाह ने शुक्रवार को कहा कि पूरे महाराष्ट्र में लोग चाहते हैं कि विधानसभा चुनावों के बाद महायुति सरकार सत्ता में बनी रहे और उपमुख्यमंत्री देवेन्द्र फडणवीस की जीत हो। सांगली जिले के शिराला में एक रैली को संबोधित करते हुए शाह ने कहा कि केंद्र में नरेन्द्र मोदी नीत भाजपा सरकार सत्ता में है और चुनाव के बाद राज्य में भाजपा-शिवसेना-राकांपा गठबंधन की सरकार बनना जरूरी है। शाह ने कहा, गत 20 नवंबर को पूरे महाराष्ट्र में मतदान होने वाला है और आप लोगों को निर्णायक रुख अपनाना है। डेढ़ महीने पहले मैंने पूरे राज्य का दौरा किया था। मैं विदर्भ, मुंबई, कोंकण, कोल्हापुर, उत्तर महाराष्ट्र का दौरा कर चुका हूं। जहां भी गया, वहां एक ही बात (भावना) थी और वो थी महायुति सरकार बनाना और देवेंद्र फडणवीस को विजई बनाना। केंद्रीय गृह मंत्री ने कहा कि केंद्र और राज्य दोनों जगह भाजपा नीत सरकार होने से महाराष्ट्र शासन में नंबर एक बनेगा। पुणे में जब उपमुख्यमंत्री और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) के अध्यक्ष अजित पवार से संवाददाताओं ने पूछा कि क्या शाह के बयान में फडणवीस को चुनाव के बाद मुख्यमंत्री बनाने का इशारा किया गया है तो राकांपा नेता ने कहा कि फैसला मिलकर लिया जाएगा। अजित पवार ने कहा कि सत्तारूढ़ गठबंधन के नेता साथ बैठेंगे और तय करेंगे।

शिवसेना यूबीटी का चुनाव चिह्न मशाल घरों को जलाने, विभाजन पैदा करने का माध्यमः शिंदे

भाषा। छत्रपति संभाजीनगर

महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने शुक्रवार को शिवसेना(यूबीटी) पर उसके चुनाव चिह्न जलती हुई मशाल को लेकर निशाना साधा और कहा कि यह घरों में आग लगाने और समुदायों के बीच दरार पैदा करने का माध्यम है। उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि जो लोग चांदी के चम्मच के साथ पैदा हुए हैं, वे लाडकी बहिन योजना के तहत पात्र महिलाओं को दी जा रही 1,500 रुपए की मासिक वित्तीय सहायता का महत्व नहीं समझेंगे। शिंदे अपनी पार्टी शिवसेना के उम्मीदवार और स्वास्थ्य मंत्री तानाजी सावंत के समर्थन में चुनाव प्रचार के लिए धाराशिव जिले के परांदा में एक चुनावी रैली को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा, विपक्ष ने पहले कहा था कि हम राज्य में महिलाओं को जो पैसा (लाडकी बहिन योजना के तहत दिए जाने वाले 1,500 रुपए) दे रहे हैं, वह रिश्वत है। जो लोग चांदी के चम्मच के साथ पैदा हुए हैं, वे 1,500 रुपए का महत्व नहीं समझेंगे। मैंने बहुत पहले ही तय कर लिया था कि सत्ता मिलने के बाद हम राज्य में महिलाओं और बुजुर्गों को वित्तीय सहायता देंगे। परांदा में शिवसेना (यूबीटी) द्वारा पार्टी का उम्मीदवार नहीं उतारे जाने पर उन्होंने कहा, उन्होंने अपना चुनाव चिह्न मशाल बेच दिया है और इस निर्वाचन क्षेत्र को भी छोड़ दिया है। जलती हुई मशाल, क्रांति का प्रतीक नहीं है, बल्कि घरों में आग लगाने और समुदायों के बीच दरार पैदा करने का माध्यम है। उन्होंने कहा कि वे (शिवसेना-यूबीटी) जानते थे कि वे इस निर्वाचन क्षेत्र को खोने जा रहे हैं, इसलिए उन्होंने यह क्षेत्र किसी और को दे दिया। उन्होंने कहा, जिस दिन (अविभाजित) शिवसेना ने धनुष और बाण चिह्न के साथ कांग्रेस से हाथ मिलाया, वह सबसे दुर्भाग्यपूर्ण दिन था। शिवसेना पिछड़ गई और इसलिए हमने विद्रोह कर दिया और तानाजी सावंत मेरे साथ आ गए। अविभाजित शिवसेना के वरिष्ठ नेता शिंदे ने उद्धव ठाकरे के नेतृत्व के खिलाफ बगावत कर दी थी और जून 2022 में राज्य में सरकार बनाने के लिए भाजपा से हाथ मिला लिया था। उस समय सत्ता में रही ठाकरे के नेतृत्व वाली महा विकास आघाडी (एमवीए) सरकार इसके बाद, गिर गई थी।

कांग्रेस नहीं बल्कि मोदी सरकार समर्थन के लिए बैसाखी पर निर्भर हैः पटोले

मुंबई। महाराष्ट्र कांग्रेस के प्रमुख नाना पटोले ने शुक्रवार को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पर उस बयान के लिए पलटवार किया जिसमें उन्होंने कहा था कि कांग्रेस एक पर-जीवी है जो बैसाखी के सहारे जीवित है। दिन की शुरुआत में राज्य में चुनावी रैलियों को संबोधित करते हुए, प्रधानमंत्री ने कहा कि कांग्रेस को महाराष्ट्र, बिहार, उत्तर प्रदेश, झारखंड आदि में जीवित रहने के लिए सहयोगियों की आवश्यकता है। पटोले ने कहा कि प्रधानमंत्री दावा करते रहते हैं कि कांग्रेस खत्म हो गई है लेकिन अपने भाषणों में कम से कम 50 बार पार्टी का जिक्र करते हैं। उन्होंने कहा," कांग्रेस नहीं बल्कि मोदी सरकार समर्थन के लिए बैसाखी पर निर्भर है। ओबीसी के लिए मोदी की चिंता नकली स्नेह के अलावा कुछ नहीं है। ओबीसी ने भाजपा के कारण राजनीतिक आरक्षण खो दिया है। मोदी ने कहा था कि कांग्रेस ओबीसी से नाराज थी क्योंकि 1990 (मंडल राजनीति के युग की शुरुआत) के दशक में उनके एकीकरण के परिणामस्वरूप पार्टी को सत्ता गंवानी पड़ी। इसलिए, वह ओबीसी को कमजोर करके उनकी एकता को नष्ट करना चाहती है ताकि उनके लिए सत्ता के दरवाजे फिर से खुल जाएं।

भ्रष्ट लोगों के विरूद्ध त्वरित कानूनी कार्रवाई बहुत ही जरूरी हैः राष्ट्रपति मुर्मू

भाषा। नई दिल्ली

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने शुक्रवार को कहा कि भ्रष्ट लोगों के विरूद्ध त्वरित कानूनी कार्वाई बहुत ही जरूरी है क्योंकि देरी या कमजोर कार्वाई से ऐसे लोगों को बढ़ावा मिलता है। उन्होंने यहां केन्द्रीय सतर्कता आयोग (सीवीसी) के सतर्कता जागरूकता सप्ताह समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि विश्वास सामाजिक जीवन का आधार है। मुर्मू ने कहा, यह एकता का स्रोत है। सरकार के काम और कल्याणकारी योजनाओं में जनविश्वास शासन की शक्ति का स्रोत है। भ्रष्टाचार न केवल आर्थिक प्रगति में बाधा है, बल्कि यह समाज में विश्वास को भी घटाता है। यह लोगों में भाईचारे की भावना पर प्रतिकूल असर डालता है। इसका देश की एकता और अखंडता पर भी व्यापक प्रभाव पड़ता है। राष्ट्रपति ने कहा कि भ्रष्टाचार के खिलाफ त्वरित कानूनी कार्वाई बेहद जरूरी है। उन्होंने कहा, कार्वाई में देरी या कमजोर कार्वाई अनैतिक व्यक्तियों को बढ़ावा देती है। लेकिन साथ ही यह भी जरूरी है कि हर कार्वाई और व्यक्ति को संदेह की नजर से न देखा जाए। हमें इससे बचना चाहिए। व्यक्ति की गरिमा को ध्यान में रखा जाना चाहिए एवं कोई भी कार्वाई दुर्भावना से प्रेरित नहीं होनी चाहिए। किसी भी कार्वाई का उद्देश्य समाज में न्याय और समानता स्थापित करना होना चाहिए। प्रत्यक्ष लाभ अंतरण और ई-निविदा का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि भारत सरकार ने भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने के लिए कई कदम उठाए हैं। उन्होंने कहा कि पिछले दस सालों में धनशोधन रोकथाम अधिनियम के तहत 12 अरब डॉलर की संपत्तियां जब्त की गई हैं। राष्ट्रपति ने कहा, मुझे विश्वास है कि भ्रष्टाचार को कतई बर्दाश्त नहीं करने की नीति भ्रष्टाचार को जड़ से उखाड़ फेंकेगी। केन्द्रीय सतर्कता आयोग हर साल सतर्कता सप्ताह मनाता है। इस साल 28 अक्टूबर से तीन नवंबर तक सतर्कता सप्ताह मनाया गया और उसका ध्येय वाक्य राष्ट्र की समृद्धि के लिए अखंडता की संस्कृति रखा गया। सतर्कता सप्ताह के अलावा आयोग तीन महीने का एहतियाती सतर्कता अभियान चलाता है।

एएमयू के अल्पसंख्यक दर्जे को लेकर उच्चतम न्यायालय के फैसले का विपक्षी दलों ने किया स्वागत

नई दिल्ली। विपक्षी दलों ने शुक्रवार को अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय (एएमयू) पर उच्चतम न्यायालय के फैसले का स्वागत किया और कांग्रेस नेता अभिषेक सिंघवी ने कहा कि संवैधानिक बुद्धिमत्ता के लिए यह फैसला अत्यंत प्रशंसनीय है। हालांकि, सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने कहा कि जब उच्चतम न्यायालय की नई पीठ इस मामले की सुनवाई करेगी तो केंद्र सरकार विश्वविद्यालय के उच्चतम न्यायालय ने शुक्रवार को अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के अल्पसंख्यक दर्जे संबंधी मामले को नई पीठ के पास भेजने का निर्णय लिया और 1967 के उस फैसले को खारिज कर दिया जिसमें कहा गया था कि विश्वविद्यालय को अल्पसंख्यक संस्थान नहीं माना जा सकता क्योंकि इसकी स्थापना केंद्रीय कानून के तहत की गई थी। कांग्रेस सांसद सिंघवी ने पीटीआई-भाषा से कहा, बहुमत का निर्णय अपनी दृढ़ता, संवैधानिक बुद्धिमत्ता और ऐतिहासिक गहराई के कारण अत्यधिक सराहनीय है, जिसके साथ यह एएमयू की स्थापना के मूल उद्गम और उद्देश्य को मान्यता देता है। उन्होंने कहा कि अल्पसंख्यकों पर विशेष ध्यान देने के साथ व्यापक, प्रगतिशील और आधुनिक शिक्षा का प्रावधान पूरे विचार का आधार था और केवल यह तथ्य कि बाद में इसे एक केंद्रीय विश्वविद्यालय का अतिरिक्त दर्जा मिल गया, उस मूल मंशा को कभी भी कम नहीं कर सकता है और न ही करना चाहिए। वरिष्ठ अधिवक्ता ने कहा, यह देखना अच्छा है कि बहुमत के फैसले ने स्थापित स्थिति को मान्यता दी है, उसे बहाल किया है और उसे जारी रखा है, जिसे दुर्भाग्य से सत्ताधारियों द्वारा जानबूझकर और शरारतपूर्ण तरीके से अस्थिर करने का प्रयास किया गया था।

भारत वैश्विक महाशक्तियों की सूची में शामिल होने का हकदार: पुतिन

भाषा। मॉस्को

रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने कहा है कि भारत वैश्विक महाशक्तियों की सूची में शामिल होने का हकदार है क्योंकि इसकी अर्थव्यवस्था वर्तमान में किसी भी अन्य देश की तुलना में तेजी से बढ़ रही है। सोचि में वल्दाई डिस्कशन क्लब के पूर्ण सत्र को संबोधित करते हुए पुतिन ने बृहस्पतिवार को यह भी कहा कि भारत के साथ रूस सभी दिशाओं में संबंध विकसित कर रहा है और द्विपक्षीय संबंधों में एक-दूसरे पर दोनों देशों का गहरा विश्वास है। उन्होंने कहा, डेढ़ अरब की आबादी, दुनिया की सभी अर्थव्यवस्थाओं में सबसे तेज प्रगति, प्राचीन संस्कृति और भविष्य में विकास की बहुत अच्छी संभावनाओं की वजह से भारत को निःसंदेह महाशक्तियों की सूची में शामिल किया जाना चाहिए। भारत को महान देश बताते हुए पुतिन ने कहा, हम भारत के साथ सभी दिशाओं में संबंध विकसित कर रहे हैं। भारत एक महान देश है, अब जनसंख्या के मामले में सबसे बड़ा देश है जहां की आबादी 1.5 अरब है और साथ ही जहां हर साल आबादी में एक करोड़ की वृद्धि होती है। उन्होंने कहा कि भारत आर्थिक प्रगति में दुनिया का नेतृत्व कर रहा है। रूसी समाचार एजेंसी तास ने पुतिन के हवाले से कहा, हमारे संबंध कहाँ और किस गति से विकसित होंगे, इसका हमारा दृष्टिकोण आज की वास्तविकताओं पर आधारित है। हमारा सहयोग हर साल कई गुना बढ़ रहा है। पुतिन ने कहा कि सुरक्षा और रक्षा क्षेत्र में भारत तथा रूस के बीच संपर्क विकसित हो रहे हैं। उन्होंने कहा, देखिए कितने प्रकार के रूसी सैन्य उपकरण भारतीय सशस्त्र बलों की सेवा में हैं। इस रिश्ते में काफी हद तक विश्वास है। हम भारत को केवल अपने हथियार नहीं बेचते हैंअ हम उन्हें संयुक्त रूप से डिजाइन भी करते हैं। पुतिन ने उदाहरण के तौर पर ब्रह्मोस क्रूज मिसाइल परियोजना का उल्लेख किया। उन्होंने कहा, वास्तव में, हमने इसे (मिसाइल) तीन वातावरणों में उपयोग के लिए उपयुक्त बनाया है – हवा में, समुद्र में और जमीन पर। भारत के सुरक्षा लाभ के लिए संचालित ए परियोजनाएं जारी हैं। रूसी राष्ट्रपति ने कहा, यह व्यापक रूप से ज्ञात है और किसी को भी इससे कोई समस्या नहीं है।

इजराइली रक्षा मंत्री गैलेंट ने आधिकारिक रूप से पद छोड़ा

यरूशलम। इजराइल के रक्षा मंत्री योआव गैलेंट ने शुक्रवार को एक समारोह में आधिकारिक तौर पद छोड़ दिया। प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने गैलेंट को बर्खास्त करने के बाद उनकी जगह पूर्व विदेश मंत्री इजराइल काट्ज को रक्षा मंत्री नियुक्त किया है। गैलेंट को हटाए जाने के बाद पूरे देश में बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शन हो रहे हैं। इजराइल में कई लोग गैलेंट को धुर-दक्षिणपंथी सरकार में एकमात्र उदारवादी व्यक्ति के रूप में देखते थे। उनकी बर्खास्तगी को एक संकेत के रूप में देखा जा रहा है कि बेंजामिन नेतन्याहू की धुर-दक्षिणपंथी सरकार की हमास द्वारा बंधक बनाए गए बंधकों को छुड़ाने में रुचि नहीं रह गई है। गैलेंट ने सेना को धन्यवाद दिया और चेतावनी दी कि युद्ध का मिशन अभी पूरा नहीं हुआ है। उन्होंने कहा, हमें अपने नैतिक और पारंपरिक दायित्व को पूरा करना होगा, और युद्ध का उद्देश्य शेष 101 बंधकों को रिहा कराकर स्वदेश लाना है। गैलेंट की जगह लेने वाले काट्ज लंबे समय से नेतन्याहू के वफादार और अनुभवी कैबिनेट मंत्री हैं। काट्ज ने गैलेंट को धन्यवाद दिया और कहा कि युद्ध का उद्देश्य ईरानी आक्रामकता को रोकना, उसकी क्षमताओं को खत्म करना, हमास का खात्मा और हिज्बुल्ला को हराना है। उन्होंने कहा कि बंधकों को वापस लाना सर्वोच्च "नैतिक प्राथमिकतौ है।काट्ज ने कहा, "योआव, हम दोस्त थे और दोस्त रहेंगे क्योंकि हम उन्हीं चीजों में विश्वास करते हैं जो इजराइल, यहूदी देश की सुरक्षा और भविष्य को सुरक्षित बनाएंगी।

नेपाल में भारतीय नागरिक मृत पाया गया

काठमांडू। नेपाल के काठमांडू शहर में शुक्रवार को 40 वर्षीय एक भारतीय नागरिक किराए के अपने कमरे मे मृत पाया गया। पुलिस ने यह जानकारी दी। धीरज रैनियार का शव शुक्रवार को काठमांडू मेट्रोपॉलिटन सिटी के नारादेवी टोले मे मिला। पुलिस को शव उसके कमरे मे पड़ा मिला। पुलिस ने बताया कि मौत के पीछे का कारण अभी पता नही चल पाया है। अधिकारियो ने मामले की जांच शुरू कर दी है।

नवाज शरीफ की तरह पाकिस्तान छोड़कर नहीं भागूंगा: इमरान खान

लाहौर। जेल मे बंद पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान ने किसी देश से शरण मांगने के दावो को खारिज करते हुए एक बार फिर कहा कि वह पूर्व प्रधानमंत्री नवाज शरीफ की तरह देश छोड़कर नही भागेगे। रक्षा मंत्री ख्वाजा आसिफ के हाल ही मे यह कहने के बाद अटकले शुरू हो गईं कि खान की पार्टी पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई)"विदेशी शक्तियौ से खान को रिहा कराने और उन्हे विदेश भेजने का आग्रह कर रही है। खान ने एक्स पर जारी बयान मे कहा कि वह किसी भी कीमत पर देश नही छोड़ेंगे।बृहस्पतिवार को जारी बयान मे खान के हवाले से कहा गया है, "मै कभी देश छोड़कर नही भागूंगा। मेरा नाम स्थाई रूप से नो-फ्लाई सूची मे डाल दीजिए। मै कही नही जा रहा। पहले, (पूर्व प्रधान मंत्री) नवाज शरीफ ने देश छोड़ाअ अब उनकी बेटी (पंजाब की मुख्यमंत्री मरियम शरीफ) भी चली गई। पीएमएल-एन के अनुसार मरियम चिकित्सा के लिए बृहस्पतिवार को स्विटजरलैड रवाना हुई थी।

भारत ने पारंपरिक हथियार नियंत्रण पर पाक के प्रस्ताव के खिलाफ मतदान किया

संयुक्त राष्ट्र। भारत ने क्षेत्रीय और उपक्षेत्रीय स्तर पर पारंपरिक हथियार नियंत्रण विषय पर पाकिस्तान के प्रस्ताव के खिलाफ मतदान किया। संयुक्त राष्ट्र महासभा की प्रथम समिति मे क्षेत्रीय और उपक्षेत्रीय स्तर पर पांरपरिक हथियार नियंत्रण पर पाकिस्तान और सीरिया के प्रस्ताव को रिकॉर्ड मत से पारित किया गया। प्रस्ताव के पक्ष मे 179 सदस्यो ने मतदान किया, इजराइल ने मतदान मे भाग नही लिया वही भारत इस प्रस्ताव के खिलाफ मतदान करने वाला एकमात्र देश रहा। संयुक्त राष्ट्र महासभा की प्रथम समिति निरस्त्रीकरण, वैश्विक चुनौतियो और शांति के लिए खतरो से जुड़े मामलो को देखती है। प्रस्ताव मे क्षेत्रीय और अंतरराष्ट्रीय शांति एवं सुरक्षा को बढ़ावा देने मे पारंपरिक हथियार नियंत्रण की महत्वपूर्ण भूमिका को स्वीकारा गया।

अल्बानिया में खतरनाक अपशिष्ट ले जाने के संदेह में जहाज को रोका गया

तिराना (अल्बानिया)। दक्षिण-पूर्वी यूरोप के बाल्कन प्रायद्वीप मे स्थित अल्बानिया के प्रमुख बंदरगाह पर शुक्रवार को एक जहाज को भारी मात्रा मे खतरनाक अपशिष्ट ले जाने के संदेह मे रोक लिया गया। अभियोजको ने आदेश दिया है कि जहाज मे मौजूद सामान की जांच की जाएगी। बंदरगाह और अभियोजक कार्यालय के अधिकारियो ने बताया कि तुर्किए के ध्वज वाले मोलिवा एक्सए443ए नामक जहाज को डुरेस बंदरगाह से लगभग 1.5 किलोमीटर (एक मील) दूर रखा गया है, जब तक कि अधिकारियो को कंटेनरो को रखने के लिए बंदरगाह के बाहर कोई स्थान नही मिल गया। उम्मीद है कि जहाज के कंटेनरो को छह किलोमीटर दूर पोर्टो रोमानो स्थित एक एजेंसी को भेजा जाएगा। दस दिन पहले, अभियोजको ने कंटेनरो को जब्त करने और निगरानी के लिए पर्यावरणीय और भौतिक रूप से सुरक्षित स्थान पर रखने का आदेश दिया था।

भारत, आसियान सहयोग कई मुद्दों से निपटने में महत्वपूर्ण हो सकता है: जयशंकर

भाषा। सिंगापुर

विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने शुक्रवार को कहा कि भारत और आसियान (दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों का संगठन) के सदस्य जनसंख्या के लिहाज से बड़े देश हैं और उनका सहयोग समसामयिक मुद्दों के समाधान, खाद्य एवं स्वास्थ्य सुरक्षा सुनिश्चित करने तथा म्यांमा जैसी राजनीतिक चुनौतियों से निपटने में महत्वपूर्ण हो सकता है। जयशंकर ने ए टिप्पणी आसियान- इंडिया नेटवर्क ऑफ थिंक टैंक्स के आठवें गोलमेज सम्मेलन को संबोधित करने के दौरान की। इस गोलमेज सम्मेलन का विषय था, परिवर्तनशील विश्व में मार्गदर्शन: आसियान-भारत सहयोग के लिए एजेंडा। एक दिवसीय यात्रा पर यहां आए जयशंकर ने कहा, भारत और आसियान के सदस्य जनसंख्या के लिहाज से प्रमुख देश हैं, जिनकी उभरती मांगें न केवल एक-दूसरे को सहायता प्रदान कर सकती हैं बल्कि अंतरराष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में बड़ी उत्पादक शक्तियां बन सकती हैं। उन्होंने कहा कि आसियान और भारत की आबादी विश्व की एक-चौथाई आबादी से अधिक है। आसियान सदस्यों में ब्रुनेई, कंबोडिया, इंडोनेशिया, लाओस, मलेशिया, म्यांमा, फिलीपींस, सिंगापुर, थाईलैंड और वियतनाम शामिल हैं। उन्होंने कहा, हमारी उपभोक्ता मांग और जीवनशैली से जुड़ी पसंद खुद ही अर्थव्यवस्था को गति देने वाली है। वे सेवाओं के पैमाने और कनेक्टिविटी को भी आकार देंगे क्योंकि हम व्यापार, पर्यटन, एक दूसरे देश में सुगम आवाजाही और शिक्षा को बढ़ावा देते हैं। हमारे प्रयासों की व्यापकता तात्कालिक क्षेत्र से कहीं आगे तक फैली हुई है। उन्होंने कहा, समकालीन चुनौतियों का समाधान करने में भी सहयोग महत्वपूर्ण हो सकता है। जलवायु परिवर्तन की चरम स्थितियों वाले युग में खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करना एक बड़ी चिंता का विषय है। इसी तरह, वैश्विक महामारियों के अनुभव के साथ स्वास्थ्य सुरक्षा की तैयारी भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। जयशंकर ने कहा कि म्यांमा जैसे साझा क्षेत्र में राजनीतिक चुनौतियां हैं और रहेंगी, जिनका भारत और आसियान को मिलकर समाधान करना होगा। उन्होंने कहा, आज म्यांमा की स्थिति इसका एक प्रमुख उदाहरण है। जो समीपवर्ती लोग हैं उनकी रुचि और मैं कह सकता हूं कि उनका दृष्टिकोण हमेशा कठिन होता है...। उन्होंने जोर देकर कहा, हमारे पास इससे दूर हटने की विलासिता नहीं है न ही समय है। यह एचएडीआर (मानवीय सहायता और आपदा राहत) स्थितियों के साथ-साथ समुद्री सुरक्षा और संरक्षा के मामले में भी तेजी से बढ़ रहा है। जयशंकर ने स्वयं-सहायता की एक मजबूत संस्कृति का आह्वान किया, जो सिर्फ मिलकर समय पर योजना बनाने से ही आएगी। उन्होंने कहा कि भारत और आसियान के बीच के संबंध गहरे सांस्कृतिक और सभ्यतागत जुड़ाव पर आधारित हैं और इसका फलना फूलना अपने आप में महत्वपूर्ण है। मंत्री ने हाल के समय में धरोहरों के जीर्णोद्धार और कला के रूपों के संरक्षण में भारत के योगदान को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि भारत-आसियान साझेदारी अब अपने चौथे दशक में है और इसमें अपार संभावनाएं हैं। उन्होंने कहा, द्विपक्षीय और त्रिपक्षीय संबंधों ने हमारी निकटता में योगदान दिया है। मंत्री ने मेकांग गंगा सहयोग और इंडोनेशिया-मलेशिया-थाईलैंड त्रिपक्षीय विकास का उदाहरण दिया और कहा कि इन पहलों का असर महसूस हो रहा है। जैसे-जैसे हिंद-प्रशांत क्षेत्र विकसित हो रहा है, भारत आसियान की केन्द्रीयता और एकजुटता के प्रति अपना समर्थन व्यक्त कर रहा है। उन्होंने कहा, भारत दृष्टिकोण और सार दोनों के संदर्भ में अंतरराष्ट्रीय कानून, नियम और मानदंडों के प्रति सम्मान के बारे में समान रूप से स्पष्ट रहा है क्योंकि पिछले चार दशकों में (एक दूसरे के प्रति) झुकाव केवल बढ़ा है। यह एक ऐसा आधार है जिस पर हम उच्च महत्वाकांक्षाओं की आकांक्षा रख सकते हैं। जयशंकर ने कहा, विकास और प्रगति ने दोहरा चरित्र दिखाया है। एक ओर, उन्होंने अभूतपूर्व पैमाने पर समृद्धि पैदा की है, उत्पादन की नई ताकतों को जन्म दिया है, प्रौद्योगिकी की संभावनाओं को प्रदर्शित किया है और कनेक्टिविटी के प्रसार को बढ़ावा दिया है। साथ ही, हमने बाजार हिस्सेदारी और आर्थिक निर्भरता का लाभ उठाते हुए, अंतरराष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का शस्त्रीकरण और कनेक्टिविटी का रणनीतिकरण भी देखा है। उन्होंने यह भी कहा कि डेटा गोपनीयता और साइबर सुरक्षा प्रमुख चिंताएं बन गई हैं।

विदेश मंत्री ने सिंगापुर के शीर्ष नेताओं के साथ द्विपक्षीय संबंधों पर चर्चा की

सिंगापुर। विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने शुक्रवार को सिंगापुर के राष्ट्रपति थर्मन षणमुगरत्नम और प्रधानमंत्री लॉरेंस वोंग सहित देश के शीर्ष नेताओं से मुलाकात की और द्विपक्षीय साझेदारी को आगे बढ़ाने के तरीके पर चर्चा की तथा क्षेत्रीय और वैश्विक विकास पर दृष्टिकोण साझा किया।जयशंकर अपनी दो देशो की यात्रा के दूसरे चरण मे यहां आए है। इससे पहले वे आस्ट्रेलिया भी गए थे।जयशंकर ने एक्स पर पोस्ट किया, सिंगापुर के राष्ट्रपति थर्मन षणमुगरत्नम से मुलाकात की। वैश्विक राजनीतिक और आर्थिक परिदृश्य तथा भारत और सिंगापुर के लिए इसके निहितार्थो पर चर्चा की। वोंग के साथ अपनी बैठक के दौरान जयशंकर ने उन्हे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं दी।वोंग के साथ अपनी मुलाकात के बाद उन्होंने एक्स पर लिखा, हमारी प्रौद्योगिकी, कौशल और औद्योगिक साझेदारी को आगे बढ़ाने पर सार्थक चर्चा हुई। क्षेत्रीय मंचो पर हमारी भागीदारी के बारे मे भी बात की गई। वोंग देश के वित्त मंत्री भी है। इससे पहले उन्होंने सिंगापुर के उप प्रधानमंत्री तथा व्यापार एवं उद्योग मंत्री गान किम योंग से मुलाकात करके देश की एक दिवसीय यात्रा की शुरुआत की।जयशंकर ने एक्स पर पोस्ट किया, औद्योगिक पार्क, हरित ऊर्जा, कौशल, नवाचार और सेमीकंडक्टर पर ध्यान केंद्रित करते हुए दोनो देशो के बीच समकालीन साझेदारी को आगे बढ़ाने पर चर्चा की। उन्होंने अपने सिंगापुरी समकक्ष विवियन बालकृष्णन से भी मुलाकात की। जयशंकर ने कहा, मुझे अपने अच्छे मित्र विदेश मंत्री विवियन बालकृष्णन से मिलकर हमेशा खुशी होती है।

आपके सपनों का अमेरिका बुला रहा है : बाइडन ने डेमोक्रेटिक समर्थकों से कहा

भाषा। वाशिंगटन

अमेरिका के निवर्तमान राष्ट्रपति जो बाइडन ने नवनिर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को जनवरी में सत्ता का शांतिपूर्ण एवं व्यवस्थित हस्तांतरण सुनिश्चित करने का बृहस्पतिवार को संकल्प लिया और कहा कि चुनावी हार का मतलब यह नहीं है कि डेमोक्रेट आंदोलन हार गया है। बाइडन ने 78 वर्षीय ट्रंप के राष्ट्रपति पद का चुनाव जीतने के एक दिन बाद राष्ट्र के नाम अपने संबोधन में यह टिप्पणी की। रिपब्लिकन पार्टी के उम्मीदवार ट्रंप ने डेमोक्रेटिक पार्टी की उम्मीदवार एवं निवर्तमान उपराष्ट्रपति कमला हैरिस को हराया और इसी के साथ वह अमेरिका के 47वें राष्ट्रपति चुने गए। बाइडन ने कहा कि उन्होंने ट्रंप और हैरिस से बात की। बाइडन ने कहा, मैंने नव-निर्वाचित राष्ट्रपति ट्रंप को सत्ता के शांतिपूर्ण और व्यवस्थित हस्तांतरण का आश्वासन दिया है। उन्होंने कहा, अमेरिकी लोग इसी के हकदार हैं। अमेरिका के निवर्तमान राष्ट्रपति ने डेमोक्रेटिक समर्थकों से अपना आंदोलन जारी रखने की अपील की। बाइडन ने कहा, मैं जानता हूं कि कुछ लोगों के लिए यह जीत का समय है, यह स्पष्ट है। अन्य लोगों के लिए यह हार का समय है। उन्होंने कहा, असफलताएं अपरिहार्य हैं, लेकिन हार मान लेना अक्षम्य है। बाइडन ने कहा, हम सभी गिरते हैं लेकिन जैसा कि मेरे पिताजी कहा करते थे, हमारा चरित्र इससे निर्धारित होता है कि हम कितनी जल्दी उठ खड़े होते हैं। याद रखें, हार का मतलब यह नहीं है कि हम हार गए हैं। हम यह लड़ाई हार गए हैं। आपके सपनों का अमेरिका आपको बुला रहा है और उठने के लिए कह रहा है। बाइडन ने चुनाव परिणामों को स्वीकार करने का आह्वान किया और कहा, लोकतंत्र में लोगों की इच्छा हमेशा सर्वोपरि होती है।

उत्तरी फिलीपीन में तूफान से बाढ़ आई और छतें उड़ीं, दो घरेलू हवाई अड्डों को नुकसान

भाषा। मनीला (फिलीपीन)। उत्तरी फिलीपीन में तूफान यिनशिंग शुक्रवार को शांत होने से पहले बाढ़ और भूस्खलन सहित काफी आपदाएं पीछे छोड़ गया। इसके कारण दो हवाई अड्डे क्षतिग्रस्त हो गए तथा हाल के सप्ताहों में आए लगातार तूफानों से उत्पन्न परेशानियां और बढ़ गईं। यिनशिंग के कारण किसी के हताहत होने की तत्काल कोई खबर नहीं है। यह इस वर्ष दक्षिण-पूर्व एशियाई द्वीपसमूह में आने वाला 13वां बड़ा तूफान है। सरकारी अनुमान के अनुसार यह तूफान (जिसे स्थानीय स्तर पर मार्से के नाम से जाना जाता) आखिरी बार दक्षिण चीन सागर में उत्तरी फिलिपीन प्रांत इलोकोस नॉर्टे से लगभग 100 किलोमीटर पश्चिम में देखा गया था, जिसमें 150–205 किलोमीटर प्रति घंटे की गति से हवाएं चल रही थीं। वियतनाम पहुंचने से पहले इसके और कमजोर होने की उम्मीद है। प्रांतीय अधिकारियों ने बताया कि यिनशिंग ने बृहस्पतिवार दोपहर को दस्तक दी और इसके कारण कागायन प्रांत के गांवों में पानी भर गया, पेड़ और बिजली के खंभे उखड़ गए तथा घरों व इमारतों को नुकसान पहुंचा। प्रांत में 40,000 से अधिक ग्रामीणों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया गया। उत्तर की तरफ स्थित द्वीप प्रांत बाटानेस में गवर्नर मारिलोउ केको ने कहा कि तेज हवाओं और बारिश से घरों की छतें उड़ गईं तथा बंदरगाहों और दो घरेलू हवाई अड्डा टर्मिनल को नुकसान पहुंचा। अधिकारियों ने बताया कि तूफान से प्रभावित प्रांतों द्वारा आकलन पूरा होने के बाद ही अन्य स्थानों पर हुए नुकसान के बारे में अधिक जानकारी सामने आने की उम्मीद है।

कैंसर से पीड़ित अपने दोस्त की मदद के लिए आजमाएं ए छह तरीके

भाषा। मेलबर्न

दुनियाभर में पांच में से एक व्यक्ति अपने जीवकाल के दौरान कैंसर से पीड़ित होता है। 85 वर्ष की आयु तक दो में से लगभग एक ऑस्ट्रेलियाई कैंसर से पीड़ित होगा। जब यह बीमारी किसी ऐसे व्यक्ति को होती है जिसकी आप परवाह करते हैं, तो यह समझना कठिन हो सकता है कि उससे क्या कहें या उसकी मदद कैसे करें। लेकिन एक मित्र को सही सहायता प्रदान करने से बहुत फर्क पड़ सकता है क्योंकि वह अपनी बीमारी और इलाज को लेकर भावनात्मक और शारीरिक चुनौतियों का सामना करता है। कैंसर से पीड़ित किसी दोस्त की सार्थक सहायता के छह तरीके यहां बताए गए हैं- 1. भावनाओं को पहचानकर प्रतिक्रिया दें। कैंसर का पता चलने और उपचार के दौरान भय, क्रोध, शोक और उदासी समेत कई प्रकार की भावनाओं का अनुभव होना सामान्य है। आपके दोस्त का मूड उतार-चढ़ाव भरा हो सकता है। समय के साथ भावनाओं का बदलना भी आम बात है, उदाहरण के लिए आपके दोस्त की चिंता तो कम हो सकती है, फिर भी वह अधिक उदास महसूस कर सकता है। कुछ दोस्त विवरण साझा करना चाह सकते हैं जबकि अन्य गोपनीयता पसंद करेंगे। संवेदनशील विषयों जैसे शारीरिक रूप-रंग में बदलाव या डर और चिंता के बारे में बात करने के लिए हमेशा अनुमति मांगें और कोई धारणा न बनाएं। उन्हें यह बताना ठीक है कि आप असहज महसूस कर रहे हैं, क्योंकि इससे यह पता चलता है कि वे किस चुनौतीपूर्ण स्थिति का सामना कर रहे हैं। जब वे बात करने में सहज महसूस करें, तो उनकी बात सुनें। आपका समर्थन और खुद बोलने से ज्यादा उनकी बात सुनने से उन्हें बहुत आराम मिल सकता है। आप हर बात का जवाब दें, यह जरूरी नहीं है। बस जो कहा गया है उसे स्वीकार करें, अपना पूरा ध्यान दें और उनके लिए मौजूद रहें, जो एक बड़ी मदद होगी। 2. अपने मित्र की बीमारी को समझना तथा उपचार के दौरान उन्हें क्या-क्या सहना पड़ेगा, यह जानना उपयोगी हो सकता है। जानकारी होने से आपकी खुद की चिंता कम हो सकती है। इससे आपको बेहतर तरीके से सुनने में मदद मिल सकती है और आपके दोस्त को समझाने में भी कम समय लगेगा, खासकर तब जब वे थके या परेशान हों। कैंसर काउंसिल की वेबसाइट जैसे प्रतिष्ठित स्रोतों से सटीक जानकारी हासिल करें, ताकि आप सार्थक बातचीत कर सकें। लेकिन ध्यान रखें कि एक विश्वसनीय चिकित्सा टीम पहले से ही आपके मित्र को व्यक्तिगत और सटीक सलाह दे रही होती है। 3. नियमित रूप से संपर्क करें-कैंसर के उपचार के दौरान कोई अकेला महसूस कर सकता है, इसलिए नियमित रूप से संपर्क करना, संदेश भेजना, कॉल करना या मिलना आपके मित्र को कम अकेला महसूस करने में मदद कर सकता है। सामान्य बातचीत करना और चुटकुले भेजना बहुत अच्छा हो सकता है। लेकिन हर कोई कैंसर से अलग-अलग तरीके से निपटता है। सहायता करते समय धैर्य और लचीला रुख रखें। महत्वपूर्ण तिथियों को याद रखना – जैसे अगली कीमोथैरेपी – आपके मित्र को अच्छा महसूस करने में मदद कर सकता है। उपचार की समाप्ति पर जश्न मनाना मनोबल बढ़ा सकता है और आपके मित्र को उनके कैंसर के सफर में सकारात्मक क्षणों की याद दिला सकता है। हमेशा पूछें कि क्या यह मिलने का सही समय है, क्योंकि आपके दोस्त की शारीरिक क्षमता कैंसर या कीमोथेरेपी या रेडियोथेरेपी जैसे उपचारों से प्रभावित हो सकती है। यदि वह अस्वस्थ महसूस कर रहे हैं, तो मुलाकात को स्थगित करना सबसे अच्छा है – लेकिन फिर भी एक कॉल या लिखित संदेश भेजा जा सकता है। 4. व्यावहारिक सहायता प्रदान करें-कभी-कभी परवाह दिखाने का सबसे अच्छा तरीका व्यावहारिक सहायता होता है। मदद की पेशकश करने के अलग-अलग तरीके हो सकते हैं, और आपके दोस्त को शुरुआत में, उपचार के दौरान और बाद में जो चाहिए, वह अलग-अलग हो सकता है।

क्नाडा के प्रतिबंध लगाने पर आस्ट्रेलियाई मीडिया संस्थान ने दृढ़ता से खड़े रहने की बात कही

कैनबरा। विदेश मंत्री एस जयशंकर और उनकी आस्ट्रेलियाई समकक्ष पेनी वोंग द्वारा संबोधित संवाददाता सम्मेलन का सीधा प्रसारण करने को लेकर क्नाडा द्वारा प्रतिबंधित कर दिए गए आस्ट्रेलियाई मीडिया संस्थान ने शुक्रवार को कहा कि वह एक खुले और समावेशी मीडिया परिदृश्य के लिए दृढ़ता से खड़ा है। आस्ट्रेलिया टुडे ने एक्स पर एक लंबे पोस्ट मे कहा, भारत के विदेश मंत्री डॉ एस जयशंकर के साथ हमारा साक्षात्कार और आस्ट्रेलियाई विदेश मंत्री वोंग के साथ संवाददाता सम्मेलन पर, क्नाडा सरकार के आदेशो के तहत हालिया पाबंदी हमारी टीम तथा उन लोगो के लिए चुनौती पेश करती है जो स्वतंत्र एवं खुली पत्रकारिता को महत्व देते है। यहां तीन नवंबर को जयशंकर-वोंग के संयुक्त संवाददाता सम्मेलन के प्रसारण के चंद घंटो बाद मीडिया संस्थान को क्नाडा द्वारा प्रतिबंधित किए जाने के कुछ दिनो बाद यह घटनाक्रम हुआ है। जयशंकर ने आस्ट्रेलिया की पांच दिवसीय अपनी यात्रा बृहस्पतिवार को संपन्न की। संयुक्त संवाददाता सम्मेलन मे, जयशंकर ने क्नाडा के ब्रैम्पटन मे हिदू मंदिर पर हमले को बेहद चिताजनक बताते हुए कहा था कि यह क्नाडा मे चरमपंथी ताकतो को एक तरह से दी जा रही राजनीतिक जगह (गुंजाइश) की ओर इंगित करता है। ब्रैम्पटन मे रविवार को खालिस्तानी झंडे लिए प्रदर्शनकारियो की हिदू सभा मंदिर मे लोगो के साथ झड़प हुई थी। इससे मंदिर के अधिकारियो और भारतीय वाणिज्य दूतावास द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित एक कार्यक्रम मे बाधा उत्पन्न हुई। शुक्रवार को एक्स पर एक पोस्ट मे आस्ट्रेलिया टुडे के प्रबंध संपादक जीतार्थ जय भारद्वाज ने कहा, हम महत्वपूर्ण खबरे और लोगो की आवाज उठाने के अपने मिशन पर अडिग है और इन व्यवधानो की परवाह नही करते है। इसकी वेबसाइट के अनुसार, यह मीडिया संस्थान मुख्य रूप से बहुसांस्कृतिक समुदायो और भारतीय उपमहाद्वीप से जुड़ी खबरो, विश्लेषण और आलेखो को प्रकाशित करता है।

एफएलओ की देश व दुनिया के उद्यमियों ने ट्रेड कनेक्ट म भाग लिया

नई दिल्ली। देश में महिलाओं की सर्वोच्च संस्था फिक्की लेडीज ऑर्गनाइजेशन-एफएलओ ने एक दिवसीय ट्रेड कनेक्ट कार्यक्रम का आयोजन किया। जिसमें देशभर की 20 शाखाओं की महिला उद्यमियों ने घरेलू और वैश्विक बाजारों के लिए अपने उत्पाद और सेवाएं प्रदर्शित कीं। कई 50 महिला उद्यमियों ने कपड़ा और परिधान, हस्तशिल्पए खाद्य प्रसंस्करण, आईटी और डिजिटल सेवाएं, स्वास्थ्य और कल्याण उत्पाद, टिकाऊ और पर्यावरण अनुकूल उत्पाद, पर्यटन और आतिथ्य उद्योग सहित प्रमुख क्षेत्रों से अपने उत्पाद और सेवाएं प्रदर्शित कीं। ट्रेड.कनेक्ट कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण महिला उद्यमियों का एक संवादात्मक सत्र था। जिसमें हमारे साथ17 देशों . अर्मेनिया, ऑस्ट्रिया, बेल्जियम, चिली, एस्टोनिया, फिनलैंड, फ्रांस, जर्मनी, इजरायल, जापान, केन्या, पेरू, श्रीलंका,अमेरिका, ब्रिटेन, मिस्र और ट्यूनीशिया के टी प्रतिनिधि शामिल थे। फिक्की लेडीज ऑर्गनाइजेशन एफएलओ एक ऐसा संगठन है, जिसके 20 अध्यायों में 12,000 से अधिक सदस्य हैंए जिसका मुख्यालय दिल्ली में है, जिसने पूरे भारत में असंख्य महिलाओं के जीवन पर एक स्थायी प्रभाव डाला हैए जिसमें अनुभवी उद्यमियों से लेकर व्यवसाय में अपना पहला कदम रखने वाली महिलाएँ शामिल हैं। एफएलओ ने ऐसे संबंध विकसित किए हैं, जो परिवर्तनकारी हैंए दुनिया भर के व्यवसायों को एकजुट करते हैं और ऐसे अवसर पैदा करते हैंए जो भविष्य को परिभाषित करेंगे। यह सीमाओं, संस्कृतियों और उद्योगों से परे पुलों का निर्माण कर रहा है। इसने ऐसे संबंध विकसित किए हैं जो परिवर्तनकारी हैंए दुनिया भर के व्यवसायों को एकजुट करते हैंए और ऐसे अवसर पैदा करते हैं जो भविष्य को परिभाषित करेंगे। सुश्री वर्मा ने कहा हमने भारत भर में अनगिनत महिलाओं के जीवन पर एक स्थायी प्रभाव डाला हैए अनुभवी उद्यमियों से लेकर व्यवसाय में अपना पहला कदम रखने वाली महिलाओं तक। एफएलओ् एक निरंतर शक्ति रही हैए जिसने बाधाओं को दूर किया है, स्वतंत्रता को बढ़ावा दिया है और सभी क्षेत्रों की महिलाओं के लिए अवसरों का विस्तार किया है। जमीनी स्तर परए हम कौशल विकास और व्यावहारिक संसाधनों के साथ महिलाओं का समर्थन करते हैंए आर्थिक स्वतंत्रता और विकास का मार्ग प्रदान करते हैं।

ग्लोबल स्टार रामचरन फिर बिखेरेंगे दुनिया में जलवा

वालीवुड। राम चरण अपनी बहुप्रतीक्षित फिल्म गेम चेंजर को 10 जनवरी, 2025 को सिनेमाघरों में रिलीज करने के लिए पूरी तरह तैयार है ऐसे में लोगों की उत्सुकता और बढ़ाती जा रही है। 9 नवम्बर को फिल्म का टीजर लांच किया गया। आप को बता दें कि ऐसा पहली बार हो रहा है कि किसी फिल्म का टीजर भारत के हार्टलैंड लखनऊ में किया जा रहा है जो ग्लोबल स्टार की प्रसिद्धि को और बढ़ाएगा। हमने अब तक कई पैन इंडिया फिल्म के टीजर या ट्रेलर अक्सर मुंबई या दिल्ली में किया गया है गेम चेंजर ने हकीकत में गेम चेंज कर दिया है। इस बहुप्रतीक्षित टीज़र में , उन्हें राम चरण और कियारा आडवाणी सहित अन्य लोगों का सहयोग भी देखने को मिलेगा। रा मचा मचा, जरागंडी गानों ने लोगों के बीच उत्सुकता बढ़ा दी है और अब यह टीज़र निश्चितरूप से फिल्म के प्रति उनकी उत्सुकता को और बढ़ाएगा कि राम चरण इस बार शंकर शनमुगम निर्देशित फिल्म के में उनके लिए क्या लेकर आ रहे हैं । गेम चेंजर में राम चरण एक आईएएस अधिकारी की भूमिका निभाते नजर आएंगे जो निष्पक्ष चुनाव की वकालत करके भ्रष्ट राजनेताओं से मुकाबला करता है। यह एक्शन-थ्रिलर 10 जनवरी, 2025 को बड़े पर्दे पर आने के लिए पूरी तरह तैयार है। फिल्म का निर्माण दिल राजू और सिरीश द्वारा किया गया है, कहानी कार्तिक सुब्बाराज की है और लेखन एसयू वेंकटेशन और विवेक द्वारा किया गया है। हर्षित द्वारा सह-निर्मित, सिनेमैटोग्राफी एस. थिरुनावुक्कारासु द्वारा नियंत्रित की जाती है, संगीत एस. थमन द्वारा रचित है, और संवाद साई माधव बुर्रा द्वारा लिखे गए हैं। लाइन प्रोडक्शन की देखरेख नरसिम्हा राव एन. और एसके जबीर करते हैं, जबकि अविनाश कोल्ला कला निर्देशक हैं। एक्शन कोरियोग्राफी अनबरीव द्वारा की गई है, जिसमें डांस सीक्वेंस प्रभु देवा, गणेश आचार्य, प्रेम रक्षित, बॉस्को मार्टिस, जॉनी और सैंडी द्वारा निर्देशित हैं। गीत रामजोगैया शास्त्री, अनंत श्रीराम और कसारला श्याम द्वारा लिखे गए हैं। फिल्म का निर्माण वेंकटेश्वर क्रिएशन्स के बैनर तले किया गया है।

दक्षिण कोरियाई समुद्री क्षेत्र में मछली पकड़ने वाली नौका के डूबने से दो लोगों की मौत, 12 लापता

सियोल। दक्षिण कोरिया के जेजू द्वीप के समुद्री तट के पास शुक्रवार को मछली पकड़ने वाली एक नौका के पलट जाने से कम से कम दो लोगो की मौत हो गई और 12 अन्य लापता हो गए। तट रक्षक अधिकारियो ने यह जानकारी दी। जेजू के तट रक्षक की एक अधिकारी किम हान-ना नेस ने बताया कि पास मे मौजूद मछली पकड़ने वाले पोतो की मदद से चालक दल के 15 सदस्यो को पानी से बाहर निकालकर किनारे पर लाया गया, लेकिन इनमे से दो को मृत घोषित कर दिया गया। उन्होंने कहा कि अन्य 13 लोग खतरे से बाहर है। उन्होंने कहा कि 129 टन की नौका पर चालक दल के 27 सदस्य (16 दक्षिण कोरियाई नागरिक और 11 विदेशी नागरिक) सवार थे। यह नौका बृहस्पतिवार देर रात मछली पकड़ने के लिए जेजू के सेग्विपो बंदरगाह से रवाना हुई थी। तट रक्षक बल को शुक्रवार तड़के करीब साढ़े चार बजे पास मे मौजूद मछली पकड़ने वाले एक पोत से आपातकालीन संकेत प्राप्त हुए जिसके बाद बचाव कार्य शुरू किया गया। यह घटना जेजू द्वीप के उत्तर-पश्चिम मे समुद्र तट से 24 किलोमीटर (15 मील) की दूरी पर घटी। शुक्रवार सुबह तक दक्षिण कोरिया के तटरक्षक बल, पुलिस, अग्निशमन सेवा और सेना के कम से कम 11 पोतो और नौ विमानो को लापता लोगो की तलाश के काम मे लगाया गया था। बचाव कार्य मे 13 नागरिक पोत भी सहायता प्रदान कर रहे थे। दक्षिण कोरिया के राष्ट्रपति यून सुक एओल ने अधिकारियो से लापता चालक दल के सदस्यो को खोजने और बचाने के लिए सभी उपलब्ध संसाधनो को जुटाने का आह्वान किया है।

म्यांमा का रखाइन राज्य निकट भविष्य में कर सकता है भयंकर अकाल का सामना: संयुक्त राष्ट्र

संयुक्त राष्ट्र। म्यांमा मे सरकारी बलो और शक्तिशाली जातीय समूहो के बीच संघर्ष से प्रभावित अल्पसंख्यक रोहिंग्या समुदाय बहुल रखाइन प्रांत को निकट भविष्य मे भयंकर अकाल का सामना करना पड़ सकता है। संयुक्त राष्ट्र विकास एजेंसी ने एक नई रिपोर्ट मे इस बारे मे आगाह किया है। संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यूएनडीपी) ने बृहस्पतिवार को जारी रिपोर्ट मे कहा कि "एक भयानक तूफान उभर रहा है जिसने पश्चिमी रखाइन प्रांत कौ अभूतपूर्व आपदा के मुहाने पर लाकर खड़ा कर दिया है। इसमे म्यांमा के अन्य स्थानो और पड़ोसी बांग्लादेश से सामानो की आपूर्ति पर प्रतिबंध, निवासियो के लिए रोजगार का अभाव, अत्यधिक महंगाई, खाद्य सामग्री के उत्पादन मे उल्लेखनीय गिरावट, तथा आवश्यक सेवाओं व सामाजिक सुरक्षा तंत्र के अभाव समेत एक दूसरे से जुड़े घटनाक्रमो की ओर इशारा किया गया है। यूएनडीपी ने कहा कि इसके परिणामस्वरूपै पहले से ही अत्यधिक असुरक्षित आबादी, आने वाले महीनो मे पतन के कगार पर पहुंच सकती है। बौद्ध बहुल म्यांमा लंबे समय से रोहिंग्या मुस्लिम अल्पसंख्यकों को बांग्लादेश से आए बंगाली मानता रहा है, जबकि उनके परिवार पीढ़ियों से देश मे रह रहे है। देश ने 1982 से लगभग सभी लोगो को नागरिकता देने से इनकार कर दिया है।

सिडनी हवाई अड्डे पर विमान के आपात लैंडिंग के बाद रनवे पर आग लगी

वेलिंगटन। ऑस्ट्रेलिया के सिडनी से उड़ान भरने वाले एक यात्री विमान के इंजन मे शुक्रवार को खराबी आने के कारण विमान को सुरक्षित आपात लैंडिग से पहले कई चक्कर लगाने पड़े। क्वांटस एयरलाइन ने यह जानकारी दी। सिडनी हवाई अड्डे ने एक बयान मे कहा कि उसी समय रनवे के एक तरफ मौजूद घास मे आग लग गई। हालांकि यह पता नही चल पाया है कि दोनो घटनाएं आपस मे जुड़ी हुई है या नही। आग पर काबू पा लिया गया है, लेकिन उड़ानो मे देरी की आशंका है। क्वांटस एयरलाइन ने यह नही बताया कि ब्रिस्बेन जा रहे ट्विन जेट बोइंग 737-800 मे जब जोरदार धमाके के साथ इंजन फेल हुआ तो उस वक्त विमान मे कितने यात्री सवार थे। घटना मे किसी के घायल होने की खबर नही है।

सैमसन का शतक, भारत का दिखा दम

●पहला टी20 : दक्षिण अफ्रीका को 203 रन का लक्ष्य दिया

भाषा। डरबन

सलामी बल्लेबाज संजू सैमसन के लगातार दूसरे शतक से भारत ने दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ पहले टी20 अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट मैच में शुक्रवार को यहां आठ विकेट पर 202 रन बनाए।लगातार दो टी20 अंतराष्ट्रीय शतक जड़ने वाले भारत के पहले और दुनिया के सिर्फ चौथे बल्लेबाज बने सैमसन ने 50 गेंद में 107 रन की अपनी पारी में सात चौके और 10 छक्के मारे। उन्होंने सूर्यकुमार यादव (21) के साथ दूसरे विकेट के लिए 66 और तिलक वर्मा (33) के साथ तीसरे विकेट के लिए 77 रन की साझेदारी की।सैमसन से पहले टी20 अंतराष्ट्रीय क्रिकेट में लगातार दो शतक जड़ने का कारनामा फ्रांस के गुस्ताव मैकियोन, इंग्लैंड के फिल सॉल्ट और दक्षिण अफ्रीका के रिली रोसेयु कर चुके हैं। सैमसन के पवेलियन लौटने के बाद दक्षिण अफ्रीका ने हालांकि वापसी की जिससे भारत अंतिम छह ओवर में 40 रन ही बना सका।दक्षिण अफ्रीका की ओर से गेराल्ड कोएट्जी सबसे सफल गेंदबाज रहे जिन्होंने 37 रन देकर तीन विकेट चटकाए। मार्को यानसेन ने किफायती गेंदबाजी करते हुए चार ओवर में 24 रन देकर एक विकेट चटकाया। दक्षिण अफ्रीका ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया और अभिषेक शर्मा सिर्फ सात रन बनाकर कोएट्जी की गेंद पर कप्तान एडेन मारक्रम को कैच दे बैठे। सैमसन और सूर्यकुमार ने पारी को संवारा। सैमसन ने मारक्रम पर चौके जड़ने के बाद केशव महाराज की लगातार गेंदों पर चौका और छक्का मारा और फिर यानसेन के ओवर में भी ऐसा किया। सूर्यकुमार ने भी आते ही कोएट्जी पर चौका और छक्का जड़ा जबकि सैमसन ने भी इस तेज गेंदबाज पर छक्के के साथ छठे ओवर में भारत के रनों का अर्धशतक पूरा किया।भारत ने पावर प्ले में एक विकेट पर 56 रन बनाए।सैमसन ने स्पिनर नकाबायोमजी पीटर पर लगातार दो छक्कों के साथ 27 गेंद में अपना अर्धशतक पूरा किया।सूर्यकुमार हालांकि पैट्रिक क्रूगर की गेंद पर बड़ा शॉट खेलने की कोशिश में पदार्पण कर रहे एंडिले सिमेलेन को कैच दे बैठे।सैमसन ने महाराज पर छक्के के साथ 11वें ओवर में भारत का स्कोर 100 रन के पार पहुंचाया। सैमसन ने 13वें ओवर में सिमेलेन की लगातार गेंदों पर दो चौके और एक छक्का मारा जबकि तिलक वर्मा ने भी अगले ओवर में क्रूगर की लगातार गेंदों पर चौके और छक्के के साथ टीम के 150 रन पूरे किए।सैमसन ने क्रूगर पर छक्के और फिर महाराज की गेंद पर एक रन के साथ 47 गेंद में शतक पूरा किया।वर्मा हालांकि महाराज के इसी ओवर में गेंद को हवा में लहराकर यानसेन को आसान कैच दे बैठे। उन्होंने 18 गेंद का सामना करते हुए तीन चौके और दो छक्के मारे।सैमसन ने पीटर पर एक और छक्का मारा लेकिन अगली गेंद पर इस शॉट को दोहराने की कोशिश में बाउंड्री पर ट्रस्टिन स्टब्स को कैच दे बैठे।

राहुल, अभिमन्यु एंकर की भूमिका निभा सकते हैं, टेस्ट टीम में पुजारा के लिए जगह है: उथप्पा

नई दिल्ली। पूर्व बल्लेबाज रोबिन उथप्पा का मानना है कि भारत को ऑस्ट्रेलिया के चुनौतीपूर्ण दौरे के दौरान लोकेश राहुल या अभिमन्यु ईश्वरन जैसे किसी खिलाड़ी की जरूरत होगी जो पारंपरिक शैली का क्रिकेट खेल सके और टेस्ट टीम में अनुभवी चेतेश्वर पुजारा के लिए जगह है।शॉट खेलने वाले खिलाड़ियों से भरे भारतीय बल्लेबाजी क्रम पर पांच मैच की टेस्ट श्रृंखला से पहले सवाल उठने लगे हैं।न्यूजीलैंड के खिलाफ घरेलू मैदान पर 0-3 से शर्मनाक हार के बाद भारत पर बेहतर प्रदर्शन करने का दबाव बढ़ गया है। जियो सिनेमा और स्पोर्ट्स 18 के विशेषज्ञ उथप्पा ने मीडिया से ऑनलाइन बात करते हुए कहा, हमें किसी रक्षात्मक खिलाड़ी की जरूरत है। कोई ऐसा खिलाड़ी जो पारंपरिक टेस्ट क्रिकेट खेल सके। अभी लोकेश राहुल और अभिमन्यु ईश्वरन ही ऐसे खिलाड़ी हैं जो यह भूमिका निभा सकते हैं। उन्होंने कहा, मुझे ऐसा कोई और खिलाड़ी नज़र नहीं आता जो यह ज़िम्मेदारी ले सके।

बीसीसीआई और पीसीबी के बीच चैंपियन्स ट्रॉफी के स्थल को लेकर तकरार

भाषा। लाहौर-नई दिल्ली

पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) के अध्यक्ष मोहसिन नकवी ने शुक्रवार को स्पष्ट रूप से इस बात से इनकार किया कि उन्हें भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) से कोई औपचारिक संदेश मिला है कि उनकी राष्ट्रीय टीम चैंपियंस ट्रॉफी के लिए पाकिस्तान की यात्रा नहीं करेगी। बृहस्पतिवार को पीसीबी के सूत्रों ने दावा किया था कि भारत ने हाइब्रिड मॉडल चुना है जहां उनके सभी मैच दुबई में होंगे। हाइब्रिड मॉडल को 2023 एशिया कप के दौरान भी अपनाया गया था जहां पाकिस्तान ने अपने मैच घरेलू मैदान पर खेले थे लेकिन भारत ने अपने मैच श्रीलंका में खेले थे। शुक्रवार की सुबह बीसीसीआई के सूत्रों ने दावा किया कि भारत ने पहले ही पीसीबी को आधिकारिक तौर पर बता दिया है कि वे पाकिस्तान की यात्रा नहीं करेंगे लेकिन शाम को नकवी ने गद्दाफी स्टेडियम में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस कर इस बात से इनकार किया। नकवी ने संवाददाताओं से कहा, आज तक किसी ने भी हमारे साथ हाइब्रिड मॉडल पर चर्चा नहीं की है और ना ही हम इस पर बात करने को तैयार हैं। लेकिन हम पिछले कुछ वर्षों से अच्छा रवैया दिखा रहे हैं और किसी को भी हमारे से हर समय ऐसा करने की उम्मीद नहीं करनी चाहिए। उन्होंने कहा कि अगर पीसीबी के समक्ष लिखित रूप में ऐसा कोई प्रस्ताव रखा जाता है तो वह इसे सरकार के पास ले जाएंगे। नकवी ने कहा, जब भी लिखित रूप से कोई प्रस्ताव आएगा तो मैं सरकार को बताऊंगा और वे जो भी निर्णय लेंगे हमें उसका पालन करना होगा। ब पीटीआई ने बीसीसीआई के एक वरिष्ठ सूत्र से संपर्क किया तो उन्होंने जवाब दिया, यथास्थिति बनी हुई है। पाकिस्तान जाना है या नहीं, इस पर बीसीसीआई को फैसला नहीं करना है बल्कि यह भारतीय सरकार का फैसला है। इस मामले में कुछ भी नहीं बदला है। हम मौजूदा हालात के हिसाब से पाकिस्तान नहीं जा रहे हैं। 'सीसीआई के एक अधिकारी के हवाले से भारतीय मीडिया में आई खबरों के बारे में पूछे जाने पर कि उन्होंने (बीसीसीआई ने) पीसीबी को सूचित किया है कि वे सुरक्षा कारणों से अपनी टीम पाकिस्तान नहीं भेजेंगे, नकवी ने कहा कि किसी ने भी उन्हें कुछ नहीं बताया है।न्होंने कहा, जहां तक हमारा सवाल है तो टूर्नामेंट तय समय पर पाकिस्तान में हो रहा है और सभी टीमें यहां खेलेंगी। अन्य सभी बोर्ड पाकिस्तान में खेलने के लिए उत्सुक हैं।

पंजाब और राजस्थान सीनियर पुरुष राष्ट्रीय चैंपियनशिप में जीते

चेन्नई। हॉकी पंजाब, हॉकी राजस्थान, ओडिशा हॉकी संघ, हॉकी मिजोरम और हॉकी बंगाल ने शुक्रवार को यहां 14वीं हॉकी इंडिया सीनियर पुरुष राष्ट्रीय चैंपियनशिप के पांचवें दिन जीत दर्ज की।हॉकी महाराष्ट्र और हॉकी झारखंड ने हालांकि मेयर राधाकृष्णन हॉकी स्टेडियम मे 2-2 से ड्रॉ खेला।पंजाब ने पूल एक में छत्तीसगढ़ को 10-1 से हराया जबकि पूल ई मे राजस्थान ने हॉकी अरुणाचल को 4-3 से शिकस्त दी।पूल ई के एक अन्य मैच में ओडिशा हॉकी संघ ने पुडुचेरी हॉकी संघ 6-2 से शिकस्त दी जबकि पूल बी के मैच मे हॉकी मिजोरम ने हॉकी हिमाचल को 6-3 से हराया। हॉकी बंगाल ने पूल एच में हॉकी बिहार को 12-2 से हराया।

शुभंकर अबु धाबी में 66वें स्थान पर

अबु धाबी। भारतीय गोल्फर शुभंकर शर्मा (71-73) अबु धाबी चैंपियनशिप में दो दौर के बाद संयुक्त रूप से 66वें स्थान पर चल रहे है।पहले दौर में पांच बर्डी और चार बोगी से एक अंडर 71 का स्कोर बनाने वाले शुभंकर ने दूसरे दौर मे तीन बर्डी, दो बोगी और एक डबल बोगी से एक ओवर 73 का स्कोर बनाया।पॉल वारिंग ने 11 अंडर 61 के स्कोर से कुल 19 अंडर के स्कोर से बढ़त बना ली है।हले दिन शीर्ष पर रहे टॉमी फ्लीटवुड के 10 अंडर 62 के रिकॉर्ड स्कोर को पीछे छोड़ा।

राष्ट्रीय कुश्ती में अमन सेहरावत शीर्ष दावेदारों में शामिल

बेंगलुरू। पेरिस ओलंपिक के कांस्य पदक विजेता अमन सेहरावत छह से आठ दिसंबर तक यहां होने वाली सीनियर राष्ट्रीय कुश्ती चैंपियनशिप मे हिस्सा लेने वाले स्टार खिलाड़ियों में शामिल होंगे।अमन के अलावा अंडर-20 विश्व कुश्ती चैंपियन अंतिम पंघाल, 2019 विश्व चैंपियनशिप के रजत पदक विजेता दीपक पूनिया, अंडर-23 विश्व चैंपियन रीतिका हुड्डा, ओलंपियन सोनम मलिक, राधिका, मनीषा भानवाला, बिपाशा, प्रिया, उदित, चिराग, सुनील कुमार और नरिंदर चीमा भी मैट पर उतरेंगे।यह प्रतियोगिता कोरमंगला इंडोर स्टेडियम मे होगी।

ऑस्ट्रेलिया की पीएम एकादश के कोच होंगे टिम पेन

कैनबरा। पूर्व कप्तान टिम पेन इस महीने के अंत में भारत के खिलाफ गुलाबी गेंद से खेले जाने वाले दो दिवसीय अभ्यास मैच के लिए ऑस्ट्रेलियाई प्रधानमंत्री एकादश के कोच होंगे। पेन (39 वर्ष) भारत के पिछले दो दौरों के दौरान ऑस्ट्रेलिया के कप्तान थे जिसमें मेहमान टीम ने बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी में 2-1 से समान अंतर से जीत दर्ज की थी।

क्रेजिसिकोवा सेमीफाइनल में, स्वियातेक बाहर

रियाद। बारबोरा क्रेजिसिकोवा ने कोको गॉफ को सीधे सेटों में 7-5, 6-4 से हराकर डब्ल्यूटीए फाइनल्स के सेमीफाइनल मे प्रवेश किया जिससे दूसरी वरीयता प्राप्त इगा स्वियातेक जीत दर्ज करने के बावजूद वर्ष के इस अंतिम टेनिस टूर्नामेंट से बाहर हो गईं। क्रेजिसिकोवा सेमीफाइनल मे जगह बनाने वाली अंतिम खिलाड़ी है। शीर्ष वरीयता प्राप्त आर्यना सबालेंका, झेंग क्विनवेन और गॉफ पहले ही अंतिम चार मे अपनी जगह सुरक्षित कर चुकी थी।विंबलडन चैंपियन क्रेजिसिकोवा ऑरेंज ग्रुप मे शीर्ष पर रही और सेमीफाइनल मे उनका मुकाबला झेंग से होगा। एक अन्य सेमीफाइनल मे गॉफ पर्पल ग्रुप विजेता सबालेंका से भिड़ेंगी।स्वियातेक ने डारिया कसाटकिना को एक घंटे से भी कम समय मे 6-1, 6-0 से हराया, लेकिन गॉफ की क्रेजिसिकोवा पर जीत से ही वह ऑरेंज ग्रुप से आगे बढ़ पाती।

मुंबई ने ओडिशा को फॉलोआन दिया

बड़ी जीत के करीब

भाषा। मुंबई

मुंबई ने ओडिशा को फॉलोआन देने के बाद दूसरी पारी में उसका स्कोर पांच विकेट पर 126 रन करके रणजी ट्रॉफी ग्रुप ए मैच के तीसरे दिन शुक्रवार को जीत की ओर मजबूत कदम बढ़ाए।ओडिशा की टीम अब भी 191 रन से पीछे है और मेहमान टीम पर पारी की हार का खतरा मंडरा रहा है।मुंबई ने पहली पारी चार विकेट पर 602 रन बनकर घोषित की थी। ओडिशा ने दिन की शुरुआत पांच विकेट पर 146 रन से की और टीम 95वें ओवर में 285 रन पर सिमट गई।ओडिशा के 319 रन से पिछड़ने के बाद मुंबई के कप्तान अजिंक्य रहाणे ने ओडिशा को फॉलोआन दिया और दूसरी पारी में भी टीम के बल्लेबाज उम्मीद के मुताबिक नहीं खेल पाए।ओडिशा की पहली पारी में संदीप पटनायक ने 187 गेंद में 102 रन बनाए। उन्होंने अपनी पारी में 11 चौके और चार छक्के मारे। निचले क्रम के बल्लेबाजों ने उनका अच्छा साथ निभाया।दाएं हाथ के बल्लेबाज पटनायक हालांकि दूसरी पारी में 45 गेंद में छह चौकों और एक छक्के से 39 रन ही बना पाए। उन्हें बाएं हाथ के स्पिनर शम्स मुलानी (26 रन पर एक विकेट) ने आउट किया जिन्होंने पहली पारी में 115 रन देकर छह विकेट चटकाए।दाएं हाथ के युवा ऑफ स्पिनर हिमांशु सिंह पहली पारी में 53 रन पर तीन विकेट चटकाने के बाद दूसरी पारी में भी 45 रन देकर तीन विकेट चटका चुके हैं।दिन का खेल खत्म होने पर विकेटकीपर बल्लेबाज आशीर्वाद स्वेन 46 रन बनाकर खेल रहे थे।पुणे में सेना के 339 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए महाराष्ट्र की टीम 52 रन पर तीन विकेट गंवाने के बाद संकट में है।

केरल के आगे यूपी की हालत पतली

थुम्बा। थुम्बा में तेज बारिश से केरल और उत्तर प्रदेश के बीच मुकाबले में बाधा आई जिससे जल्दी स्टंप करना पड़ा। मेजबान केरल मजबूत स्थिति में है, उसने उत्तर प्रदेश के 66 रन तक दो विकेट झटक लिए हैं जो अब भी 167 रन से पीछे है। केरल ने पहली पारी में 395 रन बनाए थे। बारिश का पानी ड्रेसिंग रूम की छत से गिर रहा था जिससे खिलाड़ियों के किट बैग को नुकसान हुआ जबकि विकेट पर कवर ढका रहा जिससे दिन में केवल 32.1 ओवर का खेल ही हो पाया। सलमान निजार 93 रन बनाकर शीर्ष स्कोरर रहे जबकि सचिन बेबी (84 रन) और मोहम्मद अजहरूद्दीन (40 रन) ने महत्वपूर्ण योगदान देकर केरल को बढ़त बनाने में मदद की। केरल की टीम तालिका में नेट रन रेट के आधार पर कर्नाटक से पीछे दूसरे स्थान पर है। कर्नाटक के खिलाफ बंगाल की टीम अच्छी स्थिति में है। ईशान पोरेल ने 23.1 ओवर में 54 रन देकर चार विकेट झटके जिससे बंगाल के तीनों तेज गेंदबाजों ने नौ विकेट हासिल कर अपनी टीम को कर्नाटक पर पहली पारी की बढ़त दिलाई। र्नाटक ने सुबह पांच विकेट पर 155 रन के स्कोर से खेलना शुरू किया लेकिन टीम 82.1 ओवर में 221 रन पर सिमट गई। अभिनव मनोहर बीती रात के 50 रन से खेलते हुए केवल पांच रन ही जोड़ पाए जबकि श्रेयस गोपाल 28 रन पर आउट हो गए। ंगाल ने दूसरी पारी में तीन विकेट गंवाकर 127 रन बना लिए जिसमें सुदीप चटर्जी ने 48 रन बनाकर टीम को अच्छी शुरूआत कराई।

स्पिनर निशंक के 12 विकेट से दिल्ली के खिलाफ चंडीगढ़ जीत की ओर

चंडीगढ़। सलामी बल्लेबाज सनत सांगवान और युवा यश धुल को छोड़कर दिल्ली का कोई बल्लेबाज प्रभावी प्रदर्शन नही कर पाया जबकि चंडीगढ़ के बाएं हाथ के युवा स्पिनर निशंक बिरला ने मैच मे दूसरी बार छह विकेट चटकाकर रणजी ट्रॉफी ग्रुप डी मैच क तीसरे दिन मेजबान टीम को जीत के करीब पहुंचाया।पहली पारी मे 276 रन बनाने के बाद दिल्ली ने दूसरी पारी मे और भी खराब प्रदर्शन किया और 250 रन पर आउट हो गई जिसमें केवल पहली पारी के शतकवीर धुल के 58 और सलामी बल्लेबाज सांगवान के 70 रन ही महत्वपूर्ण योगदान रहे। टर्न और उछाल वाली पिच पर निशंक ने 27.1 ओवर मे 65 रन देकर छह विकेट लिए। उन्होंने मैच मे 138 रन देकर 12 विकेट चटकाए। चंडीगढ़ को 203 रन का लक्ष्य मिला जिसके जवाब मे टीम ने तीसरे दिन का खेल खत्म होने तक बिना किसी नुकसान के 46 रन बनाए लिए है। दिल्ली का भाग्य अब अंतिम दिन रितिक शौकीन, शिवांक वशिष्ठ और सुमित माथुर की स्पिन तिकड़ी पर निर्भर करता है। पहली पारी मे 48 रन से पिछड़ने के बाद दिल्ली एक समय एक विकेट पर 138 रन बनाकर अच्छी स्थिति मे थी जिसमे सांगवान और धुल ने दूसरे विकेट के लिए 96 रन जोड़े। गुरिंदर ने धुल और सांगवान को आउट किया जिसके बाद निशंक ने मध्य और निचले क्रम को तहस-नहस कर दिया। अनुज रावत (20) और आयुष बडोनी (01) नाकाम रहे।

क्विक न्यूज

उत्तराखंड ने आंध्र को 321 रन का लक्ष्य दिया

विजयनगर। उत्तराखंड और आंध्र दोनों के गेंदबाजों ने शानदार प्रदर्शन करते हुए शुक्रवार को यहां रणजी ट्रॉफी ग्रुप बी मैच मे तीसरे दिन 16 विकेट झटके जिससे मेहमान टीम ने प्रतिद्वंद्वी को जीत के लिए 321 रन का लक्ष्य दिया।उत्तराखंड ने नौ विकेट पर 129 रन पर दूसरी पारी घोषित की जिससे 321 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए स्टंप तक आंध्र ने एक विकेट गंवाकर आठ रन बना लिए जिससे उसे जीत के लिए 313 रन के असंभव स्कोर का पीछा करना होगा। आंध्र की टीम सुबह चार विकेट पर 92 रन के स्कोर से आगे खेलते हुए पहली पारी मे 146 रन पर सिमट गई जबकि उत्तराखंड ने पहली पारी मे 338 रन बनाए थे जिससे मेहमान टीम को 210 रन की बढ़त मिली।आल राउंडर हनुमा विहारी 43 रन (91 गेंद, छह चौके) बनाकर आंध्र के शीर्ष स्कोरर रहे। सलामी बल्लेबाज अभिषेक रेड्डी ने 64 गेंद मे 35 रन बनाए। उत्तराखंड के लिए बाएं हाथ के स्पिनर मयंक मिश्रा (12 रन देकर तीन विकेट) सबसे सफल गेंदबाज रहे। दीपक धोलापोला, अभय नेगी और स्वप्निल सिंह ने दो दो विकेट हासिल किए। उत्तराखंड की दूसरी पारी की शुरूआत इतनी अच्छी नही रही और उसने महज 39 रन पर आधी टीम गंवा दी थी। टीम ने 61 रन पर सात विकेट खो दिए जिससे उस पर 100 रन के अंदर आउट होने का खतरा मंडरा था।

अगर चोटों से मुक्त रहती हूं तो 2028 लॉस एंजिल्स ओलंपिक में हिस्सा लूंगी : पीवी सिंधू

नई दिल्ली।स्टार भारतीय बैडमिंटन पी वी सिंधू ने शुक्रवार को कहा कि उनमें अब भी काफी कुछ हासिल करने की क्षमता है और बीडब्ल्यूएफ सर्किट पर काफी खिताब जीतने की काबिलियत है लेकिन उनकी निगाहे 2028 लॉस एंजिल्स ओलंपिक खेलों पर लगी रहेंगी। अमेरिका में होने वाले ओलंपिक तक वह 33 वर्ष की हो जाएंगी। हालांकि दो बार की ओलंपिक पदक विजेता ने कहा कि अगर वह चोट-मुक्त रही और शारीरिक रूप से फिट रही तो उनका लक्ष्य तीसरा ओलंपिक पदक जीतना होगा। पूर्व विश्व चैंपियन सिंधू ने 2016 रियो ओलंपिक मे रजत और 2020 टोक्यो ओलंपिक में कांस्य पदक जीता था। वह प्रीक्वार्टर फाइनल में हारकर बाहर होने के बाद पेरिस ओलंपिक से खाली हाथ लौटी। हैदराबाद की 29 वर्षीय सिंधू ने पीटीआई से कहा, अगर मै फिट हूं, अगर मै ऐसा करने मे सक्षम रहती हूं, अगर मै चोट मुक्त हूं, तो निश्चित रूप से मै लॉस एंजिल्स ओलंपिक में प्रतिस्पर्धा करूंगी।

पाकिस्तान की ऑस्ट्रेलिया पर बड़ी जीत

एडिलेड। तेज गेंदबाज हारिस रऊफ ने 29 रन देकर पांच विकेट लिए जबकि सलामी बल्लेबाज सईम अयूब ने 82 रन की आकर्षक पारी खेली जिससे पाकिस्तान ने शुक्रवार को यहां दूसरे एक दिवसीय अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट मैच में ऑस्ट्रेलिया को नौ विकेट से हराकर तीन मैच की श्रृंखला बराबर की।रउफ की अच्छी लेंथ और गति से कराई गई गेंदो के सामने ऑस्ट्रेलिया के बल्लेबाज संघर्ष करते हुए नजर आए और उसकी पूरी टीम 35 ओवर मे 163 रन पर आउट हो गई। इसके बाद बाएं हाथ के बल्लेबाज अयूब ने अपना जलवा दिखाया। उन्होंने अपनी पारी मे छह छक्के और पांच चौके लगाए, जिससे पाकिस्तान ने 26.3 ओवर मे एक विकेट पर 169 रन बनाकर आसान जीत दर्ज की।पूर्व कप्तान बाबर आजम (नाबाद 15) ने एडम ज़म्पा की गेंद पर छक्का जड़कर टीम को जीत दिलाई।

इस महीने के अंत में सत्र से इतर ट्रेनिंग के लिए दक्षिण अफ्रीका जाएंगे नीरज चोपड़ा

नई दिल्ली। स्टार भाला फेंक एथलीट नीरज चोपड़ा अगले साल होने वाली प्रतियोगिताओं की शुरुआती तैयारी शुरू करने की मुहिम मे सत्र के इतर ट्रेनिंग के लिए इस महीने के अंत में दक्षिण अफ्रीका के पोटचेफस्ट्रूम जाएंगे।ओलंपिक में दो बार के पदक विजेता 26 वर्षीय नीरज अंतिम बार सितंबर मे डायमंड लीग फाइनल में खेले थे। वह दक्षिण अफ्रीका के इस शहर मे ट्रेनिंग के लिए 31 दिन रहेंगे।चोपड़ा की ट्रेनिंग का खर्चा खेल मंत्रालय उठाएगा। वह अपनी ट्रेनिंग जल्दी शुरू करेंगे और 31 दिन के लिए पोटचेफस्ट्रूम में रहेंगे। इसके अनुसार, नीरज की ट्रेनिंग का खर्च खेल मंत्रालय उठाएगा जिसमे उनके और उनके फिजियोथेरेपिस्ट के दक्षिण अफ्रीका में रहने के दौरान रहने, खाने-पीने और ट्रेनिंग का खर्च शामिल होगा। चोपड़ा ने पहले भी तोक्यो और पेरिस ओलंपिक से पहले कई बार पोटचेफस्ट्रूम में ट्रेनिंग की है।

किरण जॉर्ज कोरिया मास्टर्स के सेमीफाइनल में

इक्सान सिटी (कोरिया)। भारत के किरण जॉर्ज ने अपना शानदार प्रदर्शन जारी रखते हुए शुक्रवार को यहां जापान के पांचवी वरीयता प्राप्त ताकुमा ओबायाशी को सीधे गेम मे हराकर कोरिया मास्टर्स बैडमिंटन टूर्नामेंट के पुरुष एकल सेमीफाइनल मे प्रवेश किया।विश्व रैंकिंग में 41वें स्थान पर काबिज इस 24 वर्षीय भारतीय खिलाड़ी ने दुनिया के 34वें नंबर के खिलाड़ी ओबायाशी को केवल 39 मिनट मे 21-14, 21-16 से हराकर बीडब्ल्यूएफ विश्व टूर सुपर 300 प्रतियोगिता मे एक और उलटफेर भरी जीत दर्ज की। जॉर्ज शनिवार को सेमीफाइनल में थाईलैंड के शीर्ष वरीय और दुनिया के पांचवें नंबर के खिलाड़ी कुनलावुत विटिडसार्न से भिड़ेंगे, जिन्होंने चीन के लियू लियांग के खिलाफ 21-15, 21-11 से जीत दर्ज की।भारतीय खिलाड़ी ने इससे पहले प्री क्वार्टर फाइनल मे तीसरी वरीयता प्राप्त चीनी ताइपे की ची यू जेन को हराया था।टूर्नामेंट में भाग लेने वाले एकमात्र भारतीय शटलर जॉर्ज ने पूरे मैच में अच्छा खेल दिखाया। पहले गेम में उन्होंने शुरू से लेकर आखिर तक बढ़त बनाए रखी।पहले गेम मे जब जॉर्ज ने 15-6 की बढ़त बना ली थी तब ओबायाशी ने वापसी की कोशिश की और स्कोर 12-16 कर दिया लेकिन भारतीय खिलाड़ी ने लगातार चार अंक बनाकर पहला गेम अपने नाम किया।

स्पार्क्स युवाओं को जोड़ेगा

मुंबई। भारतीय युवाओं का सबसे भरोसेमंद ब्राण्ड स्पार्क्स अपनी आटम-विंटर 2024 रेंज में नए 'स्नीकर्स-कलेक्शन' के लॉन्च के साथ फुटवियर फैशन को नया आयाम देने के लिए तैयार है। स्नीकर कलेक्शन को इस सीजन का हीरो कहा जा सकता है, जिसमें पुरूषों एवं महिलाओं के लिए बोल्ड डिजाइन पेश किए गए हैं। हाई एवं मिड एंकल्स से लेकर फ्लैट सोल और लो एंकल्स तक ये आधुनिक स्नीकर हर किसी की वार्डरोब को कम्पलीट करेंगे और निश्चित रूप से फैशन स्टेटमेन्ट बन जाएंगे। स्नीकर्स के अलावा आटम विंटर 24 रेंज में एथलेजर रेंज, जॉगर्स ,कैनवास और केजुअल शूज का नया कलेक्शन भी शामिल है, जो हर उस व्यक्ति के लिए परफेक्ट है जो स्टाइल के साथ-साथ आराम की भी उम्मीद रखता है। एथलजर कलेक्शन में स्लिप-आन्स, आल-डे वियर और वॉकिंग शूज शामिल हैं जो आरामदायक तो हैं हीं, साथ ही आपकी लाईफस्टाइल के लिए परफेक्ट भी हैं।इस लॉन्च पर बात करते हुए गौरव कुमार दुआ, होल टाईम डायरेक्टर, रिलेक्सो फुटवियर्स लिमिटेड ने कहा, "हमारी आटम-विंटर 2024 रेंज में स्पार्क्स का नया स्नीकर कलेक्शन पेश करते हुए हमें बेहद खुशी का अनुभव हो रहा है। यह कलेक्शन आज के युवाओं की महत्वाकांक्षा पर खरा उतरता है, जो फैशनेबल, बोल्ड और हमेशा सक्रिय हैं। हमारे स्नीकर्स आधुनिक डिजाइन एवं आराम के संयोजन के साथ उनके रोजाना के स्टाइल को आकर्षक बनाकर उन्हें सशक्त बनाते हैं।

राहुल का खराब प्रदर्शन जारी

● फिर चरमराया भारत ए का शीर्ष क्रम

भाषा। मेलबर्न

केएल राहुल का खराब प्रदर्शन जारी रहा जबकि शीर्ष क्रम के अन्य बल्लेबाज भी तेज और उछाल लेती पिच पर संघर्ष करते नजर आए, जिससे भारत ए की टीम ऑस्ट्रेलिया ए के खिलाफ चार दिवसीय क्रिकेट मैच के दूसरे दिन शुक्रवार को यहां अपनी दूसरी पारी में पांच विकेट पर 73 रन बनाकर बैकफुट पर चली गई।रोहित शर्मा अगर 22 नवंबर से ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ होने वाली पांच टेस्ट मैच की श्रृंखला के पहले मैच में नहीं खेल पाते हैं तो राहुल सलामी बल्लेबाज के रूप में टीम में शामिल होने के एक दावेदार हैं लेकिन भारत ए की तरफ से वह दोनों पारियों में केवल 14 रन बना पाए। राहुल दूसरी पारी में 10 रन बनाकर आउट हुए।भारतीय टीम में सलामी बल्लेबाज के एक अन्य दावेदार अभिमन्यु ईश्वरन भी मूव करती गेंदों पर संघर्ष करते नजर आए जबकि अन्य बल्लेबाजों का भी यही हाल रहा। भारत ए की आधी टीम पवेलियन लौट चुकी है जबकि उसे केवल 11 रन की बढ़त हासिल है।ऑस्ट्रेलिया ए ने भारतीय टीम को पहली पारी में 161 रन पर आउट करने के बाद अपनी पहली पारी में 223 रन बनाए और इस तरह से उसने 62 रन की बढ़त हासिल की।

खोई प्रतिष्ठा हासिल करने के लिए अपना पुराना जोश और जुनून जगाएं कोहली और रोहित: ग्रेग चैपल

मेलबर्न। भारत के पूर्व मुख्य कोच ग्रेग चैपल ने कहा है कि विराट कोहली और रोहित शर्मा को अगर अपनी खोई प्रतिष्ठा हासिल करनी है तो उन्हें अपने युवा दिनों के जोश और जुनून को फिर से जगाना होगा।भारत को न्यूजीलैंड के खिलाफ करारी हार खेलने के बाद अब ऑस्ट्रेलिया का दौरा करना है जहां पांच मैच की श्रृंखला 22 नवंबर से पर्थ में शुरू होगी। कोहली और रोहित इस महत्वपूर्ण श्रृंखला से पहले रन बनाने के लिए जूझ रहे हैं।चैपल ने सिडनी मार्निंग हेराल्ड में अपने कॉलम में सचिन तेंदुलकर के साथ 2005 में हुई बातचीत का जिक्र करते हुए उम्र बढ़ने के साथ खिलाड़ियों के सामने आने वाली चुनौतियों के बारे में बताया है।तेंदुलकर ने चैपल के विचार जानने के लिए उनसे पूछा, ग्रेग उम्र बढ़ने के साथ बल्लेबाजी करना मुश्किल क्यों हो जाता है जबकि उसे आसान होना चाहिए।चैपल ने लिखा है, मैंने उनसे कहा कि उम्र बढ़ने के साथ पहले की तरह बल्लेबाजी करने के लिए मानसिक ज़रूरतें बढ़ जाती है।

अमर उजाला पर जीत के साथ टाइम्स ऑफइंडिया फाइनल में

इकाना मीडिया टी20 क्रिकेट प्रतियोगिता

लखनऊ। शलभ की हैटट्रिक सहित चार विकेट, के बाद मैन ऑफद मैच राजीव श्रीवास्तव और विवेक चौहान के अर्धशतकों से टाइम्स ऑफइंडिया ने इकाना मीडिया टी20 क्रिकेट प्रतियोगिता के पहले सेमीफाइनल में अमर उजाला को छह विकेट से हराकर के फाइनल में प्रवेश किया। केडी सिंह बाबू स्टेडियम में शुक्रवार को अमर उजाला ने पहले बल्लेबाजी करते हुए नौ विकेट पर 150 रन बनाए। राजीव आनंद ने 57 गेंदों पर 11 चौके से 67 रन की अर्धशतकीय पारी खेली। अनुराग बाजपेई ने 26,अर्जुन साहू ने 13 और शरीफ उजेर ने 11 रन का योगदान दिया। टाइम्स ऑफइण्डिया के गेंदबाज शलभ सक्सेना ने लगातार तीन गेंदों पर तीन विकेट लेकर पहली हैट.ट्रिक जमाई। उन्होंने 25 रन देकर चार विकेट लिए। ऋषि सेंगर को दो व राजीव श्रीवास्तव के एक विकेट मिले। जवाब में टाइम्स ऑफइंडिया ने 18.4 ओवरों में चार विकेट पर ही 153 रन बनाकर मैच जीत लिया। जीत में राजीव श्रीवास्तव ने 46 गेंदों पर पांच चौकों और एक छक्के से 57 रनए विवेक चौहान ने 43 गेंदों पर पांच चौकों से नाबाद 52 रन और ऋषि सिंह सेंगर ने 19 रन का योगदान किया। शनिवार को मान्यता प्राप्त पत्रकार एकादश और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के बीच दूसरा सेमीफाइनल होगा।

विपिन चंद्रा का आलराउंड खेल,अखिल इंफ्रा क्रिकेट क्लब की लगातार दूसरी जीत

लखनऊ। अखिल इंफ्रा क्रिकेट क्लब ने मैन ऑफद मैच विपिन चंद्रा-2 विकेट, नाबाद 37 रन के आलराउंड खेल से 20वीं बाबू बनारसी दास ए डिवीजन क्रिकेट लीग में यार्कर क्रिकेट क्लब को पांच विकेट से हराकर लगातार दूसरी जीत दर्ज की। एलडीए स्टेडियम अलीगंज पर यार्कर क्लब की टीम निर्धारित 40 ओवर के मैच में पहले बल्लेबाजी करते हुए 28.4 ओवर में मात्र 99 रन पर आल आउट हो गयी। सलामी बल्लेबाज सात्विक सिंह ने 23 और अमन सिंह ने 33 रन की पारी खेली। संदीप यादव ने 6.4 ओवर में एक मेडन के साथ 13 रन देकर चार विकेट हासिल किए। जवाब में अखिल इंफ्रा क्रिकेट क्लब ने 29.1 ओवर में पांच विकेट के नुकसान पर 103 रन बनाकर मैच जीत लिया।

गाजीपुर व लखनऊ रेड की टीमें हाकी फाइनल में

लखनऊ। जमनलाल शर्मा हाकी में गाजीपुर व लखनऊ रेड की टीमें के बीच फाइनल खेला जाएगा। पहले सेमीफाइनल में एसएफ करमपुर ब्लू को गाजीपुर रेड ने 2–1 से बाहर का रास्ता दिखाया। दूसरे सेमीफाइनल मुकाबले में लखनऊ रेड ने एसएफ प्रयाग राज को 4–1 से पराजित किया।

स्पोर्ट्स वेलफेयर फाउंडेशन टीम की खिलाड़ी अनुष्का चौहान का भारतीय अंडर-18 टीम में दुबई टूर के लिए चयन

लखनऊ। स्पोर्ट्स वेलफेयर फाउंडेशन उत्तर प्रदेश की बास्केटबॉल टीम की खिलाड़ी अनुष्का चौहान का भारतीय अंडर-18 टीम में दुबई टूर के लिए चयन हुआ है। अनुष्का ने लखनऊ जिले की पहली महिला अंतर्राष्ट्रीय खिलाड़ी है। भारतीय अंडर-18 टीम तक अनुष्का का सफर समर्पण, मेहनत और दृढ़ता से भरा रहा है। उनके पिता अमरेंद्र सिंह चौहान उनके इस अद्वितीय बास्केटबॉल सफर में एक निरंतर प्रेरणा और समर्थन का स्रोत रहे हैं। जैसे ही वह दुबई में भारत का प्रतिनिधित्व करने की तैयारी कर रही हैं, स्पोर्ट्स वेलफेयर फाउंडेशन को पूरा विश्वास है कि अनुष्का वैश्विक मंच पर उत्कृष्ट प्रदर्शन करेंगी और फाउंडेशन के साथ.साथ देश का भी नाम रोशन करेंगी।संस्थापक आलोक कुमार शुक्ला,अध्यक्ष प्रशांत सिंह मानद सचिव महर्षि दुबे, कोषाध्यक्ष प्रकाश चौबे साथ ही संदीप पाल और हृतुराज सुंदरवंशी उन्हें उनकी भविष्य की बास्केटबॉल यात्रा के लिए हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं देते हैं।

पंकज आईबीएसएफ विश्व बिलियर्ड्स चैंपियनशिप के फाइनल में

नई दिल्ली। पंकज आडवाणी अपने 28वें विश्व खिताब के करीब पहुंच गए जब उन्होंने शुक्रवार को दोहा में हमवतन सौरव कोठारी को 4-2 से हराकर आईबीएसएफ विश्व बिलियर्ड्स चैंपियनशिप (150 अप प्रारूप) के फाइनल में जगह बनाई। दोनों भारतीय खिलाड़ियों ने उच्च गुणवत्ता वाले बिलियर्ड्स का प्रदर्शन किया। 27 बार के विश्व चैंपियन आडवाणी ने सेमीफाइनल में पहला फ्रेम जीतकर मजबूत शुरुआत की। कोठारी ने जवाब में दूसरा फ्रेम जीतकर स्कोर बराबर कर दिया। हालांकि आडवाणी ने शानदार खेल दिखाया और अगले दो फ्रेम जीतकर 3-1 की बढ़त बना ली।

बोपन्ना-इबडन एटीपी फाइनल्स में छठी वरीयता मिली

तूरिन (इटली)। भारत के रोहन बोपन्ना और उनके ऑस्ट्रेलियाई जोड़ीदार मैथ्यू इबडन को साल के अंत में होने वाले एटीपी फाइनल्स में छठी वरीयता दी गई है जिसमे यह जोड़ी अपना अभियान सोमवार को इटली के सिमोन बोलेली और एंड्रिया वावासोर की चौथी वरीय जोड़ी के खिलाफ मुकाबले से शुरू करेगी। शीर्ष आठ एकल खिलाड़ी और शीर्ष आठ युगल जोड़ियां साल के अंत मे होने वाले फाइनल्स मे हिस्सा लेंगी जिससे सत्र का समापन होगा। टूर्नामेंट 11 से 17 नवंबर तक खेला जाएगा। बोपन्ना-इबडन की जोड़ी को बॉब ब्रायन ग्रुप मे रखा गया है जिसमे अन्य दो जोड़ियां जर्मनी के केविन क्राविट्ज और टिम पुएट्ज तथा क्रोएशिया के मार्सेलो अरेवालो और एल साल्वाडोर के माटे पाविच की है।

सीएमवाईके प्रिंटेक लिमिटेड के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक शोबोरी गाँगुली द्वारा 100के, मिलाप भवन, 8/ए, बहादुर शाह ज़फ़र मार्ग, नई दिल्ली-110002, दूरभाष: 011-40110455 से प्रकाशित तथा जागरण प्रकाशन लिमिटेड, डी-210, 211 सेक्टर 63 नोएडा फोन नंबर 01204615800 एक्सटेंशन 142, से मुद्रित। प्रधान संपादक : शोबोरी गाँगुली। पाठकों को सुझाव दिया जाता है कि इस अखबार के किसी भी विज्ञापन पर प्रतिक्रिया करने से पहले पूरी तरह उसके बारे में दिए गए दावों, शर्तों और तथ्यों की जांच कर लें। पायनियर ग्रुप के मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक या उसका कोई भी कर्मचारी विज्ञापनदाता द्वारा उनके किसी उत्पाद तथा सेवा हेतु किए गए किसी दावे की सच्चाई का आश्वासन या उत्तरदायित्व नहीं लेता है। ऐसे विज्ञापनों के बाद किसी आर्थिक क्षति के लिए वे जिम्मेदार भी नहीं हैं। मुख्य व्यवसायिक कार्यालय- 201-205 द्वितीय मंज़िल, प्रताप भवन, 5 बहादुर शाह ज़फ़र मार्ग, नई दिल्ली-110002, दूरभाष:011-693425001